मेघराग नं. १८६२

F-6128
435
Incomplete

गौं॰ म॰

अथगौंडमल्हाररागआरंभः। संगीतरत्नाकरकेम
तानुसार येहराग मेघरागकापुत्रहै अरइसका
वर्षाऋतुहै अर इसका समय मध्याह्नहै अरसंपू
र्णकहीहै अरइसका अंश मध्यमहै औरइसका
विस्वदेवताहै अर विस्वहीऋषिभीहै अर ब्रहती
छंदहै अर गौंबीजहै अर इसकावीररसहै और।
स्वकीयानायिकाहै अर दक्षनायकहै अथगौंडम
ल्हारप्रकीर्ण। सौराष्ट्रामेघमल्हारौरामिश्रितोयदि

गौंन मी ३

गायकैः गौंडमल्हारविख्यातो वर्षायांगामिष्यते म
ध्यमोंशग्रहन्यासोमध्याह्नेगानमिष्यते ॥ अथगौंड
मल्हाररागसाधनम् । ॐअस्यश्रीगौंडमल्हार रा
गस्य विलक्षऋषिः बृहतीछंदः विलक्षदेवता गौंबी
जे मनोकामनासिद्धये गौंडमल्हाररागे विनियोगः
अथअंगन्यासः ॐगौंअंगुष्ठाभ्यांनमः एवंहृदयादि
न्यासंसर्वंकुर्यात् । अथगौंडमल्हाररागध्यानम्
घणामः श्रीवजमालिकांकितनतुः पृष्ठः प्रियामेघ

गौ॰
म॰

नो रंभापत्रनिवद्धनीलवसनो विंध्याचलेसंस्थितः पा
शाद्यैः शिखिनो निहंति विपिने कोदंडवाणान्वितः ।
शस्त्रैर्गौडमल्हारकः फणिभुजा पत्रैः प्रियैरावृतः ।
इति ध्यानम् । अथ गौडमल्हारपूजनम् आवाहने
आसने पाद्ये अर्घ्ये आचमनीये मधुस्नाने पुनराच
मनीये अनुलेपने वस्त्रे यज्ञोपवीते गंधे अक्षते ।
पुष्पे धूपे दीपे नैवेद्ये दक्षिणां वलिंदद्यात् प्रद
क्षिणां सर्वपूजने कुर्यात् षोडशोपचारैः कुर्यात् ॥

अथगौंडमल्हाररागमंत्र: ॐगौंगौंडमल्हारायनमः

अथदेवतामंत्र: ॐबिंबिलवेनमः। अथजपसंख्या

द्वादशलक्ष समदशसहस्रंच विधाने कुर्यात ॥

अथगौंडमल्हाररसावीर रस लक्षणम्। दोहा। हो

यबीरउत्साहरसमैगौरवबरण्उतिअंग। अतिउदार

गंभीरकहिकेशवरायप्रसंग ॥ श्रीलालजूकोबी

ररस कवित्त। अथजोउदारिहो किबकज्यों विदा

हों ज्यबकसा स्वर स्वर मारिकैं सो केसीज्यों पछारि

गौ॰
म॰

हैं। हरिहै कि प्रान नाथ पूतके प्रान नि ज्यौं वन नैकी
वनमाली काली ज्यों निकारिहैं। कै रिहै विमदद्यन
वाहन ज्यौं घनश्याम काहूसों नहारे हरियानी सों।
कैधौं हारिहै वेही काम काम वली ब्रजकी कुमारि
कनिमारत है नंदके कुमार कबिमारिहै। इति
वीररसलक्षणम॥ अथ स्वकीयानायिकालक्षणं
दोहा। संपति विपति जु मरनहू सदा एक अनुहा
रि। ताहि स्वकीया जानिये जु मन क्रम वचन विचा

ति॥ अथ दलनायकलछननाम। दोहा। पहिलोसो
ही अहेत उर सहज बडाई कानि। तिनचलेहूंना
चलै दतिन लछन जानि। यथा कवित्त। हरिसे
हितूसों भ्रमभूलिहूंनकीजे मनहो तोकरिहीये
हूतेंहोतनहित हानीए। लोकमे अलोकआनि।
नीकेंहूंको लागतहै सीताजीको हूतगीतकेंसे
उरआनिये। औषिन जो देषियत सोई सांचीके
ओदास काननकी सुनी सांची कबहूंनमानिए॰

गौं·
रा·

गोकुलकी कुलटाय यौंही उलगावति है आजलोनो
वैसेई है कालिकीन जानिए। इति दत्तनायकलक्ष
णम्॥ अथ गौंडमल्हार राग टाटक्रमः। खडुज मे
रहताहै रेषभ चडा अर गंधारभी चडा और मध्यम
इसमें उतरा लगताहै अर पंचम सेरहताहै अरु
धैवत चडा और निषादभी चडा लगताहै। इति
टाटक्रमः॥ अथ गौंडमल्हार सरगमः। ममे गाग
मेगा मगारे मगारे मम २ पप पमा पप मप मगारे

मगारे सासा। इतिअस्थाई। पप धध निनिस निनिस
रेरेरेस धध पप धस धप मगारे मगारे सासा। इति
अंतरा॥ राग गौंडमल्हार गत फिरोजखानी ता
लधीमात्रिताला उठेगी पैहली अर हमरी केबी।
तसें। अबुदे। डिड डिड डिड डाड डाड डा। डाडा
डा डा डिड डिड डिड डाड डाड डा। डा डा डा डा
डा डाड डा। डा डिड डिड डिड डाड डाड डाडाडा।
डाडा डा डाडा डा। डाडडा डाडाडा डा डिड डिड

गौं॰
रा॰

डिड डाड डाड डा। डा डा डा डा डा डा डा डाड डाड
डा डा। इति स्थाई। अथ अंतरा स्थाई बजाक चलाता
लकी पहली अव दूसरी के बीच में अबर्द। डा ड डा
डा डा डा डा डा डा डिड डिड डिड डाड डाड डा। डा
डा डा डा डा डिड डिड डिड डाड डाड डा। डा डा डाड
डा डाड डा डाडडाड डा डा॥ फिर स्थाई में जा मिला
इति अंतरा॥ अथ गौंड मल्हार राग अलापः। नेन
री इना आनन न उआननन अदननेरी नेनु ननाउ
उनन

ननना आनंन रतुम् नातुम। इति स्थाई अथ अंतरा।
तनन अदनते आनन तुम् नातुनै तना तन नरी
नेना आन नान तनम् नतु तरीन नानरी रेना नेना
आन नान आन नान रान तनम॥ ❖ ॥ ❖ ॥

गौ·म·
रा·

अथ गौंड मल्हार रागस्य ख्याल परिछेद मांह

१नि २सं २रे २ग २म प २म

ध्रुवपद ताल चार ।। ते तो आपनि बीण कि

२ग २रे २प प २प २म २ग २रे २सं १नि १प

या तैंने सभ नहोन जिथर देखौं करके ध्यान

१नि २सं २रे २ग २म २प २प २प २म २ग २रे

तेहीं ते विराज मान दीसत जोत तेरी रहित

२ग २रे २सं २म २प २प २नि

जो निराला ।। इति अस्थाई ।। रूप रंग रावभेष

२सं २रे २ग २रे २सं २नि २प २प २म २ग २रे

तामेंते विशेष नाहि गावैं सर्व तेरे नाहिं गुण

२सा १नि १ध १नि २सा २रे २ग २म २ग २रे २सा

रा. नियान निर्गुण ब्रह्म मूरत करत प्रनपाला

१नि २सा २रे २ग १म २प २म २ग २रे २प २ध

गौ.म. बेद और पुरान तोहे नेत नेत कर बाखान पा

२प २म २ग २रे २सा १नि १ध १नि

न जोन अंत कछु कीजै कौन प्रनमान बाहि

२सा २रे २ग २म २प २ध २प २म २ग २रे

र बियान जान ऐसो ब्रह्म भगवान करत नि

२सा

हाला ॥ इति आभोगः ॥ राग गौंड मल्हार धु

२म २प २ध २नि २सां

पद ब्रह्म ताल चार ॥ श्याम घेरा कर ग्रंदेषा.

जपत रहित तोये हमेशा योगी गाव तान ह

दय पायोना निशान कछु देमे जो पुरान ग्रा

न हैके आधीन करहत यन दीन दियाला ॥२॥

इत्याभोगः ॥ ❖ ॥ मुनि देव थकित भये ज

प जप तोहे नाथ देषी है न भवत कछु कहे ।

जो विधान न ॥ इति प्रस्थाई ॥ सहस्त्र फण

गा. गौ. म.

गावे शेष सेवत हमेश जौन पावे है न अंत
करु तेरो निरवान जू।। इतिअंतरा।। सती म
हित फिर महेश हिये गावे तेरो आदेश जो ग
हु मे मगण बैठक रहे तेरो ध्यान जू।। अष्ट
याम करत सेव मिल्यो नाहि भेव कही बला
आदमये आधीन करके बहुत ज्ञान जू।। ❖।।

इतिब्रह्मपरिछेदः।।

अथ गौंड मल्हार रागस्य शक्तिपरिच्छेदमाह

ध्रुवपद ताल चार ॥ नगरकोट रानी भक्त

न मन मानी पूजित तोहे प्रेम सहित नरनारी

जगतके ॥ इतिअस्थाई ॥ ज्ञानी गुनी मानी ।

ध्यानी यक्ष किंनर गंधर्व सिद्ध साधु जोगम-

करत यतन दिन रैन तेरी सब भक्तके ॥ २

रा·

गौं·म·

तिश्रेतता ।। नैगन पैरी श्रामन सेंत पावन नाते
रौ श्रेंत गावन जै शब्द सभी सेवक जो शाककें
लैके भेट श्राये श्राधीन प्रमन मे हो प्रबीन द
शें हेत रहित हीन रूप व्यका व्यकके ।। ३

तिश्राभोगः ।। ः ।। राग गौंड मल्हार ध्रुवपद
ताल शाकिवार ।। दया रूप सावँरूप प्रभव।

शा·

२रे २सा १नि २सा २रे २ग २रे २सा
दीनें ग्रंथ रूप मारके भवानीतें ॥ इतिअस्थाई

२म २प २नि २सा २रे २सा २नि २प २ध २म २ग २रे
ईंद आदि आवें देव कौंन सब सेव धारी दीयो है

२सा १नि २सा २रे २ग २रे २सा २ग २म २ध
अचिंत दान ग्रेंबे म्हाल दानीतें ॥ ग्रंथ हू को दी

२प २ध २म २ग २रे २सा १नि २सा २रे २ग
ये नैन मूक में जो बैन तेने पिंगदीने हाथ।

२म २ध २प २ध २म २ग २रे २सा
पाय करके सहाये वाक वानीतें ॥ इति संचारी

२म २ध २प २नि २सा २रे २सा २नि २प २ध
रंग हू को दीयो राज औ सवारे बहुत काज।

रा· ज्ञानके दियाल तोहे आयोहै आधीन द्वारवा

गौ·म· रवार नमस्कार दयाकर दयानीतैं ॥ ❖ ॥

इति आभोगः ॥ ❖ ॥ इति गौड मल्हार राग

स्य शाखि परिच्छेदः समाप्तः ॥ ❖ ॥ ❖

अथ गौंड मल्हार रागस्य गणेश परिछेदमाह

ध्रुवपद ताल चार ॥ आवत गणपत गणरा

ज बदन मोरे ग्रह विघ्न और दारिद सब हरक

रण को ॥ इति अस्थाई ॥ मुकुट सीस कंठ मा

ल देखत हौं भई निहाल एक दंत रूढि केत

अंकुश कर शोभेत दीनबंधु दीनदियाल को

२म २ग २रे २सं
ग॰ थाके भवनकौं ॥ इति अंतरा ॥ तन सिंधुर भव ए

२सं २रे २ग २म २पं
गौं॰ म॰ र शत्रु को हरकरैं परशु हाथ अत सजात से

२प २पं २म २ग २रे २सं १नि २सं २रे २ग २म
कट सब हरनकौं ॥ पद्म लियें एक कर हुजे

२पं २ग २रे २सं २म २पं २प २नि २सं २रे
हाथ देत वर भीर पीर हेलौ नवत जौनस मे

२सं २नि २प २पं २म २ग २रे २सं १नि २सं २रे २ग
हीये फुरत आधीन के अंग दियाल थीवज यर

२म २पं २प २पं २म २ग २रे २म २ग २रे
नकौ ॥ इति आभोगः ॥ राग गौंडमल्हार धु

बसंत गणेश ताल चार ॥ मेरे गणपत गणेश

काटन हैं सब कलेश शेष और उमेश ध्यावै पैदा

डे न्त्र ॥ इति अस्थाई ॥ सनेश सुरेश और दिनेश

तेती कोटी देवसहित सिद्धेश हूं को देन वर

नेन अधिक बाडे न्त्र ॥ इति अंतरा ॥ जगत में

जो करैं काज पूजें तोहे गणराज देवन सिरता

२रे २ग २म २धु २प २धु २म २ग २रे २सं २नि २सं

ग· जतेतो माने सब घर घर नगर डगर बगर माही

२रे २ग २म २धु २म २ग २रे २सं २म २प २प २नि

गौं· म· नर नार बाल वृद्ध ठौर ठाडे व्है ॥ पूरन करत का

२सं २रे २सं २नि २प २धु २म २ग २रे सं २नि

म सब लेत तेरो नाम जब ऊः खदारिद्र विघ्न त

२सं २रे २ग २म २ग २रे २सं

व साधीन के गृहकौ काडे व्है ॥ इति आभोगः ॥

इति गौडमल्हाररागस्य गणेश परिच्छेदः समा

प्तः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ गौंडमल्हार रागस्य विस्नु परिछेद माह।

ध्रुवपद ताल चार ॥ सिमरो मन बारवार ना

रायण नरसिंह नरोतम गोबिंद गोपाल बेसी

धर ॥ इति अस्थाई ॥ जोके सिर मोरमुकुट म

कराकृत कुंडलकेसर तिलक भाल मालगरे

कट पीतां बर ॥ इति अंतरा ॥ गरुड वाहन म

२प २नि २प २ध २म २ग २रे २सं १नि २सं २म २ग २रे

ग· नभावन त्रिहि उपावन जगत उधार पातक ह

२सं २म २प २नि २सं २रे २सं २नि २प २ध २म २ग २रे

गौं· म· र ॥ सुर नर मुनी जन ध्यावत गावत पावत फ

२प २ध २म २ग २रे २म २ग २रे २सं

ल जप कर प्राणीन के प्रभु चक्रधर ॥ इत्याभोगः

राग गौडमल्हार ध्रुवपद विस्नु ताल चार ५।

२सं २रे २ग २म २ध २प २ध २म २ग २रे

दीनाबंधु दीनानाथ दीनदयाल जगजीवन

२प २ध २म २ग २रे २सं १नि २सं २रे २म २ग २रे

जगन्नाथ जगदीश्वर परमनाम परमेश्वर नारा

वि·
१

रण ॥ इति अस्थाई ॥ विस्वनाथ विस्वभरण दुः

ख दारिद्र हरकरण चक्रधारी गरुडवाहन।

रमाकेत अनंत ऋषी मुनी करत रहित पार।

यण ॥ इति अंतरा ॥ मोर मुकुट कट पीतांब

र वन माल अति विशाल गल भृगुपद उर जो

के पद्म गदा शोभ सोहित स्यामिरत रवि शा।

रा॰
गौं॰ म॰

२ग २रे २सां २म २पं २प २नि ३सां ३रे ३सां २नि २प २पं

श्री नारायण ॥ गज हेको ग्रसी ग्राहे पौढ़वे त

२म २ग २रे २प २पं २म २ग २रे २सां १नि

हो वेग धाये अपने जनको लियें छुडाये चक्र

२सां २रे २ग २म २पं २प २पं २म २ग २रे २प २पं २म २ग

जो चलाये प्रभु करैगे सहाये आधीन पैं धरनी ध

२रे २सां

र श्रीनारायण ॥ इति आभोगः ॥ इति गौंडमल्हा

र रागस्य विलम्ब परिच्छेदः समाप्तः ॥ ❖ ॥

अथ गौंड मल्हार रागस्य शिव परिच्छेदमाह

|२सां २रे २ग २म २पं
ध्रुवपद ताल चार ॥ शंभू शिव शंकर महा

२प |२पं २म २ग २रे २सां १नि |२सां २रे २म २ग
देव देवन पति उमाकंत गिरी रमन भोलेश्व

२ग २सां २म २पं २प २नि २सां
विनाशी ॥ इति अस्थाई ॥ भस्म अंग रुंडमाल

२रे २ग २रे २सां |२नि २प २पं २म २ग २रे
ब्यालो पवीत परम प्रीत ओढे मृगछाल ऊ

|२सां १नि २सां २ग २रे २सां |२सां २रे २ग
पर घर हर निवासी ॥ इति अंतरा ॥ डमरु त्रि

रा· शूल साध्य गणे सहित गिरिजा साथ जगत भ

गौ·म· क हेत हर बसत आन काशी ।। भक्ति मुक्ति ।

दान देत आधीन हूँकी सुद्ध लेन पुन्य करत

उदय प्रभु पापदीने पाशी ।। इति आभोगः ।।

राग गौडमल्हार ध्रुवपद शिव ताल चार ।।

देव देव महादेव सब नर कौरैं ध्यारि सेव पा

बत नातेते भेव शंकर अविनाशी ।। इतिस्थाई ।

भंग धतूरा करके पान देत हो अभय दान जो

को गावै वेद पुराण द्वार वोके कल्याण ठाडी ।

बन दाशी ।। गंगसीस श्रीगिरीश शोभित सब

अंग फनीस दीनको असीस देत नट रट बाशी

दुःख दारिद्र वेग हर देतहै आनंद वर भक्ति मुक्ति

२सं १नि २सं २२ २म २ग २२ २सं

गा॰ हूंको चर आधीन जान श्रीकाशी ॥ इतिआभो

गौं॰म॰ गः ॥ ❖ ॥ इति गौंडमल्हार रागस्य शिवप

रिच्छेदः समाप्तः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ गौडमल्हाररागस्य स्वर्यो परिछेद माह।

ध्रुवपद ताल चार ॥ पूजत सब संसार जीव

जैनको आधार हरकरत अंधकार तेजकों प्र

काशन्ह ॥ इतिथेतरा ॥ योगी सिद्ध धरत ध्या

न सीस हूं मैं राखि प्राण हृदय उपजे ज्ञानवो

कै प्रकास कीये नामसन्ह ॥ इतिथेतरा ॥ कर

रा॰ गौं॰ म॰

म हूं को निगबान परम मै प्रधान जान मानलो

क प्रकटे ग्यान ध्यान तो बिलासजू ॥ दमो दि

ग के ग्राम धाम तेरोही निवास रवि दीन को

दरिद्र हरके हे दीन आधीन दासजू ॥ इतिश्री

मोगः ॥ राग गौंडमल्हार ध्रुवपद सूर्य्य ताल

बार ॥ उदेय होत प्राण नाथ बाल बिहलैके

साथ तेज फैल रहो तोको सगरे संसारजू ॥ इ
ति श्रस्थाई ॥ विष्णुहूंके नार नर स्नान ध्यान ।
दान करैं अंजली को हाथ लेत करत नमस्का
रजू ॥ इति श्रीअंतरा ॥ सेत साथ करैं ममाथ हिं
हिमें अपराध हरी गावैं मानी लगमें हे कश्यप
दुलारजू ॥ होयेकें दियाल नब कोरै है निहा।

२पं २म २ग २रे २सं १नि १ध १नि २सं २रे २ग २म

गा॰ ल सब आयो है आधीन शरन होनो प्रभु दिन॰

२सं २प २पं २म २ग २रे २ग २रे २सं

गौं॰ म॰ करण काटो दुःख दीन हूं के विने बारबार ज्नु

इति आभोगः ॥ ❖ ॥ इति गौंड मल्हार रा

गस्य सूर्य परिच्छेदः समाप्तः ॥ ❖ ॥

अथ गौडमल्हार रागस्य दशावतार परिछे

२सं २रे २ग २म २पं

दमाह ध्रुवपद ताल चार ॥ सिमर सिमर सि

२प २नि २प २पं २म २ग २रे २सं १नि २सं २रे २ग

मर मन मौन कर्म वाचाहे होवैं जो सहाये तो

२म २पं २म २ग २रे २सं २म २पं

पै लगत प्रभु ध्यानके ॥ इति स्थाई ॥ नरहरि

२प २नि ३सं ३रे ३सं २नि २प २पं २म २ग २रे २सं १नि

विश्वरूप नाम धरी सबके भूप प्रसर कौंगवा

२सं २रे २ग २म २ग २रे २सं २सं

ये भक्त लेकहूं पै ध्यानके ॥ इति अंतरा ॥ गोपी

ग॰ गोपन्हके प्यारे केसकुंद पल में मारे बोड विद

गौ॰ म॰ न जगत मारे बली मेंकर किंकर बल पिछारे।

ध्यान ध्यानके ॥ व्यास कपिल वामदेव कवत

शुकन बोकी सेव नारद हाथले बीन गान में

प्रवीन हो प्रवीन दीन सावसो विचर चतुर्भु

ज पद्मानके ॥ इति आभोगः ॥ इति दशावतारः



टे. रा.
१

ॐ अथ टेक मल्हारी रागिनी प्रारंभः ॥ येह मेघराग
की स्त्री है। और संपूर्ण है समय इसका आधीरात्री
है। षड्जांशा ग्रह न्यासा पूर्ण मल्हारिका मता
धैवतांशा क्वचि त्प्रोक्ता प्राविड्रागो प्रगीयते ॥
सचडै कानडा युक्ता क्वचिदौडव कीर्तिता रिपहीना
त्र सा प्रोक्ता प्रातःकाले प्रगीयते ॥ अथास्थाः

१

प्रकीर्णविधिः। सोरठ बिलावलौ यत्र मेघरागः
प्रमिश्रितः मल्हारी जायते तत्र वर्षा यो गान
मिष्यते॥ इसकी वर्षा ऋतुः है देवता ब्रह्मा है ति
सका मंत्र येह है। ॐब्रह्मणेनमःॐ। और त्रेम
तू ऋषि है अनुष्टुप् छंद है मं बीज है ग्रह इसकी
वियोगिनी नायिका है और करुणा रस है इसका

दलनायिक है। भरत मतेन। गौड मेघ स्वरै युक्ता।
लेकुदाहन मिश्रिता मल्हारी त्वति कथिता वर्षा।
काले च गीयते॥ गंधारोंश ग्रह न्यासा मेघराग च
मलारिका गमपाधानिसारेसा रसे वीरे प्रयुज्यते
ऊौर मल्हार का मध्यम स्वर गुणी लोक मानते
हैं इनका वरनना येही है। भरत मत के अनुसा

र इसका सुरभी देवता है अरु सोम ऋषि है त्रिष्टु
प् छंद है वीर रस है अब इसका साथन कहिते है
अथ टेकमल्हारी विनियोगः। ॐ अस्य श्री टेक-
मल्हारी रागिनी मंत्रस्य सोम ऋषिः सुरभिर्देव
ता त्रिष्टुप् छंदः श्री मल्हारी रागिनी प्रीत्यर्थे ऽ
भीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। अथ न्यासः। ॐ

टे.रा.
३

मेघगुह्याभ्योनमः॥ पूर्वोक्तहृदयादिन्यासे सर्वं कुर्या
त्॥ अथ पूजां विधाय॥ आसनं। पाद्यं। अर्घ्यं।
आचमनीयं। वस्त्रं। यज्ञोपवीतम्। गंधं। अक्षतं
पुष्पं। धूपं। दीपं। नैवेद्यं। दक्षिणा। पुनराचमनी
यम्॥ इति टेक मल्हारी रागिनी सर्वं पूजनं।
कुर्यात्॥ अथ रागिनी मंत्रः॥ ॐ मे मल्हार्यै नमः

इति मेघः ॥ अथ टंकमल्हारी रागिनी ध्यानम्
॥ ऊहरी कान्तां को किल कंठ नादे । गीतच्छले
नात्म पतिं स्मरंती । आदाय बीणा रणयन्न रुद
न्ती । मल्हारिका यौवन दून चिंता ॥ अथ भा
षा ध्यानम् ॥ तन की दुति कुंदन सें झलके ।
बर जोबन अंग अनंग दही । मुख दीन मली

टे॰रा॰
५

न धरैं पट कौं। कर बीण लिये मुरझाय रही।
मन भावन की सुध होति जबै। उमगै नैंनन तैं ज
ल धार बही। अकुलावत बाल वियोग भरी। यह
विध राग मल्हार कही॥ अथ विरहनी नायका
लछण। मेरो तो विदेश कहे देश में विराज
र हो। वर्षा रुत आई कामदेव की दुहाई

सो२

५

है। दादर मयूर पापी नित उठ करैं शोर कोकि
ला की कूक मन छाती भरआई है। बादर गरज
घोष चमक चपला अति पवन चलत मानो मार
ने को थाई है। अवध घटत जात जोबन बिजो
ग छीक बिन पिया प्राण जात ऐसी दुष दाई
है॥ अथ दत्त नायिक लक्षणम। सवैया। बहि

अंतर गूढन गूढ निरंतर काम कला कुल कौन
गिनै। कहि केशव हास विलास सबै प्रति घो
स बढै रस रीति सनै। जिन को जीउ मेरे हिं जी
यै सखीं काय मनो बच प्रेम पचैनै। तिन तें करै
आन बधू के अधीन है सा परतीकैं किधौं सुप
नै॥ अथ करुणा रस लक्षणम॥ सवैया॥ हूर

नैं डेडमि दीह खनि न गुणी जन पुंजकी गेजन
गाढी तोरण तोरण त्रूरब जेवर मावत भाट।
न गावत ढाडी। विप्रन मंगल मंत्र पढे देषें न अव
वार वधू छिग ठाडी। केशव नात के गात उना
रत आरति आरति मात ही वाढी॥ अथ टेक म
२ २ २ २ २ २ २ २ २ २
ल्हारी रागिनी मरगाम:॥ गंपपंपगारें मारें मागम

टे॰ गा॰ ६

पप गाम निधमगासा॥ इति सरगामः॥ अब इसकी
ठाठ येह है॥ षड्ज सम रहता है। रेषभ उतरा।
गंधार चडा मध्यम उतरा। पंचम सम रहता है।
धैवत चडा। निषाद चडा॥ अब इसकी गत ये
ह है॥ डिढ डा डिढडा ढा डाडाढा। डिढ डाडिढ
डाढा डा॥ इतिअस्थायी॥ डाडिढ डाढा डाडिढ। ६

डाढा डाडिढ डा ढा डा डाढा ॥ अंतरा ॥ अस्थाअला

पः ॥ ननरी इना आनन उनन उआनन अदतनरी

तुने नना उननना आनरा ननन रतु नानोम ॥ इति

स्थायी ॥ ननन अदनवे आनन तुम नानुनै नना।

नन नरी नना आन नान ननुम नन नरीन नानुरी

रना नना आन नान आन नान रान ननुम इत्यंतरा

ཏེ་ཀ་
༡

7

༡

अथ भूपाली रागिनी दशावतार परिछे

२ग २प

दमाह्यु ध्रुवपद ताल चार ॥ हेमरूपि प

२ग २रे २ग २प २ध २नि २ध २प २ग

रम हेम सेवित चरणारबिंद मकरंद।

२रे २स २स २ध २स २रे २ग २रे २स २रे

नंद कंद परेब्रह्म ध्यावो ॥ इति स्थाई ॥

२प २ध २स २रे २स २स २ध २स २रे २ग २रे

भक्तन को रछपाल ब्याल निलय मत्स्य

२स २ध २प २ध २नि २प २ग २रे २स २ध २स

भयो कमठ क्रोड न्रहरि वटुक पाद मा।

भू॰रा॰ रित ह्लावो ॥ इति श्वेतरा ॥ परशु धरन कर

ण मेत्त पाद धूलि गोपियरो नीलांबर।

शेष कला योगि उरममावो ॥ श्रमरनः

की बुद्धि हरण बुद्ध रूप पर अनूप क

ल्कि यवन घातक यश प्रीति एवं गावो

इति भूपाली रागिनी दशावतार परिच्छेदः ॥

द स्वर्ग ताल चार ॥ परमधाम ब्रह्मण व

र्ता मे॥ प्रथम जगत जनन यमन कर।

न हरत प्राण काल रूप धारी ॥ इतिस्था

ई ॥ नाम पुरी वास जबी कर्म देड देत

फक नरक अपर स्वर्ग विविध भाव वि

हारी ॥ इतिप्रेतरा ॥ सर्व कर्म साक्षी ज

२प २ध २स २रे २स २ध २प २ध २प

मू॰रा॰ गाहृष्य देव कर्म सकल देखि देखि सार

२ग २रे २स २ध २स २रे २ग २प २ध

लेत श्रुटत नित उदारी ॥ परम कला ।

२स २रे २स २स २ध २स २रे २ग २रे २स

यारि वियति चलत लोक घोत युक्त ।

२प २ध २नि २ध २प २ग २स २रे २स २रे

पाप मुक्त कैरे बाल भक्त पाद चारी ॥॥

इति आभोगः ॥॥ ❖ ॥॥ इति भूपाली ।

रागिनी सूर्य परि छेदः ॥ ❖ ॥:

अथ भूपाली रागिनी सूर्य परिछेदमाह

२ग २ध २ग

ध्रुवपद सूर्य ताल चार ॥ रक्तवर्ण स्वर्ण

२रे २ग २ध २प २नि २प २ध २ग २रे

भरण धारि रवि उजागर जग भक्तमान

२सा २रे २सा २सा २प २सा २रे २ग २रे २सा २रे

परम धरण हरण पाप सगरे ॥ इति स्था

२ध २प ३सा ३रे ३सा ३सा २प ३सा ३रे ३ग

ई ॥ जास बदन मंद हसन दाडिम सो दा

३रे ३सा २प २ध २प २नि २प २ध २ग २ध २ग

त पोति मदन मान सकल हेरे सहित

भृ·रा· कैरे जगरे ॥ इति श्रेतरा ॥ पीत पीत श्रेष्ठ

क कर कमर कस्रो उद्यत नित जगत।

जाड्य दूर करण तिमर पुंज मचरे ॥ जा

नो जन परम भाग्य उदय होत दर्श हि

त बाल निधी हृष्टि चारि बल रूप भगरे·

इन्द्रा भोगः ॥ ॥ भूपाली रागिनी धुवप

२ शिवजी ताल चार ॥ भुवन सकल रक्ष

पाल हालाहल भक्ष करण धरण धीर

देव देव नीलकंठ धारी ॥ इति स्थाई ॥

सदा मस्त मातलानि पान ध्यान सक्त

सदा आत्मचारि पाप हारि वृषभ नाम॰

भारी ॥ इति अंतरा ॥ बैठे जब सवारी ॥

भू·रा· मेघ घमण्ड मैघा भारी बर नेदि भूमि वी

रमद कीर्त्ति मान उजारी ॥ बाजतो ज

भूग केव डंडभि की धूम धाम भूल

नो निशान मान्ने इंद्र गर्ज्जे धारी ॥ ❖

इति आभोग: ॥ ❖ ॥ इति भूपाली रा

गिनी शिव परि छेद: ॥ ❖ ॥

अथ भूपाली रागिनी शिवपरिछेदमाह

ध्रुवपद शिवजी ताल यक्का ॥ उमापतिः

प्रमोद धारिकारि तांडव क्रिया प्रचारि

पद न्टत्य सार बोल ताल संयुते ॥ इति

स्थाई ॥ तथै तथै तथै तता म्टदंग संग

आहितो क्रिता कितान ढुंड नटत तक

२सं २रे २ग २रे २सं २रे २सं

मू॰ग॰ टयिटत मेयिते ॥ इति श्वेतग ॥ स्वहावा

२प २नि २प २पं २पं २प २सं २रे २सं २प

भाव विविय भात उरममात हाय मो दि

२प २पं २ग २रे २सं २सं २प गग २ग २पं

स्वात नूतन क्रिया सगाड़ मेडिते ॥ स

२पं २प २सं २रे २सं २सं २प २सं २रे २ग २रे २सं

देव सदेव किन्नरादि वीति थास मेविते

२प २पं २प २नि २प २पं २ग २सं २रे २ग

प्रमोद दायि बालविप्र जगत रेग रेजि

ते ॥ इत्याभोगः ॥ भूपाली रागिनी ध्रुवप

कि

२ग

ध्रुवपद गणेश ताल चार ॥ गणनायक-

२ध २ग २रे २ग २प २प २प २ग २रे २म

पाद पद्म पूजै नित प्रथम इष्ट देव पुनः

२म २रे २म २म २प २म २रे २ग २रे २म २रे

पूजन ते सिद्धि परम पावै ॥ इतिस्थाई ॥

२प २प २म २रे २म २म २प २म २रे २ग

वैष्णव जन शैव शाक्त सौर अपर विवि

२रे २म २प २प २प २नि २प २ग २ग २रे

ध भक्त पवन तनय भैरव गति आदि ग

२म २रे २म २प

ण ध्यावै ॥ इतिअंतरा ॥ साधक नित।

भू.रा. इष्ट नमन विविध भाँत करत जगत जा

म विना सिद्धिलेश तनक नहीं लावैं ॥

तोके नित चरण कंज मंज उरनिवास

करै बालविघ्र तिघ्र कार्य्य सिद्धि हेत ।

भावै ॥ ✤ ॥ इतिश्राभोगः ॥ ✤ ॥ इति ।

भूपाली रागिनी गणेश परिच्छेदः ॥

अथ भूपाली रागिनी गणेश परिछेदमाह

ध्रुवपद गणेश ताल चार ॥ गणपतिको

परम रूप करत सकल सिद्ध रूप विघ्न

तिमर परम हनन ध्यान श्रवण वर्ण बे

दे ॥ इतिस्थाई ॥ वक्रमाटि वर गणेश

मूर्ति प्रीतिपूर्व करै पूजे उछिह गणप

२ग २रे २सा २रे २सा २प
मू. रा. वाल मोद केदे ॥ इति थेतरा ॥ एकरदना।

२नि २प २ध २ध २प २सा २रे २सा २प २ध
करदन स्मरिन परम विशाद शोचि करन

२ग २रे २सा २रे २सा २सा २प २सा २रे २ग
हरण ताप भक्त जनन जाम गोयि वेदे। |||

२ध २प २सा २रे २सा २सा २प २सा २रे २सा
अङ्कुश कर तिगम फलो वशीकरण प

२प २ध २ध २प २नि २प २ध २ग २रे
रम मंत्र साथसिद्ध जगत जनन विनवे

२रे २सा २रे
कि फेदे ॥ इत्याभोगः ॥ भूपाली रागिनी

नाल चार ॥ परमदेव परम चतुर चारुच
तुर बाढ़ जाम भक्त जनन उरनिवास क
रुणानिधि बिसद ॥ इतिस्थाई ॥ परमरंक
काष शिखर बिक्रय के करण हेत बल
न कथा सनत भयो भगवद्गुण बिसद ॥
इति अंतरा ॥ ब्रह्मज्ञान पूजन की महिमा

२सा २रे २सा २प २ध २प २ध २ग २रे

मू॰ गा॰ सन बिघन गयो सनकादिक चार मिटय

२सा २रे २ग २ध २प २सा २रे २सा

हे तिन्ह करिस ॥ चार भाग कुसमनके ।

२प २सा २रे २ग २रे २सा २प २ध २प २नि २प २ध

शिविर धैरै नमन कलो शुभ वर प्रदानक

२ग २रे २सा २रे २सा २प २नि २प

हो गये जग चरिस ॥ जबहि रेक प्राण

२ध २ध २प २सा २रे २सा २प २ध २ग २रे

त्याग धर्म राय पास गयो कलो कर वि

२सा २सा २प २सा २रे २ग २ध २प

चार कर्म नाम स्वर गमिस ॥ नारद ऋषि

सिखहि दीन स्वर्ग गामि प्रथम कीन पु

न्हप भाग ग्रंथण ते याम चार जिम ॥ स्व

र्ग राजा इंद्र भयो स्वर्ग दान ध्यान कियो ।

श्राप विश्ववर्जे दीयो लीयो वर रसिला ।

हारे नहि काहू समर तीनलोक जीत ।

लिये बामनतनु बालतीन क्रमण जग ।

भू· रा· करिस ॥ ॥ इति आभोगः ॥ ॥ इति
भूपाली रागिनी विस परिच्छेदः ॥ ॥

अथ भूपाली रागिनी विश्वपरिच्छेदमाह।

ध्रुवपद विश्वः ताल चार ॥ सात्विक गु

ण परम सुभग शोभित पुंज रूप विभु भु

वन वृद्धि करण शील रमा रमण देवा

इतिस्थाई ॥ पालन हित जगत सदा उ

द्यत नित चतुर्भुजा परम शास्त्र चक्रगदा

भू.रा. शीव केन लेवा ॥ इति श्रेनरा ॥ करीटेर स

नत सार गये धाय भीति हरी थरी लाज

हुपत सता परम ग्रम भेवा ॥ चतुरानन

रूपधार विविधभात जगत रच्यो रवि

न सावलेत पुनः बाल उरसभेवा ॥ इत्या

भोगः ॥ ॥ भूपाली रागिनी ध्रुवपद विलः

भूपाली रागिनी ध्रुवपद शक्ति ताल चार॰

श्री भगव हिस ईह परम शक्ति उपज

गन प्रकर कार्य करणि चित्र जीव बुद्धि

हरिणी ॥ एक चिदानंद बल निजहि

जान जब अनंत एकके अनेक होइ त

व प्रधान मरणी ॥ इत्यंतरा ॥ भिन्नभि॰

भू·रा· त जीव जैत अधिक ऊन बिविध भांत है

त सकल प्रकट भयो माया पद धरणी ॥

ऐहि सोर मन बिचार अल्प बुद्धि बाल ।

बिप्र परमेश्वरि चरण शरण सदा उर

स करणी ॥ ॥ ❖ ॥ ॥ इति आभोग: ॥ ❖

इति भूपाली रागिनी शक्तिपरिछेद: ॥

अथ भूपाली रागिनी शक्तिपरिच्छेदमाह

ध्रुवपद शक्ति चार ताल ॥ श्री शक्ति:

आदि सकल विविधभांत जगत हेत श्री

भगवद् विस्नमाया नाम जास जग में

इतिष्याई ॥ कोटि शीतरश्मि उपम मु

खम शोभि जास बदन मदन कोटि मा

ध्रु·गा·

न हरिणि फांसि हृषि मधमें ॥ इत्येतवा।
वामेती कुसम सहद्या छेग मकल प्रति
हिं समृड हाटक की वलय पोति परीभ
जा युगमें ॥ वमन चित्र विचित कुसम
नरी जहा पैरे विविध नूपर युक्त युगा।
वाल हृषि परी पगमें ॥ इति आभोगः ॥

वपट वल ताल चार ॥ अनत जगत ना

म रूप कलित सिमे हेम घटित भूषा।

की आकृति कर स्वर्ण नाम हाको ॥ इ

तिस्याई ॥ थाहो जग रूप विकृत दे

ह गेह विचित बुद्धि अधम सकृत सत्य

मान ध्यान अपर काको ॥ इति अनंता ॥

भू॰ गा॰ मोह लोभ काम मद्द ग्रसि मतिकहिँ क्रोध

रक्त पूर्व स्वकृत फास वास जगत मोह।

न चाहो ॥ सोई चिदानंद ग्रेषा बाल नि

धी जीव रूप निज माया भूलिध्यान हृषि

मेट याहो ॥ ॥ ❖ ॥ ॥ इति आभोगः ॥

इति भूपाली रागिनी ब्रह्मपरिच्छेदः ॥

अथ भूपाली रागिनी बलपरिछेदमाह

ध्रुवपद बल ताल चार ॥ योगी जनम

न भजीत भीत मान आत्म रूप अलाव

अनूप नाद स्वतः सिद्ध उरम यारें ॥

इतिस्थाई ॥ एकामन यार पाम बसे

नही अपर जहा तहा जीव निचयका

भू.रा.

रि बोध स्मनत मौरै ॥ इति अंतरा ॥ अभो

तर चारि श्याम सो पदको करत भास

है पद रव बहिरस रत सोहे पद चारै॥

सोई सत्य रूप ईश जग अनीश नाम।

हृथा त्याग बाललीन रहे सदा मनवि

चारै ॥ इत्याभोगः ॥ भूपाली रागिनी ध्रु



ॐ अथ भूपाली रागनी प्रारंभः ॥ येह मेघ राग कीस्त्री
है साये काल समै है अरु येह षाडव है क्वचित ओड
व भी है निषाद और मधम इस में वर्जित है अरु धैव
तांश ग्रह न्यासा साये काले प्रगीयते ॥ अरु इसका अं
श ग्रह न्यास धैवत है अरु ब्रह्मा इसका देवता है और
तमतू ऋषि है अर उष्णिक छंद है भूबीज है अरु।

शांति रस है इसकी विरहिनी नायिका है और दत्त
नायक है अरु इसका वर्षा ऋतु है ॥ अथ मृणाली रा
गनी ध्यानम् ॥ गौर द्युतिः कुंकुम लिप्त देहा तंबा
लनी चंद्र भावी मनोज्ञा पतिं स्मरंती विरहेन दू
ना मृणालि केयम् रस शांति युक्ता ॥ अथ भाषा ध्या
नम् ॥ चंपकते गात देह भरी अन पीया नेह अंगअं

भू.गा.
२

ग काम गेह अधरनि लाली है कुंकुम की घोरधुलि र
ही है कुचनि पर मंद गति देषल जिर हित मराली है
धोति रस मोहि हरी चित प्रति डुःष भरी डरओ निल
गति वियोग वाण माली है ॥ नैंन हरि वल्लभ लसत
इंदीवर हें तें आलि मेग मोहति येह रागनी भूपाली
है ॥ अथ विरहिनी नायिका लक्षणम् । कवित ।

जेगुजेगु यन झूमें नैनौं नैनौं लोटै बाल झूमैं लागी बिरहाकी

झूमैं ऊौ ऋतन नन जारयो है ॥ टेरकोकिला की यें

उ चलाकी चंचला की कछु गावत नवा की नैक नय

नन उचारयो है ॥ ऊौथ ऋवलाकी रहि एक द्वैपल।

की सौं नंदके ललाकी डार जानन उचारयो है ॥ या

ऊौ धुरवाको तैसौं बोल मरवाको तैसो पौन पुरवाको

भू.रा.
३

उरवा कौं जर जारयो है ॥ अथ दक्ष नायक लक्षणम्

दोहा। सहज बडाई लाज डर अंत मे हित चित हो

य ॥ रहै अचल धरम धीरज निपुन दक्षण कहि

ये सोय ॥ अथ प्रीति रस लक्षणम् । सभतें होत

उदास मन बसत एक ही ठौर ॥ ताही सों सब

रस कहित केशव कवि सिर मोर ॥ अथ मृणाली

रागनी विनियोगः ॥ ॐ अस्यश्री भूपाली रागनी मंत्र
स्य तेमरू ऋषिः उस्निक छंदः ब्रह्मा देवता ॐ बी
जे भूं शक्तिः श्री भूपाली प्रीत्यर्थे मनो भीष्ट सिद्ध
र्थे भूपाली जपे विनियोगः ॥ अथ कर न्यासः ॥
ॐ भूं अंगुष्टाभ्यां नमः ॥ एवं ह्रिदयादि न्यासे सर्वं कु
र्यात ॥ अथ भूपाली रागनी पूजा विधाय ॥ आसने

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं वस्त्रं यज्ञोपवीतं गंधं अक्षतं।
पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं दत्वा पुनराचमनीयम्।स
र्वं पूजनं कुर्यात॥ अथ भूपाली रागनी मंत्रः। ॐ भू
भूपालैन्य नमः ॐ॥ इति भूपाली मंत्रः॥ जप संख्या स
मलक्ष प्रमाणं ७.....॥ अथ भूपाली देवता मंत्रः
ॐ ब्रह्मणेन्य नमः ॐ॥ अथ भूपालीरागनी देवताध्या

नम ॥ ॐ ब्रह्माणी रक्त वर्णाभे । पीत वस्त्रे रले कृतम
वन भंजे चतर्वस्त्रे म स्कवे स्काचि हस्त कम ॥ इति
भूपाली रागनी देवता ध्यानम ॥ अब भूपाली रागनी
का येह ठाठ है ॥ खरज सम रहता है रिषभ चढा ।
गंधार चढा । मध्यम वर्जित है । पंचम सम रहता है
धैवत चढा । निषाद चढा । कबित मत विषे इसको

भी वर्जित कहा है ॥ अथ भूपाली रागनी का येह सर

गम है ॥ ताल तीन। रे स ध स रे प प ग प ग ध ध प ग रे स स

इति अस्थायी ॥ ग ग ध ध प ध प ध ध ध प प ध सं ध प प ॥

इति अंतरा ॥ अथ भूपाली रागनी का गत येह है ॥

डिढ डा डिढ डा ढा डाडाढा डिढ डा डिढ डा ढा

डाडाढा ॥ इति अस्थायी ॥ डिढ डा डिढ डाढा डा

२सं २प २प २रे २सं १प २ध २ग २रे
ढाढा डिढ डा डिढ डाढा डा डाढा ॥ इति अंतरा ॥

२नि
अथ भूपाली रागनी का येह है ॥ यस्य अलापः ॥ नन

१प २सं २रे २ग २ध २ग २प २ध २ग २ध
री इना आनन उनन उआनन अद ननरी नरे नना ।

२ग २रे २सं २प २रे २सं
उननना आनरा ननन रन नानुम ॥ इति अस्थायी ॥

२ध २प २सं २रे २सं २नि २प २सं २रे २ग
ननन अदनने आनन नुम नानुनै नना नन नरी ।

२रे २सं २नि २प २ध २ग २रे २ग २प २ध
नना आन नान ननुम ननु नरीन नानुरी रना नना

२ग २रे ३म ३रे २ग २रे २म
आँन नाँन आँन ताँन राँन नतुम् ॥ इति श्वेतरा ॥ अथभू
पाली रागनी प्रकीर्ण विधिः ॥ षड्जकल्या
णपञ्चमाख्यैः फिंजोटी मिश्रितायदि । रहिता
मध्यमाख्येन भूपाली भूपमोददा ॥

अथ मेघरागस्य ब्रलपरिच्छेदमाह ॥ ध्रुव
पद ब्रल ताल कंप ॥ पूर रहो परणवि
भ जिम ग्रेबर मदन कलश भिन्नभिन्न
भामत तिहि पात्र विकृति धारी ॥ इति
स्थाई ॥ जगपालन हेत करी रूपधार
रहो वहो जगत धारिणि रूप कंहीय

करी

२ग २रे २सा २म २प २ध २नि २ध

मे॰रा॰ रण मारी ॥ इति षेत रा ॥ रवि हिमांशु ह

२प २म २ग २रे २सा २म २प २ध २नि २सा

प जगत तिमर हरै करै द्योत ज्योति ह

२ध २प २म २ग २रे २ग २रे २सा २म २प

प अन्न पवन हेत जठर चारी ॥ पवन।

२नि २सा २रे २सा २म २ग २रे २सा २ध २प

चलत जीव प्राण उर प्रकाश वसत बा

२म २ग २रे २म २ग २रे २सा

लभाल चारि योगि जनन पीर हरै भारी

इत्याभोगः ॥ मेघराग ध्रुवपद बाल ता

स चार ॥ जग कर्ता जीव जगत पालन।

हित विहित मेघ गरज गरज बरष बर

ष बूंदन करि कारी ॥ इति स्थाई ॥ चम

क चमक चपला चित्त विरह थारिहारि

पवन पुरहिं चलत हरित भूमि परम।

मोद धारी ॥ इत्यंतरा ॥ कारि घटा देष

मे·रा· केकि मेकि मदित नाद नदत बहत बा

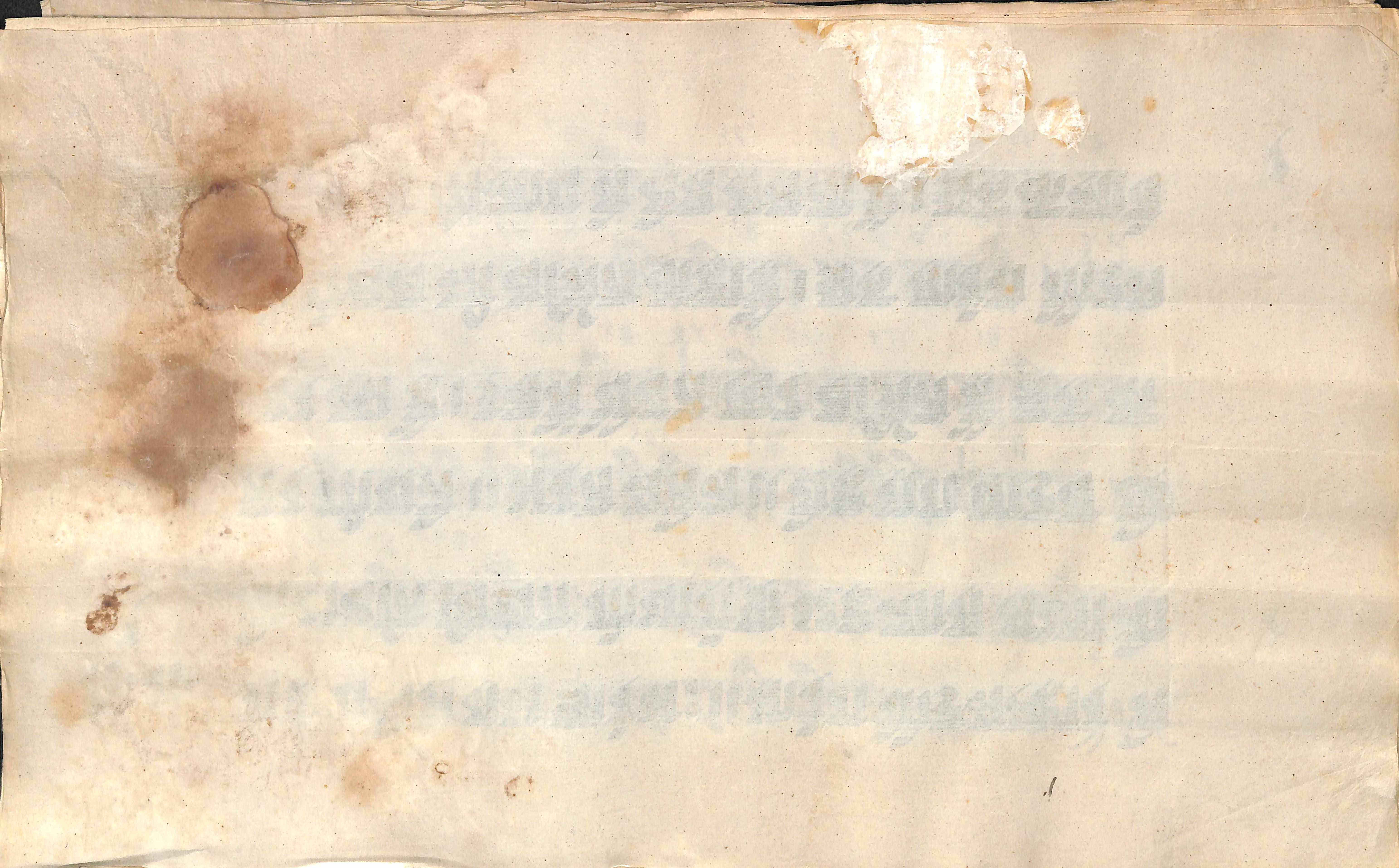
रि उज्वल उवर कोकिल रव प्यारी ॥ चा

त्रिक वित मदित भयो भगन वाचि न

यी नयी भयो प्रीति बालनिथे पावस ।

के निहारी ॥ इत्याभोगः ॥ ❖ ॥ इति ।

मेघ रागस्य बाल परिछेदः ॥ ❖ ॥



ॐ अथ मेघ राग आरंभः ॥ सारंग गौडमल्हारै मे
घो भवति मिश्रत: गांधारांशा ग्रह न्यास मध्यां नो
मव गीयते ॥ भरत मतेन ॥ येह राग षाडव छे
स्वर का है। इसमें धैवत स्वर वर्जित है अरु क
हीं पंचम भी वर्जित कहा है। अरु सारंग गौडम
ल्हार के मिलाप में येह बनता है। अरु कलावे

न लोग संपूर्ण सात स्वर में गाते है अरु कहीं ओड

व भी गाते है निषाद गंधार ओडव में वर्जित है।

इसका समय मध्यान है अरु सुरभी इसका देव

ता सोम ऋषि है त्रिष्टुप् छंद है संबीज है अरु म

ध्या त्रृढा जोबना नायका है नायक दत्त है अरु

वीर रस है इसका ऋत पावस है॥ अथ मेघरा

मे॰ रा॰
२

ग ध्यानम ॥ ॐनीलो त्पला भव पुरिंदु समान।
चैला: । पीतो बर स्तृषित चात्नक याच्यमान:
पी यूष मेंद हसितो घन मध्य वर्त्ती । वीरेषु राजे
ति युवा किल मेघ राग: ॥ अथ मेघ राग भाषा ।
ध्यानम ॥ नील सरोज सौ देह दिपै कटि में पट
पीत बिरा जत है ॥ अति उजल चेद उ जारी झूते

उपरे नामहो छवि छाजत है ॥ तन जोवन जो
ति जगे हरिवल्लभ मेद हसे मघ सा जत है ॥ ज
लजा चत्र चातक विकलो यह मेघ राग यों गाज
त है ॥ अथ मध्या रूढ़ जोबना नायका लक्षण
म् ॥ सवैया ॥ चंद को सो भाग भाल भृकुटी क
मान कीसी मेन कैसे पैने सर नैनन विलासहे ॥

मे॰ रा॰
३

नासिका सरोज गंध वाहे सोस सुगंध वाऊ दासो
से दसन केसे वीजरी सो हास है ॥ भाई कीसी।
ग्रीव भूज पान सो उदर ग्रोर पंकज से पाउ गति
हंस कीसी जास है ॥ देषी है गुपाल एक गोपि।
का मै देवतासी सोने से शरीर सब सोये कीसी
वास है ॥ अथ दत्त नायक लक्षणम् ॥ सवैया

३

बहि अंतर गूढ़न गूढ़ निरंतर काम कला कुल
कौन गिनै ॥ कहि केशव हास विलास सवै प्र
ति घोस बढै रस रीति सनै ॥ जिन को जीउ मे
रे हिं जीय जीयै सषी काय मनो वच प्रेम ठनै ॥
तिन तूं कहै प्रान वधू के अधीन हैं सापरनी ।
क किधौं सपने ॥ अथ वीर रस लछण । सवैया

मे॰रा॰
४

अघ जौं उधारिहौ किबक जौं बिदारिहौ जु कंस
के कि केशोराय केषी जौं पछारिहौ ॥ हरिहौ
कि प्राण नाथ पूतना के प्रानन जौ बनतें की ब
नमाली काली जौ निकारिहौ ॥ कारिहौ बिम
द घन वाहन जौ घन स्याम काहू सौ न हारे ह
थियाही सौ कौ हारिहौ ॥ वेही काम वर ब्रजकी

कुमारि कोनि मारत है नंदके कुमार कव मारि॰
है ॥ अथ मेघ रागस्य विनियोगः ॥ ॐ अस्य श्री
मेघ राग मंत्रस्य सोम ऋषिः त्रिष्टुप् छंदः सुरभी
देवता मंबीजे मनो कामना सिद्धार्थे मेघ राग॰
जपे विनियोगः ॥ अथ करन्यासः ॐ मंअंगुष्टा
भ्योनमः ॥ एवं हृदयादि न्यासे सर्वे कुर्यात ॥

मे॰ रा॰
५

अथ मेघ रागस्य पूजा विधाय ॥ आसनं । पाद्यं
अर्घ्यं । आचमनीयं । वस्त्रं । यज्ञोपवीतं । गंधं । अ
क्षतं । पुष्पं । धूपं । दीपं । नैवेद्यं । दक्षिणा । पुनरा
चमनीयम् ॥ इति मेघरागस्य सर्व पूजनं कुर्यात्
अथ मेघराग मंत्रः ॥ ॐ मेघरागाय नमः ॐ ॥ जप ।
संख्या १५·····॥ पंच दश लक्ष प्रमाण कुर्यात्

अथ मेघरागस्य देवता मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सुरभी

नमः ॐ ॥ देवता ध्यानम् ॥ विलोवक्त्र सियाल

क्ष्मीः स्वाहा चैव विभावसो वेदार्क शाक लक्ष्मी

या येन रूपास्तु मा श्रिये ॥ इति मेघरागस्य देव

ता ध्यानम् ॥ अब मेघरागकी येह ठाठ है ॥

षड्ज सम रहता है । ऋषभ चढा । गंधार उतरा

मे॰ रा॰
६

मधम उतरा। धैवत इसमे वर्जित है निषाद उतरा।
अरु संपूर्ण मे धैवत चढा लगना है॥ अथ मेघरा
ग सरगम:॥ सारेसा रेरेरे गम रेरेरे सासा धधधप ध
धप मप मप धधप ममरे सासा॥ इति स्थाई॥
मधनिसा निसा धधप मपरे सासा निनिप निनि
प मपरेसा मधनिसा निसा रेरे गम रे सासा धध

प यय प मप निनि सा मम रे सासा ॥ इतिश्रेतरा॥

अथ मेघरागकी गत मसीतखानी उठेगी तालकी

पहिली मे ॥ डिडडाडिड डा डा डाडाडा डिड डा।

डिड डा डा डा डाडा ॥ [illegible] ॥ डिड डाडिड

डा डा डाडा डा डिड डा डिड डा डा डा डा डा ॥

अथेश्रेतरा ॥ अथमेघराग सा अलापा ॥ ननरी इना

डिडू डा डिडू डाडा डाडाडा डिडू डा डिडू डाडा डाडाडा डाडिडू डा

डा डाडिड डाडा डाडिडू डाडा डाडाडा.

मे॰ रा॰

८

२ध २म २रे २ग २रे २सा २नि २सा २प २ध २म
द्रानन उनन उद्रानन द्रदतननरी नत्ते नना उननना

२ध २नि २सा २रे २सा २ध
द्रानरा ननन रनु तानुम ॥ इतिअस्थायी ॥ ननन

२ध २म २नि २सा २रे २ग २सा २नि २ध २म
द्रदनते द्रानन नुम तानुनै नना नन नरी नना

२ध २सा २नि २ध २म २ध २नि २ध २नि
द्रान तान ननुम ननु नरीन तानुरी रना नना

२ध २म २रे २ध २म २रे २सा
द्रान नान द्रान तान रान ननुम ॥ इतिअंतरा ॥

इत्यादयः। राग मेघ ताल।

८

अथ मेघरागस्य शक्तिपरिच्छेदमाह ध्रुव

२रे २सा २नि २सा २रे

पद शक्ति ताल चार ।। हरिमाया अति

२ग २रे २सा २नि २प २रे २सा २रे

अनंत जगत मध्य व्यापि करत प्रकार।

२म २ध २प २सा २प २ध २म २ग २रे २सा

कार्य विविधविश्व चित्र करण हारी ।।

२म २ध २प २नि २सा

इति स्थाई ।। काहि आतप परम प्रबल।

२रे २म २रे २सा २प २ध २म २प २नि २प २ध

पवन बहत तबहि मघन गान छूम।

मेघन

मे॰ गा॰

छूम छूम थाम चारी ॥ इत्यंतरा ॥ तडित

चमक बूंद परत करक उपल विविध

वरष परष त हिया विरहि जनन मोर

घोर धारी ॥ मेघ केज गंधयुक्ति मेदमे

द ब्यार कहीं लीन होत सकल घनः।

शव रज कत कारी ॥ इत्याभोगः ॥ मेघ

इस्को रस श्रृंगार ॥

राग ध्रुवपद शक्ति ताल केप सवैया ॥

२सा २रे २ग २रे २सा २प २धा २सा २रे

वृषभानु सुता निकसी घरतें मिस पा

२म २धा २प २सा २प २धा २ग २रे

नि सिया निसाकी मंगलीनी ॥ इतिस्या

२म २धा २प २नि २सा २रे २ग २रे २सा

ई ॥ चुनरी सिर स्यामघटा मथतें भानु

२प २धा २म २म २ग २रे

पूरण चंदनि भा मोव दीनी ॥ इतेतरा

२सा २रे २सा २प २धा २सा २रे २म २धा २प २सा

घन स्याम चकोर फस्यो हगडोर नजो

२प २ध॒ २म २ग २रे २म २ध॒ २प

मे॰रा॰ २ जैसो भजन प्रेमसैं कीनौ ।। तब आनन

२सं २रे २ग २रे २सं २प २ध॒ २म २ग

आनन जोर पीडो रस बालपिपास बढी

२ग २रे

रति भीनी ।। इति आभोगः ।। ❖ ।। इति

मेघ रागस्य शाखि परिछेदः ।। ❖ ।।

अथ मेघ रागस्य गणेश परिछेद माह।

२ध २रे २ग

सवैया गणेश ताल कंप ॥ शुभ गौरि।

२म २ध २प २ध २म २रे २म २ध २प

सिंधूर दीयो गण नायिक वेदकला अ

२ध २म २ग २रे २सा २म २ध

तिहीं कवि क्याई ॥ इतिस्याई ॥ जिमै श्रु

२नि ३सा २रे ३सा २नि २प २ध

डि कि श्यामघटा मधतै स्वर राज धनु।

२म २ग २रे २सा २ध २रे

चपला चम काई ॥ इस्थंतरा ॥ शिरहेम

२ग २म २प २ध २प २म २ग २म २प २म

मे॰ रा॰ करीट जेरे जिंह हीरक भीर हेरें तम उः

२ग २रे २सा २म २प २नि २सा २रे

त्व न साई ॥ जिंह चारि भुजा कर चारु

२सा २नि २ध २प २म २ग २रे २सा

दिये वर बालनिधी साथि सब्भम नाई ॥

इत्याभोगः ॥ मेघ राग ध्रुवपद गणेश

२सा २रे २ग २म २ध २प २प

जी ताल चार ॥ विघ्न गणन कदन हे

२ध २नि २सा २ध २प २म २ग २रे २सा २ध

त तिम पर्श्यु करहिं यैरें प्रगिन उरम

कारन हित प्रेक्षा नित धारी ॥ इतिअ

स्थाई ॥ निज भक्तन अभय दान अपार।

हाथ माथ धरैं वरण वरण वरहिं देत

हरै पीर मारी ॥ इतिअंतरा ॥ धरैं धीर।

नीरद जिम वर्ष वर्ष करै हरै हरै चित-

धरिणि अति मनहि भारी ॥ वैसेउप-

२नि २ध़ ३रे ३ग २म ३ग ३रे २ध़ २नि २प

मे·ग· कारि रदन वदन एक धारि परम धार·

२प़ २म २ग २रे २म २प २प २प़ २म २ग २रे २ध़

ण चरण कारि बाल विघ्न जग विहारी

इति आभोगः॥ इति मेघ राग स्य गाणे।

श परिछेदः॥ ❖ ॥

२

अथ मेघरागस्य विलंपरिछेद माह ॥

२स २रे

ध्रुवपद विलं: ताल फेप ॥ मकुट राज

२स २रे २ग २रे २स २रे २स २नि २प २रे २म

रहो नीको श्रवण कुंडल गरें मालतिल

२प २ध २स २ध २प २म २ग २नि

क भाल शोभा बनी ॥ इतिस्थाई ॥ बन

२स २नि २स २रे २स २ध २प २म २प

स्याम इति जास पीत बसन मोहे मोहे

२ध २प २म २ध २स २ध २प २म २ग

मदन कोटि शोभा बनी ॥ इति अंतरा ॥

मे·रा

धन धन रमानाथ दीनानाथ दयासिंधु।

जिन भक्त पालक शिषर मनी ॥ बाल·

निधी के प्रभु दीजे निज रति रसन रस·

ना रटत रहे जय से फनी ॥ इत्याभोगः

मेघ राग ध्रुवपद बिलं: ताल चार। धा।

पीतांबर धरण हरण बिबिध ऊःखम

२ध २रे २म २ध २प २ध २प २सं २प

म जनन कंकण कर अतिहि सुघर रमा

२ध २म २ग २ध २प २नि २सं

रमण बैठे ॥ इतिस्थाई ॥ अतसि कुसुम

२रे २ग २रे २सं २प २प २म २ध २प

कांति कांचि श्रोणि देश शोभि रही ^ दक्ष (बही)

२सं २प २ध २म २ग

हाथ गदा दलिति असुर दैदे ॥ इत्यंतरा·

२सं २रे २सं २रे २ग २रे २सं २नि २ध

अति तीक्ष्ण धार आर सहस जास चक्र

२रे २म २ध २प २सं २प २ध २म

चमक पाव लाव अगिन पुंजन मत छि

मे·रा·

त्र केथे ॥ अति उज्वल कमल लिये वंशी।

कीयें भक्त भ्रमर केब्रु नाद बाल नियी क

टे पाप केथे ॥ इति आभोगः ॥ ·:· ॥ इति

मेघ रागस्य विस्तु परिछेदः ॥ समाप्तः

अथ मेघ रागस्य शिव परिछेद माह ध्रुव

२रे २सा २रे

पद शिवजी ताल फेप मैवैया ॥ सीसजटा

२ग २म २प २ध २सा २ध २प २म

नि मे गंग तरंगन संगमियक सहे अति

२ग २रे २म २प २ध २सा

नीको॥ इतिस्थाई ॥ सेत विभूतिलिपी ।

२रे २ग २रे २सा २ध २प २म २ग

वपु भूषण कृष्ण गिरी जिके शोभित जी

२रे २रे २सा २रे २ग २म

को ॥ इतिअंतरा ॥ आनन पंचभुजा दश

मे॰रा॰ आयुध नाग सुपाश त्रिशूल धरीको ॥
अंकुश वज्र धरी परशु डमरु घेंटा थरना
थ सतीको ॥ इत्याभोगः ॥ मेघ राग ध्रुव
पद शिवजी ताल चार ॥ गिरिजा पति गे
ग वहे शिविरे विविरे विष धारि फिरै ब
घ मारे ॥ इति ध्रुवस्थाई ॥ विष कंठ धरै भ॰

२सा २ध २प २म २ग २म २ग २म

व भीति हैं करुणा कर मूल फैरे अति।

२ग २सा २रे २सा २नि २प

भारी ॥ इति अंतरा ॥ त्रिपुरारि सुरारि।

२रे २सा २रे २म २प २ध २प २म २ग

न खंड कियो स्मर दंड दीयो फनि ग्रंथ

२म २ग २प २ध २सा २रे २सा २ध

क मारे ॥ डाव हर कीयो सुर मोद दी।

२प २म २ग २म २प २म २ग

यो डर मोज शिवो त्रि वली निय धारे।

इति आभोगः ॥ इति मेघ रागस्य शिव

मे· रा· परिच्छेदः ॥ ❖ ॥ समाप्तः ॥ ❖ ॥ ❖

अथ मेघ रागस्य सूर्य परिछेद माहास

२रे २ग २म २ग २रे

वैया ताल फेप ॥ सूरज जोत जगी जग

२सं २नि २धं २रे २ग २म २ग २रे

में जब भीति तमिस्र हटी जड़ताई ॥

२म २धं २प २नि २सं २रे

इति अस्थाई ॥ धाई लगाइ फिरैं सगरी

२सं २नि २प २धं २म २म २ग २रे

निज कारज आरज पंथ चलाई ॥ तिह

२रे २ग २म २ग २रे २सं २नि

अंतरा ॥ गेह बहार सुधार विलेपन स्ना

मे. रा.

न सभोजन नृप सभाई ॥ ठाकुर पूजन

विप्र करैं उठ वेद पढैं रवि ध्यान लगा

ई ॥ इति आभोगः ॥ मेघ राग ध्रु व

पद सूर्य ताल चार ॥ जग भानु मान

प्रचंड मंडल उजल किरण प्रचारके ॥ उ

दक कर्षण करत क्रमतें देत प्राहुट ।

मारके ।। इतिग्रस्याई ।। वारिवाह प्रवाह ।

कारक धारिणि मोद विधारके गर्जगर्ज

सुमेघ वर्षत हर्ष जीव प्रकारके ।। इतिग्र

तरा ।। चलत उछल प्रवाह ग्रेबुद ग्रीष्म

तम निवारके ।। पोषि केकि प्रमोद नर्तन

कोकिला कल भाषते ।। हरित भूमि सुह:

मे.रा.

२सा २रे २ग २रे २सा २नि २ध २प २म २ग

ब्ज शोभित रक्त कुसुम विधायिके । अरुषि

२म २म २प २ध २नि २ध २प २म २प २म २प २म २ग

कुंज पूजित पाद पल्लव भास्करे प्रणतो

२रे

स्मिते ॥ इति आभोगः ॥ इति मेघ रागा ।

स्य स्वर्य परिछेदः ॥ ❖ ॥ समाप्तः ॥

अथ मेघ रागस्य दशावतार परिछेदमा

ह ध्रुवपद ताल गीत ॥ श्री मछ कछ ।

वराह नरसिंह वामने जग पावनम् ॥

इति स्थाई ॥ परशु राम स्वराम सिंधु मे

ले मेना बलावनम् ॥ इति अंतरा ॥ नी

ल अंबर धारि हलधर बुद्धकल्कि अमाव

मे·रा·

नम ॥ कल्कि रुप नमामि दश विध बा
ल ग्राम पुजावनम ॥ इति आभोग ॥

इति मेघ राग स्य दशावतार परिछेदः॥

20

३·१

अथ टेक मल्हारी रागिनी ख्यालपरिच्छेदमा

= २सा २म २ध २प

ह ध्रुवपद ताल चार ॥ सेवित को रूप ।

२ध २म २ध २प २नि २सा २रे २सा २प २ध २म २ग २रे २सा

धारि चेतन जग सकल मोहन लीन ग ।

२रे २ग २रे २सा २रे २ध २म २ग २रे २सा

या परम रम्य योगि ध्येय ध्याता ॥ इतिस्था

२नि २सा २रे २सा २रे २ग २रे २सा

ई ॥ सेग दोष त्याग जाग सपदि साधुराय

२नि २प २ध २म २ग २रे २सा २रे २ध २म

निगम ऽगम पंथ भाल चलत पावत ।

=
अथास्या अन्योपि
प्रकीर्णविधिः
केदारो घस्थलैह्याख्या
गान मेघेनसंयुतः
टंकमल्लारिसाप्रोक्ता
वर्षायांगानमिष्यते ॥ २

म॰ रा॰ तिह ताता ॥ इति श्वेतरा ॥ नाडी राग श्रोथ

रोथ विन चलत उस्तरेग प्राण अपान यु

क रूप स्वधमण मथ लाता ॥ आलोबुज ।

युगम पत्र मध्य वर्ति तपत हरै धरै अमृत

वृष्टि लटमि परम मोद पाता ॥ इत्याभोगः ।

टेक मल्हारी रागिनी ध्रुवपद ब्रह्म ताल ॥

२२

२म २रे २म २ध २नि २स २नि २ध २म २रे

वार ॥ वात्रिक इक जोह मास मर्म वर्मत

२म २रे २ग १नि १ध २रे २ग २रे २स २ग २रे

पत जगत वांछित कौं आहट भइ मिटी।

२म २ग २रे २स २म २ध २प २नि

नपत मारी ॥ इतिस्थाई ॥ विविध भांत।

३स ३रे ३स २नि ३स ३रे ३ग ३रे ३स २नि

गर्जे गर्जे अनहद को नाद जहां तडित

२म २रे २म २रे २म २ग २स

चमक तेज पुंज तिमर हरे भारी ॥ इतिअं

२म २रे २म २ध २नि ३स २नि २ध २म

तरा ॥ झम झम झम बूंदन जिम झरी।

मं॰रा॰ परम शब्द सुन्यो कहीं मोर कूक कहीं को
किल की जारी ॥ नाडी वृत्त छांये शीत स्मि
ल्यो आत्म प्रेह बालनिथी सुधी भई एक
रूप कारी ॥ ❖ ॥ इति आभोगः ॥ ❖ ॥

इति टेकमल्हारी रागिरी ख्याल परिछे
दः ॥ ❖ ॥

अथ टेकमल्हारी रागिनी शक्तिपरिछेद

२रे २धं

माह ध्रुवपद शक्ति ताल चार ॥ दैषत ।

२प २धं २म २ग २रे २सां १प १धं

जन नितहिं नाश आश पाश छूट फसो

१धं १नि २सां २रे २धं २प २धं २म २ग २रे

नसो ज्ञान ध्यान सकल ममता हय ।

२सां २म २धं २नि ३सां २प

मारी ॥ इति स्थाई ॥ एक मेरे सकल वैद्य

३रे ३ग ३रे ३सां २नि २प २धं २म २ग

निजहिं हाथ जारि देत फिरभि अपन

म॰ रा॰ ८

थिरहिं मान लेन सोम मारी ॥ इत्येतता ॥
वैर करैं परम अपर जीवन को मारमार
निज अहार भेट भरैं हरैं प्राण भारी ॥ नि
ज विनाश भूल रहैं वहैं यतन नाहि म
रैं तदपि मरैं बाल निधी येह माया यारी
इत्याभोगः ॥ ढेकमल्हारी रागिनी ध्रुव

पद ताल चार ॥ माया को परम रूप नाम ।
करत सकल जगत मरण मरण नामक
है कोन मरत जगमें ॥ इतिस्थाई ॥ देह
गेह पंच भूत घटित जिनेंहि दाह अचि
त तास मरण नाहि बने भूत भये मग ।
में ॥ इत्यंतरा ॥ जीवात्मा अजर अमर म

मं॰गा॰ दा रहे करे वरे सर्व लोकव्यापि रहे करहा

चलत मधमें ॥ बालनिधी वृथा तपत ।

जगत मोहज मदा मक मरों करों काउ

पाउ परो मोह नगमें ॥ इत्याभोगः ॥

इति टेकमल्हारी रागिनी शक्ति परि ।

छेदः ॥ ❖ ॥

२प २ध २म २ग २२ २म

पद स्वर्य ताल चार ॥ दर्शन कर मिहरज

२ध २प २नि २प २स्त २नि २प २ध २म

गत निहर गोरा मजन कर मैत्र कर्मेश्र

२ग २२ २ग २म २ग २२ २स्त

मध्य कौरै हरैं पाप मगारे ॥ इतिस्याई ॥

२म २ध २प २नि २स्त २२ २स्त २नि २प २ध २म २ग २२

परम पूत भक्त मक्त देवार्चन रचन वि

२म २ध २प २ध २म २ग २२ २ग २म २ग २२

विथ भीत धात हटेया देष लाज धरी ज

२स्त २प २ध २म २ग २२

गरे ॥ इति थ्रेतरा ॥ रवि धात लाज थार

म॰ रा॰ शुभ मंगल कर्म चार मंद कर्म कर निवा

र मोद बैठि नगरे ॥ ब्रह्मण ब्रह्मण वर्णिया

रि पेमे उपकारि बाल निथे सुधी दान क

रहे परम देव विगरे ॥ इति आभोगः ॥ः

इति टेकमलारी रागिनी सर्य परिछेदः

अथ टेकमल्हारी रागिनी सूर्यपरिछेदमा

ह ध्रुवपद सूर्य ताल चार ॥ करुणा कर

परम पुण्य कारण जग द्योत करै उद्दक

रम हरण विभ्रहिं मिहर रूप धारी ॥ उ

निस्याई ॥ जबहिं रजिनि तिमः गाढ पेषि

मन विचार करैं उज्जेन कछे चोरि करैं हरैं

म·रा·

रायभारी ॥ इति खेतरा ॥ अवर त्रिया अव

र पुरुष भोग करत हरत बीज जीव रू

प गर्भ पात पाप मति विचारी ॥ सूतणा

न मत्स्य मांस भोजन कर मन रहें कहें

बालरवि सदर्श सकल पाप हारी ॥ ❖

इत्याभोगः ॥ टंकमल्हारी रागिनी ध्रुव

अथ टेकमल्हारी रागिनी विस्नु परिछेद

२रे २ग २म

माह ध्रुवपद विस्नुः ताल चार ॥ श्री विस्नु

२ध २प २नि २प २ध २म २ग २रे २स १नि १प

पीत वसन मंद हसन रदन डसी रमावि

१नि २स २रे २ध २म २ग २रे २स

न मोहिनि चन मध्य इंद्र वासी ॥ इति

२म २ध २प २नि २स २रे २ग २रे २स

स्याई ॥ हेम जटित मुकुट त्रिकुट हीर

२नि २प २ध २म २ग २रे २स २रे २ध

क युत चिन्ह हरे भाव उज्वल कोटि चंद्र

ठै
म॰रा॰

२म २ग २रे २सा २रे २सा २म
मेंडल सबिकासी ॥ इति मेघनरा ॥ श्रुणामबर

२ध २प २नि २प २ध २म २ग २रे २सा १नि
ण ध्रतसि कुसुम बिस्मित हग बाध फेरे

१प १नि २सा २रे २ध २म २ग २रे २सा
हेरे पीर धीर सकल बच्छे प्रीति भासी ॥

२म २ध २प २नि २सा २रे २ग २रे २सा
चरण कंज मंजु बाल बिप्र सदा सुजन ॰

२नि २प २ध २म २ग २रे २सा २रे २म २ग
हित याचित कछु प्रीति रीति हटे जगत

२रे २सा
हासी ॥ इत्याभोगः ॥ मल्हारी रागिनी ॰

२प २म २ग
ध्रुवपद बिलः ताल चार ॥ इंदीवर विक

२रे २ध २प २म २ग २रे २सा १नि १ध
सित भाव भाविम उपम जास वास लिप

१प १ध १नि २सा २रे २प २म २ग २रे २सा
सु रमा अमरि सदा हरिपद करधारी ॥

२ध २नि ३सा ३रे २सा २नि
इतिस्थाई ॥ बन माला गरैं प री परे थ

२ध २प २म २ग २रे २सा १नि १ध
री सैो ति जातु मातु करणि सकल सुर।

२सा २म २ग २रे २सा २प २म
सदेह लेत सारी ॥ इतिअंतरा ॥ तडित।

२ग २रे २प | २ध २म २ग २रे २स १नि | १प १ध २प

म॰ गा॰ पुंज पुंज मेघ घमक कौरै जिमहिं करकउ

१नि २स २रे २ध | २म २ग २रे २स | २प

पल उपमा देष वाल मोट थैरै भारी ॥ पे

२नि ३स ३रे ३स | २नि २प २ध २म २ग | २रे

मी निज प्यारि पेषि उरम रेषि धार रेहैं

२स १नि १प २स २रे २ध | २म २ग २रे २स

चरण शरण बाल निये वैसे उरम चारी

इति आभोग: ॥ ❖ ॥ इति टेकमल्हारी रागिनी विस्नु: परिछेद: ॥ ❖ ॥ ❖

अथ टेकमल्हारी रागिनी गणेशपरिछेद

मारू ध्रुवपद गणेश ताल चार ॥ सकल

देव सकल मुनि सकल जगत जाम ना

म आद जपत विपति हरण करण सिद्धि

भारी ॥ इतिस्थाई ॥ परसुधारि भारि दल

न अमर सेज शील जाम पीत पीत अंबर

२म २ग २रे २ग २रे २सा २सा

म॰ गा॰ जरि धुक गोवि धारी ॥ इति खेतगा ॥ ग्रह

२रे २ध २म २ग २रे २ग २म २ग २प २ध २म २ग

णा ग्रहण वर्ण जाम ग्रतहि खषम उपम

२रे २सा २नि २प २नि २सा २रे २ध २म २ग

धैरै कैरै परम मोट जिमेहि गैरिक गिरि

२रे २सा २ग २ध २प २नि ३सा ३रे ३सा

भारी ॥ स्रत वसंत कुसमित तरु सघ

२नि २प २ध २म २ग २रे २सा २रे २ध २प

न तडित गोवि धुक मकक कैरै डःख स

२ध २म २ग २रे २सा

कल मोट करण हारी ॥ इति आभोगः ॥

मल्हारी रागिनी ध्रुवपद गणेश ताल ४

२म प २प २नि २प २ध २म २ग २रे २सं २प

कपिल कपिल वदन एक रदन श्याम हे

२नि २सं २रे २ध २म २ध २प २नि २प २ध २म २ग

म युक्त सक्क कैरै तिमर सकल डकल वे

२रे २सं २म २प २नि २सं ३रे

द यारी ॥ इति स्थाई ॥ चरण रणित नूप

३ग २रे ३सं २नि २प २ध २म २ग २रे २सं २प

र युग कटक हेम घटित पैरै वज्र युक्त स्त्र

२नि २सं २रे २ग २रे २सं

गट भुज भार हैरै भारी ॥ इति अंतरा ॥ः

म॰ गा॰ परम ब्रह्म आदि पुरुष ऊंकार सुरम सुभग ध

रैं चरैं जगत भक्त विघन नाशन हितका

री ॥ शनैः शनैः पेखि पेखि अंतराय छि

पन वचैं अचैं पुंज परम विकट बाल।

मोट कारी ॥ इति आभोगः ॥ इति टेका।

मल्हारी रागिनी गणेश परि छेदः ॥ ॥

अथ टेकमल्हारी रागिनी शिवपरिछेद

२ग २म २ग

माह ध्रुवपद शिव ताल चार॥ अत मा

२रे २सा १प १नि २सा २रे २ध २प २ध २म

ल करगहि थैरै हरै पाप विविधभांत वज्र

२ग २रे २प २ध २म २ग २रे २सा

दांत सित त्रिपुंड भस्म भाल धारी ॥ ३

२प २नि २सा २रे २ग २रे

निरधाई ॥ रुंड माल उर विशाल भाल

२सा २प २ध २म २ग २रे २म २ध २प

नयन जगमगात अति विरूप कर त्रि

ट॰
म॰ रा॰ शूल मूल जगत कारी ॥ इति अन्तरा ॥ न

र मेजिरि अस्थि एक हाथ लिये नरक

पाल काल रूपि केटक जन हनन क

रन मारी ॥ सहस हाथ माथ रहित वि

हत प्रलय परम प्रबल चरण शरण।

बाल धारि अरि विनाशकारी इत्याभोगः

टेकमल्हारी रागिनी ध्रुवपद तालचार

२म २ध २प २ध २म २ग २रे २सा २नि २सा

परम शांत पद्मासन षाशाधारण शुक्र

२रे २ग २म २ध २प २ध २म २ग २रे

मुकुट हाटक को शिषरि पर्यो है रे।

२ग २रे २सा २म २प

तिमिर मारी ॥ इतिस्थाई ॥ पंचानन।

२नि ३सा तीन २ग २रे २सा २नि २प २ध

तीन नयन श्रयन परम योगि धरणि

२म २ग २रे २ग २म २ग २रे २सा

हार सकल मार आत्म कला भारी ॥

३·
म·रा·

२म २प २ध २प २म २ग २रे
इति श्वेतरा॥ बाम अंग उमा गंग शिषरि

२सा १नि २सा २रे २ग २म २प २ध २प
उतर जगत सकल तारि दीयो कीयो·

२ग २म २रे २ग २रे २सा २ध २नि २सा ३ग
विगत पाप परम चारी॥ चरण श्रवण

३रे २सा १नि २ध २प २म २ग २रे २सा
बाल विप्र नृपति महाराज विजय वी

१नि २सा २ग २म २प २ध २प १म २ग २रे
क्षित नित भ्रमित दया धारि कर उभा·

२सा
री। इति टेकमलारी शिव परि छेदः॥

अथ टेक मल्हारी रागिनी दशावतार परिवे

२रे २ध २प

द मात्र ध्रुवपद ताल चार ॥ नारायण आ

२ध २म २ग २रे २सा १नि १प २सा

दि विष्णु ब्रह्म विष्णु पाल रहो जगत सकल

२ग २म २ध २म २रे २सा

विकल देष नाना तनु धारी ॥ इतिस्थाई॰

२म २ध २प २नि २सा २रे २सा २नि २प

कहीं मत्स्य कच्छप कहिं सूकर उतन्नरहा।

२ध २म २ग २रे १नि १प २सा २ग २म २रे

रि भयो सहो क्लेश सकल जहो प्रहलाद

मा॰२॰ भारी ॥ इतिश्रेनरा ॥ किहि वामन भृगु प

ति कहि रामचेंद्र नील वसन बुद्ध कल्कि

बालनिधी सकल भर उतारी ॥ सदा भक्त

क्लेश देष दया निधी दया करे धरे हरुप

रूप जगत परम सुकृत कारी ॥ इत्याभो

गः ॥ इतिमल्हारी रागिनी दशावतारपरि

ष्टिः ॥ समाप्तः ॥

13

शं॰ अथ शंकरा राग प्रारंभः संगीतकल्पद्रुमानुसार
रा॰ येह राग शंकरा मेघरागका पुत्र कहा है अर इ
सका ऋतु वर्षा है अर रात्रि इसका समय है और
येह राग संपूर्ण सातस्वरकी है अर इसका अंश
ग्रहस्वर षड्ज है। अर ब्रह्मा इसका देवता है औ
र ब्रह्माही ऋषि है अर अनुष्टुप छंद है और शं
बीज है अर इसका शांतिरस है और स्वकीयाना
यिका अर अनुकूलनायक है। अथ शंकरा राग

कराभरणाय नमः। इति राग मंत्रः॥ अथ रागदेवता
मंत्रः। ॐ ब्रह्मलक्षणेन नमः। इति देवता मंत्रः। अथ ज
पसंख्या। पंचदश लक्षं पंचदश सहस्रं च॥ अथ
शंकराभरणाशांतिरसलक्षणम्। दोहा। सबते हो
त उदास मन बसत एकही ठौर। ताही सों समर
स कहत केसव कवि सिरमौर॥ यथा कवित्त। दे
षै नहीं अरविंदनि दै चित चंदकि आनंद कंदनि
कोई। कामन काम कथा करै कानन ताके त्रिया

पु॰
रा॰

म कि सुंदरताई। देषि गई जब तैं जमकौं तब तें
कछु वाहि न देषौ सुहाई। छाडेगी देह जु देषि वि
ना अहो इन कान्ह कहूं है दिषाई। इति शांतिरस
लक्षणम्॥ अथ स्वकीयानायिकालक्षणम् दोहा॰
संपति विपति जु मरन हूं सदा एक अनुहारि।
ताहि स्वकीया जानिये मन क्रम वचन विचारि॰
इति स्वकीयानायिकालक्षणम्॥ अथ अनुकूल
नायकालक्षणम् दोहा। प्रीति करै निजनारिसों॰

पर नारिन प्रतिकूल। केशव मन वच करम करि सो
नायक अनुकूल। यथा कवित्त। औरके हास विला
स न भावत साधन को वह सिद्धि सभावै। आसनवा
स हवासन भूषन केशव कौंहू यहो वनि आवै।
वात कहै जु सदा निवहै कवि कोऊ कहूं कछू सो
पुन पावै। सो विनु प्रान जो प्रानन कान्हसों वैर
कियो यह प्रीति कहावै। इति अनुकूलनायकल
क्षणम।। अथ शेकनाभवननाटकमः। खइजसमर

शं० रा०

हताहै रेषभ उतरा लगता अरु गंधा इसमें चडा लग
ताहै और मध्यमभी उतरा है अरु चडाभी लगेगा अ
र धैवतभी उतराहै निषादभी चडा लगताहै ॥ अथ
शंकराभरणसरगामः ताल तीन। मगरेसा निसा
गगरे गमगरे गमगरेसा निधपगगमधमसा। इ
तिस्थाई अथ अंतरा। गमरेगमधमधगमपनिसा
निसा गम गसा मपनिसा गसा। इतिसरगामः। रा
गशंकराभरणगानमसीतखानीचलेगीपेहलीमे

तालधीमात्रिताला ॥ डिड डा डिड डा डा डा डाद्दा॰
डिड डा डिड डाडा डाडाडा । डिड डा डिड डाडाडा
डाडा । डिड डा डिड डा डा डाडाडा । इतिस्थाई अ
थअंतरा । डिड डा डिड डाडा डाडाडा । डिड डा डि
ड डाडा डाडाडा । डिड डा डिड डाडा डाडाडा ॥ डि
ड डा डिड डाडा डाडाडा ॥ इति अंतरा ॥ अथ शंक
राभरन राग अलापः । ननरी इना आननन उनन
उआननन अदननरी तने नना उननना आनरान

शो· नन रनुम नानुम ॥ इतिस्थाई अथअंतरा ॥ ननन

रा· अदनते आनन नुम नानुनै नना नन नरी नना आ

ननान नुनम ननु नरीन नानरी रना नना आन ना

न आन नान रान नुनम ॥ इति शंकराभरण राग

स्य अस्थाई अंतरा अलापः समाप्तः ॥ ❖ ॥❖॥

अथ शोकराभरण रागस्य आलापरिच्छेदमाह ध्रु

२सं २नि २ध | २म २ग २रे २सं १नि

वपद ताल चार ॥ अलख अविनासी अव्यक्त रू

२सं २ग | २म २ध २नि २प २ध २म २ग | २रे २सं १नि

प परमात्म परम ब्रह्म निर्गुण निरंजन निरंका

१ध १नि २सं | २म २ग २रे २सं २म |

र तेरी माया अपरं अपार ॥ इति अस्थायी ॥ रा

२ध २नि ३सं ३ग ३रे ३सं | २नि २ध २म २ग २रे

जा रंक सबही तेही तेही कर सुमिरि पावत

२सं १नि |१ध १नि २सं २म २ग २ध | २म २ग

ना तेरो अंत हे दियाल भगवंत करन कारण

२रे २सा ३सा २नि २धु २म २ग

ग॰ करतार ॥ इतिग्रन्तरा ॥ रंग रेख कछू नाहि क

२रे २सा १नि २सा २ग २म २धु २नि २प

ध्रु॰ भ॰ रे जो बिग्यान नाहि सब बिन आनंद घन अग

२धु २ग २रे २सा २म २ग २रे २सा २म २धु २नि

म अगोचर जपहैं नाहे बार बार ॥ नव खंड ब्रह

३सा ३ग २सा २नि २धु २म २ग २रे २सा १नि १धु १नि

मंड छाई जो अखंड जोत प्रगट ना होत कही

२सा २ग २म २धु २नि २धु २म २ग २रे २सा

छूट छूट थके आधीन जोगी जंगम जती सन्या

२म २ग २रे २सा

सी सब नर नाथ ॥ इति आभोगः ॥ राग श्रीकरा

भरन पुव पट बाल ताल चार ॥ परमेस्वर परे

ब्रह्म परमात्म व्यक्त अव्यक्त परमतत घटघ

ट वासी अनन्त भेद अपार अपार ॥ इति अस्थाई

मुनि देव कर थके भेव पायो है न तेरो भेव।

नेति नेति गावैं वेद मिटत जानै सब निषेध

मूरत ना कोई तेरी देखी कर विचार ॥ इति अं

२नि २प २पि २म २ग २रे २सै २नि १पि १नि

ता॰ नरा ॥ ब्रह्मा हूं ने करी खोज मिल्यो नाही कोउ जब

१नि २सै २ग २म २पि २नि २प २पि २म २ग

ध्रु॰ भ॰ हों जात भरम मोज देखना काहू उेट बिन ग्रंथ ।

२रे २सै २म २पि २नि ३सै ३ग ३रे ३सै २नि २प

कारज ॥ बुद्धि और मन बानी करण सकत कहा

२पि २म २ग २रे २सै १नि १पि १नि २सै २ग २म २पि २नि ३सै २नि

नी तेरी चकित रहित जानी ध्यानी माया को विचित्र दे

२प २पि २म २ग २रे २सै २ग २म २पि २म २ग २रे २सै

खि आधीन क्या करे बिखान जो देखो है से सारज ॥

इति श्रीकरुणाभरननागस्य ब्रह्मपरिछेदः समाप्तः

अथ श्रीकर्णाभरन रागस्य शक्तिपरिच्छेदमाह ध्रु

२नि २ध २पं २म २ग २म

वपद ताल चार ॥ हे धन्य धन्य राज राजेश्वरी

२पं २नि ३सं २नि २पं २म २ग २सं १नि २सं २ग २म

शिवे सदाशिव रूप दुःख हर करनी पर(म) शक्ति भक्त

२ग २रे २सं २म २पं २नि ३सं

न मन मानी ॥ इति अस्थाई ॥ नव खंड ब्रह्मंड

३ग ३रे ३सं २नि २पं २म २ग २रे २सं १नि २सं २ग

हूंमें छाये रही तेरी जोत गुण उतपत जो होत व

२म २पं २नि २पं २म २ग २रे २सं २नि

भंते तेहीं तीन लोक जानी ॥ इति अन्तरा ॥ हे

रा॰
घो॰भ॰

हे री विधाता माता जगत जननी सर्व संकट हर
नी भवानी भद्रकाली सुंदरी महामाया महारा
नी ॥ तुंही स्वाहा तुंही सिद्धि तुंही निधि तुंही बुद्धि॰
तुंही ज्ञानकी खान तुंही भक्ति मुक्ति दान तेरो
नित तुंही जो देत प्राधीन पै दयानी ॥ इत्याभोगः
राग घोकरा भरन ध्रुवपद शक्ति ताल चार ॥❖

२सा २रे २ग २म २प २नि २ध २प २म २ग २रे २सा १नि

जै जै जै अंबे अबला बाला नवकोट मूर्ति कहाँ लौ

१प १नि २सा २ग २रे २सा २म

वर्नन करे हो जो बुद्धिहीन ॥ इति अस्थाई ॥ सुर

२प २ध २नि ३सा ३रे ३सा ३सा २नि २ध २प २म २ग

नर मुनी सब पूजित जो तुमी हिंको ध्यान सपारिमे

२रे २सा २नि २सा २ग २रे २सा

ट लिये भक्ति में जो हैं प्रवीन ॥ इति अन्तरा ॥

२सा २ग २म २प २नि २ध २प २म २ग २रे २सा

ब्रह्मा विस्नु महेश जो के काटे सब कलेश ध्यान

२नि १प १नि २सा २ग २म २प २ध २प २म २ग

धरत है हमेश नर नाग किन्नर मानत है लोक

२रे २सा |२म २प २नि ३सा ३रे |३ग २रे ३सा २नि
गा॰ तीन ॥ जो जो बोले श्रावत मन वांछित फल पावं-

२प २ध २म २ग २रे २सा |१नि १ध १नि २सा २ग २म २ध |२प
श्रो॰ भ॰ त यक्ष गंधर्व गावत द्वार पैं ठाडे नित नित ध्याव

२ध २म २ग २रे २ग २रे २सा
त है प्रेम पुलक आधीन ॥ ❖ ॥ इत्याभोगः ॥ ❖ ॥

इति श्रीकराभरन रागस्य शाकि परिच्छेदः ॥ ❖

समाप्तः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

❖ ॥ ❖ ॥ ❖

अथ शंकराभरन रागस्य गणेश परिछेदमाह

२सं २रे २ग २म २पं २प

ध्रुवपद ताल चार ॥ गणपत गणेश गौरी महे

२नि ३सं २नि २पं २म २ग २रे २सं १नि १पं २नि

श नंदन लंबोदर विनायक बुद्धि विधाता सिद्धि

२सं १ग २म २ग २रे २सं २म

करण कारण श्री गणराज ॥ इतिस्थायी ॥ च

२पं २नि ३सं ३ग ३रे ३सं २नि २पं २म २ग २रे

तुर्भुज एकदन्त तन सिंधूर वेदमाल मक्तमाल

२सं १नि १पं १नि २सं २ग २म २पं २नि २पं २म

बिराजे मुकुट सिर पीत पट कट कर दिपन स्वाबदा

रा·
धु·भ·

२ग २म २प २ग | २रे २सं | २सं
थिक दीननकी राखे लाज ॥ इतिग्रन्तरा ॥ स्त्रष·

२ग २म २प |२नि ३सं २नि २प २म २ग २रे २सं १नि |१प
केत भक्त हेत विघनन रीगज बदन सदन सुरति

१नि २सं २ग |२म २प २नि २प २म २ग |२म २ग २रे २सं
ग्रानंद केद ग्रपने पायिक ह्वैके सम्हारत नितज।

|२म २प २नि ३सं २ग २रे ३सं |२नि २प २म २प २रे
सुर नर मुनि किंनरी गंधर्व ज्ञानी तीन लोक के ब

२सं १नि १प |१नि २सं २ग २म २प २नि २प
सन हार पूजित जो बारबार देवके कृपाल या

२म २ग २रे २प २म २ग |२रे २सं
ल ग्राधीन शरण ग्रायो ग्राज ॥ इतिग्राभोगः ॥

२सं

राग शंकराभरन ध्रुवपद गणेश ताल चार ।। गा

२ग २म २ध २नि २प २ध २म २ग २रे २सं १नि १ध १नि

ऊँरे निस बासर गज बदन खंडधारि गौरी नंदन

२सं २ग २म २ध २नि २ध २म २ग २रे २सं २ग २म २ग २रे

कलाबन रमन हर्ष प्रिये जो एणी करत सब की

२सं २म २ध २नि २सं ३ग

आसा ।। इति अस्थायी ।। जोगी जंगम जती संन्या

३रे ३सं २नि २ध २म २ग २रे २सं १नि १ध १नि

सी सर्व भेख करत सेव चाहत है जो वांकी सेवा।

२सं २ग २म २ध २नि २ध २म २ग २रे २सं २ग २ध २म २ग

नगर बगर डगर हमे मानत जो आरी जब फें।

ग॰
घ्रे॰ भ॰

२रे २सा २सा २ग २म २प २नि २ध
करत घासा ॥ इतिश्येनरा ॥ गामत समे नरनार यु

२प २म २ग २रे २सा १नि १प १नि २सा २ग २म
वा ग्वैर वुड कुमार पूजितहे शिवडलार करण

२प २नि २प २म २ग २रे २ग २रे २सा २म २प २नि
लागे वपारी व पार पाये यन गासा ॥ थेरेहें जो॰

३सा ३ग ३रे ३सा २नि २ध २प २प २ग २रे २सा १नि २प
ध्यान नव विघन हरण गज करण जीको पाव

१नि २सा २ग २म २प २नि २प २म २ग २रे २सा
त मन इछा फल कल्पतर तें जैसें धायीन वन

२प २म २ग २रे २सा
मन तन यन सो दासा ॥ इतिगणेशपरिछेदः

अथ शंकराभरन रागस्य विल परिछेद माह ध्रु

२नि २धै २म २ग २रे २सं १नि

वपद ताल चार ॥ आज आयोरे आयो मोरे अंगना

१धै १नि २सं २ग २म २धै २नि २धै २म २ग २म २ग

ना श्री रमाकंत मोर मुकुट कट पीतांबर बनमा

२रे २सं २म २धै २नि ३सं

ला धारीरी ॥ इति अस्थाई ॥ कमल नयन नीके

३ग ३म ३ग ३रे ३सं २नि २प २धै २म २ग २रे २सं १नि

बैन करत हरत मन सुंदर स्वरूप जोकी मूरत

१धै १नि २सं २म २ग २रे २सं २नि २धै २म

लागत मनहीं प्यारीरी ॥ इति अंतरा ॥ शीवचक्र

रा॰ श्री॰ध्रु॰

२ग २रे २सा १नि १पा १नि २सा २ग २म २पा २नि २पा २म २ग

गदा पदम गरुड़ पोष मृगपद सोहे मोहे जगतनी

२रे २सा २ग २म २पा २ध २नि २पा २म २ग २रे २सा

न भक्त परवीन रहित वाकी चित वन न्यारीरी ॥

२म २पा २नि ३सा ३ग ३रे ३सा २नि २ध २पा २म २ग

मुनी गुनी ढूंढत मिल्यो कहूं ना अति अनन्त री

२रे २सा १नि १पा १नि २सा २रे २ग २म २पा २नि २पा

न पाल भगवंत होते कृपाल आधीन नंदनके

२म २ग २रे २सा २म २ग २रे २सा

प्रगट भये सुंदर सुगारीरी ॥ इति श्रीभोगः ॥

राग श्रीकरा भरन ध्रुवपद विस्त ताल चार ॥४॥

२नि २धृ २म २ग २रे २सा ।नि ।धृ ।नि २सा २ग २म

स्याम रूप अति अनूप भमा धनुष नेत्र विशाल ।

२धृ २नि २प २धृ २म २ग २रे २सा ।नि २सा ३सा २नि

ग्रीवा कपोत विवक रूप मानु अधर विद्रुम·

२धृ २म २ग २रे २म २ग २रे २सा

नाशिक शुक गल सोहे बन माल ॥ इति अस्थाई·

२म २धृ २नि २सा ३ग ३रे ३सा २नि २प २धृ २म २ग

उर भृगुपद जोके देखि सोत गद गद कमल ना

२रे २सा ।नि ।धृ ।नि २सा २ग २म २धृ २नि २प

भ प्रगट जातें ब्रह्मा उत्पत भयो भजे सेज सैन ।

२धृ २म २ग २रे २सा ।नि २सा २ग २रे २सा

कियो रमा पगन लसत लस हो निराल ॥ इति

रा॰ श्वेतरा ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुंडल शोभ च

श्रो॰ भ॰ क्र गदा पद्म कर शोभित पीत पट कट गरुड

वाहन करुणा निध दियाल ॥ जगत भगत वा

की करत रक्षित दिन रैन पाप कटन देत चैन॰

ऐसे आधीन के प्रभु कृपानाथ कृपाल ॥ इत्याभो

गः ॥ इति श्रीकराभवनरागस्य विलम्परिच्छेदः ॥

अथ शंकराभरन रागस्य दशावर परिछेदमाह

२नि २ध २ग २रे २सं

ध्रुवपद ताल चार ॥ जो के मन लगी लगन प

१नि १ध १नि २सं २ग २म २ध २नि २ध २म २ग २रे २सं

रसवे कौ तिहारे चरण सत्य रूप गोपाल प्रेम व

२ग २म २ग २रे २ध २म २ग २रे २सं

त्सल प्रगट भयो श्री परमेश्वर रामजू ॥ इति

२म २ध २नि ३सं ३ग ३म ३ग ३रे ३सं

अस्थायी ॥ प्रह्लाद हूंने करी भक्त जानत हैं सर्व

२नि २ध २म २ग २रे २सं १नि १ध १नि २सं २ग २म

जगत हिरण्यकश्यप वेग प्रान मारौ जो भग

रा॰ 

२ध २नि २ध २म २ग २रे २म २ग २रे २सा
वान दास के तो रावे प्राण जप्यो तेरो नामजू ॥

शो॰ भ॰

२नि २ध २म २ग २रे २सा १नि १ध
इति श्रेतरा ॥ बिभीषण को बनी भीर राम रूपदि

१नि २सा २ग २म २ध २नि २ध २म २ग
यो थी रावण पुकार लोकन की हरी पीरवाली

२रे २सा २म २ग २म २ध २नि २ध २म २ग २रे २सा १नि
हन्यो मार तीर सुग्रीव सों बनाये बीर विप्र पूत

१ध १नि २सा २म २ग २रे २सा २म २ध २नि ३सा
जवायो नारायण बल रामजू ॥ ऐसे प्रभुजीउ

३ग ३म ३ग ३रे ३सा २नि २ध २म २ग २रे
दार दीन हेत धर्यो अवतार मछ कछ वारा

२ग २म २प २ध २प २म २ग २रे २सं

दियाल प्रभु आधीन देव भास्कर ॥ इति आभोगः

राग शंकराभरन ध्रुवपद सूर्य ताल चार ॥ ४ ॥

१नि १प १नि २सं २ग २म २प २नि २प २म २ग २म

जगत उजार निसार तिमिर निवारन को प्रभुमा

२प २म २ग २रे २ग २रे २सं

न लोक माही रवि रूप बन आयो है ॥ इति स्था

२म २प २नि ३सं ३ग ३म ३ग ३रे ३सं २नि २प २म

यी ॥ रक्त वर्ण विशाल मूर्ति रत्न कुंडल शोभि

२ग २रे २सं १नि १प १नि २सं २ग २म २प २नि २प

त करण पीत पट कट दीन हूके उःख हरणवे

२म २ग २रे २सां १नि १प १नि २सां २ग

रा० द श्यामलर गायो है ॥ इति अन्तरा ॥ करम मे प्रधान

२म २ध २नि २प २म २ग २रे २म २प २ग

थो० भ० श्रौर धरम के निशान जान पाप को जो बान मार

२रे २ध २म २ग २रे २सां २म २प २नि ३सां ३ग ३म ३ग

मूलतें गवायो है ॥ सुर नर मुनी गुणी ज्ञानी श्रौ

२रे ३सां २नि २प २म २ग २रे २सां १नि १प १नि

र ध्यानी सिद्ध जंगम जती संन्यासी कर जोर वि॰

२सां २ग २म २नि २प २म २ग २रे २प २म २ग

नती करत तीन लोक आधीन के स्वामी सूरज॰

२रे २म २ग २रे २सां

को जश छायो है ॥ इति सूर्यपरिछेदः समाप्तः ॥

अथ भैरवाभरन रागस्य स्वर्य परिछेदमाह ध्रु

वपद ताल चार ॥ मेरे मन भावन गावन सब

लोक मिटत जो देह रोग पालत पशूपंछी इ

छा पूरण करत नारी नरकी श्री दिनकर ॥

इति अस्थाई ॥ दूर करे हैं अंधकार कश्यप ऋष

को उलार सबहे को सिर ताज सर्व जगत केश्र

रा॰
श्री॰ भ॰

२प २ध २म २ग २रे २सा २ग २म। २ध २म २ग २रे २सा
थार प्रत्यक्ष दरश देत रहित आपनो प्रकाशक

।२नि २ध २म २ग २रे २सा १नि १ध
र ।। इति श्रेतरा ।। करमके निगेबान बेदशास्त्र॰

२नि २सा २ग २म २ध २नि २ध २म। २ग २रे २सा २ग २म
कीयो खान पुजिनतहैं ग्यानबान सुयाहूंकी खो॰

२ध २नि २ध ।२म २ग २म २ग २रे २सा २म। २ध २नि ३सा
न जात रक्षक बरण पीतोबरधर ।। जौ जौ मांगत

३ग ३म ।३ग ३रे ३सा २नि २ध २म २ग २रे २सा १नि
सो सो देत देत लेत खबर करत महराव चतर

१ध ।१नि २सा २ग २म २ध २नि २ध २म २ग २रे। २सा
की भरत जो पोषण हरत दुःख दीननके पसे

अथ शंकराभरन रागस्य शिव परिछेद माहात्म्य

२म २प २नि २ध २प २म २ग २रे

चपट ताल चार ॥ भवानी शंकर मो भंजन स

२सं १नि २सं २म २ग २रे २सं

ब स्वरूप गिरिजा पति महेश ॥ इति अस्थाई ॥

२म २प २नि ३सं २ग २रे ३सं २नि २ध २प

आक्क यतवेदी भेट जो लेत सदा शिव काटत

२म २ग २म २ग २रे २सं २म २प २नि

सब जन के कलेश ॥ इति अन्तरा ॥ नर नारी

२ध २प २म २ग २रे २सं १नि २सं २ग २म २प २म २ग

और यक्ष किन्नर गंधर्व विद्याधर पूजित रंक

रा॰ नरेश ॥ जंगम जोगी तपी सन्यासी मानत विरं

ध्रु॰ क॰ च देव दानव मम लोक चौदे भवन आधीनकेश

भकों सुमिरत महेश ॥ इति आभोगः ॥ रागश्री

कराभरन ध्रुवपद शिव ताल चार ॥ सदा सव

दीजो भवानी शंकर कैलास वासी गंगाधर ॥ ❖

इति अस्थाई ॥ सुर नर मुनी गुनी धरत ध्यानजो

करत क्रीडा ध्यान शिव ध्रुव नाशी हरी हर ॥ इति
श्रेतरा ॥ आगम निगम पुरान बेद बि खान पार
न पान तेरो भरम रहे सब ध्यान कर कर ॥ योगी
न पीश्वर सिद्धरे निर्वाण पद पावत सभी एजि
न तोहे आधीन हो परबीन भोले नाथ शिवशे
कर ॥ इति आभोगः ॥ ❖ ॥ इति श्रीकरामण

रा॰ रागस्य शिवपरिछेदः समाप्तः शुभमस्तु ॥
शु॰ भ॰ ॥ ❖ ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

प्रकीर्णविधिः। बिहागीनैवकेदारा पूरियामिश्रि
तेयदि शंकराख्यस्तदात्तेयो राग्रोगाते प्रयुज्यते·
षड्जांशश्चैवसंपूर्णो क्वचित्षाडवईरितः। अथ
शंकरराग साधनम्। ॐ अस्य श्रीशंकररागमं
त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप् छंदः ब्रह्मादेवता।
शंबीजं मनोकामना सिद्धये शंकर् राग जपे
विनियोगः। अथन्यासः। ॐ शं शं अंगुष्ठाभ्यांनमः प
वं हृदयादिन्यासं सर्वं कुर्यात्। अथ शंकररागध्या

घो॰
रा॰

नम। व्याघ्रोवरोधूम्रजनदद्यान त्रिशूलपाणिस्त्व
नेगमूर्त्तिः गंगाधरोध्याननिमग्नचित्तो दिगंबरः श्री
करभणिनागः॥ इतिध्यानम॥ अथशंकरानागपूज
नम। आसनं। पाद्यं। अर्घ्यं आचमनीयं। शुद्धस्नानं।
अनुलेपनं। गंधं। अक्षतं। पुष्पं। धूपं। दीपं। कर्पूरं॰
वस्त्र दक्षिणा। नैवेद्यं। बलिंदद्यात। प्रदक्षिणा। पु
नराचमनीयम। माल्यागप्रणामः षोडशोपचारैः॰
सर्वैपूजनेकुर्यात॥ अथनागजपनमंत्रः॥ ओंश्रीश्री

२सं १नि १प १नि २सं | २ग २म २प २नि २प २म २ग

ह नरसिंह वामन परशुराम रामकृल बौद्ध ।

२रे २सं २म २प | २नि २प २म २ग २रे २ग

निष्कलंक स्वाधीन जैसे रेक निस्त्रतारेगे हरि

२रे २सं

नामज्नु ॥ ❖ ॥ इति स्वाभोगः ॥ ❖ ॥

इति श्रीकरा भरन रागस्य दशावतार परि

छेदः समाप्तः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

❖ ॥ ❖ ॥ ❖

रा॰
पु॰ भ॰

कुसुमचन्द्र संरक्षी
२६०

नं॰ ३८ मेघराग

१९

२

१ कार्य ८२

अथ रागिनी गुणकली महिमाख्यपरिछेदमाह ॥

तालगीत ॥ महिम्नः पारंते परम विदुषो यद्य सदृ
शी । स्तुतिर्ब्रह्मा दीना मपि तद वसन्ना स्त्वयिगिरः
अथा वाच्यः सर्वः स्वमति परिणामा वधिगृणन्
मम प्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः १ अतीतः
पंथानं तवच महिमा वाङ्मनसयोः । अतद्व्या वृ

रा·गु
म

म्याये वकिन मभिथने स्कनिरवि ॥ सकस्यलो
नवः कति विय उत्पः कस्य ट्विषयः ॥ पदेनवी
बीने पनति नमनः कस्य नवकः ॥ २ ॥ मधुस्
फीना वावः परम मम्रते निर्मिन वन ॥ स्लव
बस्मन् किंवा गमि स्वर् गुरोर्विस्मय पदम्
॥ मम नेत्रे वाणी उत्प क ॥

म

यत ज्ञापेन भवतः ॥ एनामी नार्थैस्मिन् ११ मयत
बुद्धिर्भवसिता २ नवै चर्ये यतज्जगाड्दय रदा
बलय कृत त्रयी वस्त यस्के तिस्दष्ठ गगा भिन्ना
स्तनुष ॥ प्रभयाना मस्मिन् वर दवमणोया
मर मणी ॥ विहंन्ते या कोर्षे विदयन इहैके
जड यिपः ४ किमीहः किंकायः सर्वलोकि

रा॰ गु॰
म

खपायस्त्रिभुवनम् ॥ किमाधारो धाता सृजति
किमुपादान इति च ॥ अतर्क्यै स्वर्य्यैन त्वयन व
सर दुस्थो हत धियः ॥ कुतर्कोयं कांश्चि
न् मुखर यति मोहाय जगता ॥ ५ ॥ अज
न्मानो लोकाः किम वय ववेनोपि जगता
मधिष्ठा तारं किं भव विधि रना दृत्य ॥

म
२
2

भवति अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥ ६ ॥ त्र
यी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति ॥ प्र
भिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ॥ रुची
नां वैचित्र्याद् ऋजुकुटिल नानापथजुषां । नृणा
मेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ७ महोक्षः

रा॰गु॰
म॰

खट्वाङ्गं परशु रजिनं भस्म फणिनः। कपालं चेतीय
त्तव वरद तन्त्रोप करणं। सुरास्तां तामृद्धिं दधति
तु भवद्भ्रू प्रणि हितां। न हि स्वात्मारामं विषयमृ
गतृष्णा भ्रमयति ८ ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमप
रस्त्व ध्रुव मिदं। परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति
व्यस्त विषये। समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन तैर्विस्मि

नश्व ल्लवन जिरु मितो नावेल नन हृष्टा मखर

ना ९ नवै स्वर्यै यन्नाघड परि विरिंचो हरिरथः

परि छेतं याना वनल मनल स्कंथ वश्रकः। ननो

भक्ति श्रद्धा भव गरु गदमाञ्यो गिरिशायन। स्वयं

नस्य माभ्यो नव किमन हृमिर्न फलकिनि १० श्रयन्ना

दा साय त्रिभुवन मवैरि ख्यातिकरं। दशाम्सोयद्वाहू

रा॰ गु॰
म॰

नभृत रणकंडू परवशान्। शिरःपद्म श्रेणी रचित
चरणांभो रुहबलेः। स्थिरायास्त्वद्भक्ते स्त्रिपुर हर
विस्फूर्जितमिदं॥ अमुष्य त्वत्सेवा समधिगतसारं
भुजवनं। बलात्कैलासेपि त्वदधिवसतौ विक्रमय
तः। अलभ्या पाताले प्यलसचलितांगुष्ठशिरसि। प्र
तिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः॥ यदृद्धिं

सत्त्वामणो वरद परमैश्वर्य रपि सत्री । मधुसृके वागाः

परिजन विधेय त्रिभुवनः । ननश्चिवे तस्मिन्नविव

सित रविवृवगाये । नकस्य पुत्रवैर्य भवति शिर

सकृपाव नति ३ अकोड वलोड तव चकिन टे

वासृव कृपा । विधेयस्य सौघ स्त्रिनयन विथं सहस

वनः । सकल्माषः केटे नवन अरुनेन श्रियमस्रो । वि

ग.पु
म.

कारोपिस्लाघ्यो भुवन भयभंग व्यसनिनः १४ असि
द्धार्थीनैव क्वचिदपि सदेवा स्वरनरे। निवर्त्तन्ते नित्यंजग
न्ति जयिनो यस्य विशिखाः। सपश्यन्नीशत्वा मितर
स्वरसाधारणमभून। स्मरः स्मर्त्तव्यात्मा नहि वशि
षु पथ्यः परिभवः १५ मही पादाघाताद्व्रजति सह
सा संशयपदं ॥ पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुज परिघरु

ग्णग्रहगणं । मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडि
ततटा । जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता
१६ वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः ।
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ॥ जगद्द्वी
पाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि । त्यनेनैवोन्नेयं
धृतमहिम दिव्यं तव वपुः १७ रथः क्षोणी यन्ता श

गी·गो·
म·

न यृति रगैहो घनरघो। रथांगे वेदाकौं रघवरण

पाणिः शारइति। दियदोले कोयेत्रिशुर तणमाडेब

र विधि। विंयैयेः क्रीडेमो नावल परवेगः प्रभ

यियः ९८ हरिले साइसे कमल वलि मादाय प

दयो। यिंदे कोने नखिस्त्रिज मद रुवत्नेत्र कमलं।

गनो भनतुद्धेकः परिण निमसीवककवशघा ॥ त्रया

ोारतायै विश्रर हरजागानिजगाते ४९ क्रतौखवे

ज्ञायनवमसि फल योगे क्रव मते । क्रकर्म प्रधत्ते

फलति प्रकषा रायन मते ॥ प्रतस्था संपेद्य क्रत

प्र फल दान प्रति भवे ॥ क्रतौ प्रहो वधो दफ प

रिकरः कर्मव्रजनः ४ क्रियादहोदनः क्रत्वपति

रथीशसनमता । मषीणा मार्निजे शरणाद सदसाः

गा·त्र·
म·

हरगणाः । क्रत्वः अंशमानवनः क्रतश्च फल दानकाम

निनो । प्रसवकर्त्रीः श्रद्धा विधुर मभिवारा यद्दिमत्वोः

॥ अजा नाथ्य नाथ प्रभम मभिकेस्वो ऽहनिनं । गांगेरे

हिन्नतो रिरमयिष मत्यस्य वषणा । यत्तुष्णागिर्यानेदि

वमपि मयदा हननमसे । यसेनने याणि व्यन लिन मर

गाम्या यरमसः ॥ स्वलावाणा घोसा घृन यत्रव

मह्नाय तृणवत् । पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पु

ष्पायुधमपि । यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्ध

घटना । दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥ २३

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा । श्चि

ताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी परिकरः । अमं

गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं । तथापि स्म

रा॰ग्र॰
म॰

स्तोत्रे वरद परमे मंगलमसि ४४ मनः प्रत्यक्चित्ते स
विधमवधायात्तमरुतः। प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदस
लिलोत्संगितदृशः। यदालोकाह्लादे हृदयवनि
मज्यामृतमये। दधत्यंतस्तत्वं किमपि यमिनस्त
त्किल भवान् ४५ त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवन
स्त्वं हुतवहस्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमव धरणि रात्मा।

न्वमिनिव । परिक्लिना मेवं नयि परिणतो विश्रव
गिये । नविस्मृतनने वयमिह हृदि यवे नभवस्मि २६
ग्रेगी निस्ते हृनी स्त्रिभवन मयोगी नपिहरा ॥ न
कागयेवेगी स्त्रिभिरभि दयनीगाविक्कति । नरीये
नेयामध्यनिभिर वर्हेयान मणाभिः । समस्त ख्य
स्तेगेवा मारणादरणाणाम्पो मिनिपदं २७ भवःशावी

गा॰ गु॰
म॰

रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां । स्तथा भीमेशाना
विति यदभिधानाष्टकमिदं । अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रवि
चरति देव श्रुतिरपि । प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहित
नमस्योस्मि भवति । वषष्ठाङ्गर्भीवादन्वमिनिदं
जन्मानिश्चा । शरीरे नैवाहं कृतिरपि भवेते प्रणत
वान ॥ नमस्कारः सेप्रभ्यननरहं मनेप्रे ध्यनति

मान। महेशलैंनक्षो नदिद मणराय हृदयमस्ति २९

नमोनेदिक्षाय श्रियद वद विक्षायव नमो। नमः

नोदिक्षाय स्मर हर मदिक्षा यवनमो। नमो वर्क्षिक्षा

य विन यनय विक्षायव नमो। नमः सर्वस्मैनेनदि

दमनि मकीयवनमः ३ वडल स्तमे विक्षोन्मनेभ

वाय नमोनमः। प्रबल नमस्ते नमो हारे हृदायनमो

नमः । जनसुखकृते सत्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः ।

प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ३१ कृश

परिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं । क्व च तव गुणसी

मोल्लंघिनी शश्वदृद्धिः । इति चकितममंदीकृत्य मां

भक्तिराधाद्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारं ३२ अ

सित गिरि समं स्यात्कज्जलं सिंधुपात्रे । सुरतरु वर

शाखा लेखिनी पत्र मुर्वी लिखति यदि गृहीत्वा शा
रदा सर्वकाले । तदपि तव गुणानामीश पारं न या
ति ३३ असुरसुरमुनींद्रै रचितस्येंदुमौले । ग्रथित
गुण महिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य । सकलगणवरि
ष्ठः पुष्पदंताभिधानो । रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमे
तच्चकार ३४ अहरहरनवद्ये धूर्जटे स्तोत्रमेतत् । प

ठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः स भवति शिव
लोके रुद्रतुल्यस्तदात्र प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्ति
मांश्च ३५ दीक्षादानं तपस्तीर्थं होमयागादिकाः क्रि
याः ॥ महिम्नः स्तव पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशी
म् ॥ महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परं ३६ कुसु

म दशन नाम्ना सर्व्वगंधर्व्वराजः । शिशयर्व्वर्म्मौ
लैर्द्देव देवस्य दासः । स्वतह निज महिम्नो अरूपवा
स्पेरोघान् । स्तवन मिदम काषी दिव्यादिव्यै महिम्नः
श्ठ स्तवरत्नमिति एवं स्वर्गे भोलैक हेत्ने । पदति
धरिमन्नख्यः अंजलिनीम्रचेताः । व्रजति शिव
समीपं किन्नरैः स्तूयमानः । स्तवन मिदममो

ते कृष्णदेव भणीते ३५ श्रीकृष्णदेव सबद पंकज
निर्गतेन स्तोत्रेण किल्विष हरेण हर प्रियेण ॥
कंठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितेनो भ
वति भक्तपतिर्महेशः ॥ ५ ॥ इति रागिनी
गुण कलौ महिमाख्यः पाठः परिच्छेदः समा
मः ॥ शुभमस्तु भूयात् ॥ ५ ॥ श्रीशिव

ॐ अथ महिमाख्य परिच्छेदः रागिनी टोडी ता
ल ।। महिम्नः पारं ते परम विदुषो यद्य सद
शी स्तुति ब्रह्मादीना मपि तद वसन्ना स्त्वयि गिरः
अथा वाच्यः सर्वाः स्वमति परिणामा वधि गृणन्
ममा प्येष स्तोत्रे हर निर पवादः परि करः ।।१।। अ
तीतः पंथानं तव स महिमा वाङ्मन सयो स्तद्वा

रा·टी·

वृत्यायं चकित मऽभिधत्ते श्रुति रपि सकस्य स्तो
तव्यः कतिविध गुणः कस्य विषयः पदे त्वर्वाची
ने पतति नमनः कस्य नवचः ।२। मधुस्फीता वाचः
परम ममृतं निर्मित वत स्तव ब्रह्मन् किंवा गपि
सुरगुरो विस्मय पदं मम त्वेतां वाणीं गुण कथ
न पुण्येन भवतः पुना मीत्यर्थे स्मिन्पुरमथन

म
१

त्रुडि बीव सिना ।३। तवै श्वर्य्ये य त्र जग उदय रक्षा

प्रलय कृत त्रयी वस्तु व्यस्तं तिसृषु गुण भिन्ना

सुतनुषु अभव्याना मस्मिन् वरद रमणीया मर

मणीं विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः

।४। किमीहः किं कायः स खलु कि मुपाय स्त्रिभुव

नं किमाधारो धाता सृजति किमु पादान इतिच

म.टी.

अतर्क्यैश्वर्य्ये त्वय्यनवसर विधुरो हतधियः कुत
र्कोयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतो ॥५॥ अज
न्मानो लोकाः किमवयववंतोपि जगतामधिष्ठा-
तारं किं भवविधिरनादृत्य भवति अनीशो वा कु-
र्य्याद्भुवनजनने कः परिकरो यतो मंदास्त्वां प्रत्य
मरवर संशेरत इमे ॥६॥ त्रयी सांख्यं योगः पशुप

ति मतं वैस्नव मिति प्रभिन्ने प्रस्थाने पर मिद मदः

पथ्य मिति च रुचीनां वै चित्र्या दृजु कुटिल नाना

पथ जुषां नृणा मेको गम्य स्त्व मसि पयसा मर्ण

व इव ७ महोक्षः खट्वांगं परशु रजिनं भस्म

फणिनः कपालं चे तीय तव वरद तंत्रोप करणं

सुरास्तांता मृद्धिं दधति तु भव भ्रू प्रनि हितां न

रा·टी·

हि स्वात्मा रामे विषय मृग तृष्णा भ्रमयति ।८। अवं
कश्चि त्वं वै सकल मपदस्त्व अव मिदं पदो श्रौवा
श्रौवे जगति गदति यस्त विषये सम स्नेहे तस्मि
स्तव मथन तैर्विस्मित इव त्वं जिह्रेमि त्वां न खलु
नत दृष्ट्वा स्मर्तुरता ।९। तवै श्रवर्ध्वि यत्ना यत्तु परि
विरंचो हृति रथः परिक्लेत्ते याना वनल मनल स्के

य वपुषः ततो भक्ति श्रद्धा भर गुरु गृणद्भ्यां गिरिश
यत् स्वयं तस्थे ताभ्यां तव कि मनुवृत्ति र्न फलति
१०। अयत्ना दासाद्य त्रिभुवन मवैर व्यतिकरं दशास्यो
यद्बाहू नभृत रण कंडू पर वशान् शिरः पद्म श्रेणी
रचित चरणांभो रुहबलेः स्थिरायास्त्वद्भक्ते स्त्रिपुर
विस्फूर्जित मिदम् ॥११॥ अमुष्य त्वत्सेवा समधि गत

रा॰टी॰ सारंभज वनं वला क्कैलासेपि त्व दपि वसतौ विक्र
म यतः अलभ्या पाताले प्यलस चलितां गुष्ट शिर
सि प्रतिष्टा त्वय्या सी द्भव मुप चितो मुह्यति खलः
॥१२॥ यद्दद्धिं सूत्रामणो वरद परमो द्वै रपि सतो मधु
श्चक्रे वाणः परि जन विधेय त्रिभुवनः न त च्चित्रं
तस्मि न्वरिवसि तरि त्व च्चरणयो र्नकस्या प्युन्नत्यै

भवति शिरस स्त्वय्य वनति ।।१३।। अकांड ब्रह्मांड ।

क्षय चकित देवा सुरकृपा विधे यस्या सीद्य स्त्रिन

यन विषं सं हृत वतः सकल्माषः कंठे तवन कु

रुते न श्रिय महो विकारो पि श्लाघ्यो भुवन भय

भंग व्यसनिनः ।।१४।। असिद्धार्था नैव क्वचि दपि

सदेवा सुर नरे निवर्तंते नित्यं जगति जयिनो य

म·टो·

स्य विशिखाः सपश्यन्नीश त्वा मितर सुर साधार

ण मभूत स्मरः स्मर्त्तव्यात्मा नहि व शिषु पथ्यः प

रिभवः १५ मही पादा घाता द्व्रजति सहसा संशय

पदं पदं विष्णो र्भ्राम्य द्भुजपरिघ रुग्ण ग्रह गणं मुहु

र्द्यौ र्दौस्थ्यं यात्यनि भृत जटा ताडित तटा जगद्रक्षा

यै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥१६॥ वियद्व्यापी ता

रा गणा गुणित फेनो द्गम रुचिः प्रवाहो वारां यः पृष

त लघु दृष्टः सिरसिते जगद्दीपा कारं जलधि वा

लयं तेन कृत मि त्यने नैवो न्नेयं धृत महिम दिव्यं

तव वपुः ॥१७॥ रथः क्षोणी यंता शत धृति रगेंद्रो धन

रथो रथांगे चंद्रार्कौ रथ चरण पाणि शर इति दिध

क्षोस्ते को यं त्रिपुर तृण माडंबर विधि विधेयैः क्री

रा॰टो॰

डन्त्यो न खलु पर तंत्राः प्रभुधियः ॥ १८ ॥ हरिस्ते साह
स्रं कमल बलि मादाय पदयो र्यदेकोने तस्मिन्नि
ज मुद हर न्नेत्र कमलं गतो भक्त्यु द्रेकः परि ण
ति मसौ चक्र वपुषा त्रयाणां रक्षायै त्रिपुर हर जा
गर्त्ति जगतां ॥ १९ ॥ क्रतौ स्वप्ते जाग्र त्वमसि फल योगे
क्रतु मतां क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषा राधन मृ

ते श्रुत स्त्वां संप्रेत्य कृतज्ञ फल दान प्रति भुवं स्क
न्तौ स्वङ्गं वध्वा दृढ परिकरः कर्म सज्जनः ॥२॥
क्रिया दक्षो दक्षः कृत पति रथीश स्तनु भृता स्व
धीमा मार्त्तिज्यं शारण्य द म दक्ष्याः स्वर गणाः कृत
ज्ञेशा स्त्वतः कृतज्ञ फल दान व्यम तिनो ध्रुवं कर्त्तुः
प्रज्ञा विधुर मऽभि वाराय हि सत्वाः ॥३॥ प्रजा ना

रा·टो·

थं नाथ प्रसभ मभिकं स्वां दुहि तरं गतं रोहिद्भूतां

रिर मयिषु मृष्यस्य वपुषा धनुष्पाणे र्यातं दिव म

पि स पत्रा कृत ममुं त्रसं तं तेद्यापि त्यजति न मृग

व्याध रभसः ।२।। स्वलावण्या शंसा धृत धनुष म

ह्नाय तृणवत् पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुर मथन पुष्पा

युध मपि यदि स्त्रैणं देवी यम निरत देहार्ध घट

ना दवै नित्वा मह्वा वत वरद भग्ना ध्रुव नयः ॥२३॥
श्मशानेष्वा क्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराश्चि
ता भस्मा लेपः स्रगपि न्र करोटी परिकरः अमंग
ल्यं शीलं तव भवतु नामैव मखिलं तथापि स्मर्तॄ
णां वरद परमं मंगल मसि ॥२४॥ मनः प्रत्यक्चित्ते
सविध मवधा यात्त मरुतः प्रहृष्यद्रोमाणः प्रम

रा·टी·

द सलिलोत्संगिविन हृशः यदालोक्या ह्लादं ह्रद

इव निमज्ज्या मृतमये दधत्यंत स्तत्त्वं किमपि यम

न स्त त्किल भवान् ।२५। त्व मर्क स्त्वं सोम स्त्वमसि

पवन स्त्वं हुत वह स्त्वमाप स्त्वं व्योम त्वमु धरणि

रात्मा त्व मितिच परिच्छिन्ना मेवं त्वयि परिणतां

विभ्रतु गिरं नविद्म स्त त्तत्त्वं वय मिह हिय त्वं न

भवसि ।२६। त्रयीं तिस्रो वृत्ती स्त्रिभुवन मथोत्रीनपि

सुरा नकाराद्यै वर्णै स्त्रिभि रभि दध त्तीर्ण विकृतिं

तुरीयंते धाम ध्वनिभि रव रुं धान मणुभिः समस्तं

व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्यो मिति पदम् ।२७। भवः

शर्वो रुद्रः पशुपति रथोग्रः सहमहां स्तथा भीमे

शाना विति यद भिधा नाष्टक मिदं अमुष्मि न्प्रत्ये

रा॰स्तो॰ कं प्रवि चरति देवा क्षाति दपि त्रिया यासैमे यात्रे प्रसि
क्षित नमस्यो स्मि भवते वप्त प्राउ भोवा दत्न मित
मिदं जन्मनि पुरा पुरारे नैवाहं कवि दपि भवंतं प्र
णतवान् नम स्कृः संप्र त्यतनु रह मग्रे प्यनति
मा न्महेशा क्षंतव्यं तदिद मपराध द्वय मपि ॥१६॥ न
मो नेदिष्टा य प्रियद वद विष्टायव नमो नमः स्तो

दिष्ठाय स्मर हर महिष्ठा यच नमो नमो वर्षिष्ठा।
य त्रिनयन यविष्ठा यच नमो नमः सर्वस्मैते तदि
द मति सर्वा यच नमो ३· बहल रजसे विश्वोत्प
त्तौ भवाय नमो नमः प्रबल तमसे तत्संहारे ह
राय नमो नमः जन सुख कृते सत्त्वो द्रिक्तौ मृडा
य नमो नमः प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय न

ग·टे·

मो नमः ॥३१॥ कृश परि णति चेताः क्लेश वश्यं क्वचेदं
क्व च तव गुण सीमो ल्लंघिनी शश्व दृद्धिः इति चकि
त ममंदी कृत्य मां भक्ति राधा द्वरद चरणयोस्ते वा
क्य पुष्पो पहारम् ॥३२॥ असित गिरि समंस्यात्कज
लं सिंधुपात्रे सुर तरु वर शाखा लेखिनी पत्र मु
र्वी लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व कालं तद

पि तव गुणगणा मीशा पारं न याति ।३३। अहरह रव

सुनींद्रै रर्चित स्येंदु मौले ग्रंथित गुण महिम्नो नि

र्गुण स्ये श्वरस्य सकल सुर वरिष्ठः पुष्पदंता भि

धानो रुचिर मलघु वृत्तैः स्तोत्र मेत च्चकार ।३४।

अहरह रनवद्यं धूर्जटे स्तोत्रमे तत् पठति परम

भक्त्या शुद्ध चित्तः पुमान्यः स भवति शिव लोके रु

म·टी·

द्रतुल्यः सदात्मा प्रचुर तर धनायुः पुत्रवान् कीर्ति
मांश्च ।३४ दीक्षादानं तप स्तीर्थं होमयागा दिकाः
क्रियाः महिम्नः स्तव पाठस्य कलां ना र्हंति षोडशीं
।३५। महेशा न्ना परो देवो महिम्नो ना परा स्तुतिः
अघोरा न्ना परो मंत्रो नास्ति तत्वं गुरो परम् ।३६।
कुसुम दशन नामा सर्व गंधर्व राजः शशि धर

वर मौले र्देव देवस्य दासः सगुरुनिज महिम्नो

भ्रष्ट एवास्य रोषात् स्तवन मिद मकार्षी दिव्य दिव्यं

महिम्नः ।३८। सुर वर मुनि पूज्यं स्वर्ग मोक्षैक हेतुं

पठति यदि मनुष्यः प्रांजलि र्नान्य चेताः व्रजति

शिव समीपं किन्नरैः स्तूयमानः स्तवन मिदममो

घं पुष्प दंत प्रणीतं ।३९। श्री पुष्प दन्त मुख पंक

रा॰ टो॰

ज निर्गतेन स्रोत्रेण किल्विष क्षरेण ज्वर प्रियेण कं

ठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भव

ति भूत पति मंत्रे श्लो: १४॥ इति रागिनी टोडी परि

छेदः ॥:

ॐ अथ महिम्न स्तव परि छेदः रागिनी भैं

रवी ताल रूपक । महिम्नः पारं ते परम वि

दुषो यद्य सदृशी । स्तुति र्ब्रह्मादीना मपि

तद वसन्ना स्त्वयि गिरः । अथा वाच्यः सर्वः

स्वमति परिणामा वधि गृणन् । मम प्ये

ष स्तोत्रे हर निर पवादः परि करः ॥१॥ अ

रा
म॰

तीतः पंथानं तव च महिमा वाङ्मनसयोर
तद्व्यावृत्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि
स कस्य स्तोतव्यः कतिविध गुणः कस्य विष
यः पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न व
चः ।२। मधुस्फीता वाचः परम ममृतं निर्मि
त वत स्तव ब्रह्मन् किंवा गपि सुरगुरो

विस्मय पदे मम नेत्रो वाणी गुण कथन
श्रणेन भवतः पुना मीत्य यै स्मिन्तरमथ
न अहि धैव सिता ।३। तवै सर्षे य त्र जग
उदय रक्षा प्रलय कृत त्रयी वस्तु यस्ले ।
निरख्नु गुण भिन्ना हतनखु ब्रभगाना म ः
स्मिन वरद रमणीया मर माणी विहंते या क्रो

ग
म॰

पेगी विदयत इहै के जडधियः ।४। किमोहः
किं कायः स खल कि मपाय त्रिभुवने कि
मायारो याता स्जति किम पादान इतिव
शतकौं स्वर्थैत यान वसर उस्यो हत धियः
कत कौयं कोश्चि न्खर यति मोहाय ज
गतो ।५। अजन्मानो लोकः कि ॥

म वय ववंतो पि जगता मधिष्ठातारं किं भ
वविधि रना हत्य भवति अनीशो वा कुर्या
द्भुवन जनने कः परि करो यतो मंदा स्त्वांप्र
त्यमर वर संशेरत इमे ।६। त्रयी सांख्यं यो
गः पशु पति मतं वैष्णव मिति प्रभिन्ने ।
प्रस्थाने पर मिद मदः पथ्य मितिच रुची

ग
म.

नां वैचित्र्या दृजु कुटिल नाना पथ जुषां नृ
णा मेको गम्य स्त्व मसि पयसा मर्णव इव ७
महोक्षः खट्वांगं परशु रजिनं भस्म फणिनः
कपालंचे तीयत् तव वरद तंत्रोप करणं सुरा
स्तां ता मृद्धिं दधति तु भवद्भ्रू प्रणिहितां न
हि स्वात्मा रामं विषय मृग तृष्णा भ्र ॥

भवति ।८। एवं कृष्ण स्तवैं सकल मपरस्य
एव मिदं परो क्षौब्धा क्षौब्ध नगाति गद्दति
वस्तुविषये सम लोपे नास्ति स्मर मथन ते
विस्मित इव सर्वं जिह्वे मितो न [illegible] खल ।
नन्द ह्लु खलरता ।९। नवे सर्व्वे यत्ना
घट्ट परि विरंचो हरि रयः परिछेते यात्ना

ग म॰

वनल मनल स्कंध वपुषः ततो भक्ति श्रद्धा
भर गुरु गृणद्भ्यां गिरिश यत् स्वयं तस्थे ॰
ताभ्यां तव किं मनुवृत्ति र्न फलति ।।१०।।अ
यत्ना दापाद्य त्रिभुवन मवैरि व्यतिकरं द ।
शास्यो यद्बाहू नभृत रण कंडू पर वशान्
शिरः पद्म श्रेणी रचित चरणांभो रुहवलेः

स्थिराया स्त्वद्भक्ते स्त्रिपुर हर विस्फूर्जित मिद
म ।११। अमुष्य त्वत्सेवा समधि गत सारंभुज
वने बला त्कैलासेपि त्व दधि वसतौ विक्रम
यतः अलभ्या पाताले प्यलस चलितां गुष्ठ
शिरसि प्रतिष्ठा त्वय्यासी द्ध्रुव मुप चितो मु
ह्यति खलः ।१२। यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद ।

रा:
म:

परमो हैं शीघ सती मधुस्रके वाणः परिजन
विधेय त्रिभुवनः न त त्रिवे तस्मि न्नरिवसि
नरि त्व च्चरणयो नेकस्मा ग्रुतसे भवति ।
ग्रिरस स्त्वया वनति १३ । श्रकोड ब्रह्मांड ।
त्रय चकित देवा स्वरूपा विधे घस्मा सीद ।
त्रिन यन विधे से हृत वतः सकलमाघः कंटे न

वन रुहने त्र स्त्रिय मशे विकारो ऽपि स्लाछ्यो
भुवन भय भंग बमलिनः ॥४॥ श्रीसिद्धार्थी
नैव कश्चि दपि सदेवा सुर नरे निवर्तते ॥
नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः सप
पुष्पन्नीशस्त्वा मितर सुर साधारण मद्भुत
स्मरः स्मरते ध्यात्मा नादि व शिक्ष पक्ष्यः परि

ग
म.

भवः १५ महीं पादाघाताद्व्रजति सहसा सं
शयपदं पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्ण
ग्रहगणं मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाता
डिततटा जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव
विभुता ।१६। वियद्व्यापी तारागणगुणित
फेनोद्गमरुचिः प्रवाहो । वारां यः ॥

यः पृषत लघु दृष्टः सिरसिते जगद्दीपा का
रे जलधि वलयं तेन कृतमि त्यने नैवो ञेयं
धृत महिम दिव्यं तव वपुः ॥१७॥ रथः क्षोणी
यंता शत धृति रगेंद्रो धनु रथो । रथांगे चं
द्राकौं रथ चरण पाणिः शर इति दिधक्ष
स्ते को यं त्रिपुर तृण माडंबर विधि विधेयैः ।

रा
म.

यैः क्रीडंत्यो न खिल पर नेत्राः प्रभुधियः ॥१८॥
हरिस्ते साहस्रं कमल बलि माधाय पदयो
र्यदेकोने तस्मि न्निज मुदहर न्नेत्र कमलं ग
तो भक्त्युद्रेकः परिणति मसौ चक्र वपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुर हर जागर्ति जगतां
॥१९॥ क्रतौ सुप्ते जाग्र । त्वम ।

स्मि फल योगे ज्ञान मतो कर्कमे थ्रथले फल
तिप्रुहवा गायन मते थन ह्नो मेप्रेय ज्ञान
षु फल दान थति भवं स्रुतौ स्वद्रो वध्वा हफ
परि करः कर्म ह्जनः ।१। क्रिया दलो दलः
ज्ञान पति रथीश ह्लन्न भूता मखीणा मा
लिंजने शरण द ह्म दश्याः ह्वर गणाः ज्ञान ।

रा
म॰

धेंश स्वन्नः कृतेषु फल दान वस निनो ऋवं॥
कर्तः श्रद्धा विधुर मनसि चाराय हि मत्वोः २१
प्रज्ञा नाथे नाथ प्रसभ मभिके स्वां ङहि तरं ग
ते रोहि इत्वा रिर मयिषु मरणस्य वपुषा पनाः॥
ष्पाणि योते दिव मपि म पञा स्तन ममे बसे ते
नेयापि त्यजति न मम व्याय रभसः ॥२२॥

स्वला वण्या शंसा धृत धनुष मह्नाय तृणव
त पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुर मथन पुष्पा युध मपि
यदि स्त्रैणं देवी यम निरत देहा र्ध घटना द
वैति त्वा मद्धा बत वरद मुग्धा युव तयः २३
श्मशाने ष्वा क्रीडा स्मर हर पिशाचाः सहच
राश्चिता भस्मा लेपः स्रगपि नृ करोटी परि करः

रा
म.

अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैव मखिलं त
थापि स्मर्त्तृणां वरद परमं मंगल मसि॥२४॥
मनः प्रत्यक्चित्ते सविध मवधा यात्त मरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमद सलिलो त्संगित दृ
शः यदालोक्याह्लादं ह्रद इव नि मज्या मृतम
ये दधत्यंत स्तत्वं किमपि यमिन स्तत्किल भवान् २५

त्व मर्क स्त्वं सोम स्त्वमसि पवन स्त्वं हुत वह

स्त्वमाप स्त्वं व्योम त्वमु धरणि रात्मा त्वमि ।

ति च परि च्छिन्ना मेवं त्वयि परिणता विभ्रत

गिरं न विद्म स्त तत्वं वय मिह हि यत्वं न भव

सि २६ त्रयीं तिस्रो वृत्ती स्त्रिभुवन मथो त्रीन

पि सुरा नकाराद्यै वर्णै स्त्रिभि रभि दध त्तीर्ण वि

ग
म.

कृतिं तुरीयंते धाम ध्वनिभि रव रुंधान मणु
भिः समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्यो मि
तिपदम् २७ भवः शर्वो रुद्रः पशुपति रथोग्रः
सहमहां स्तथा भीमे शाना विति यद भिधा
नाष्टक मिदं अमुष्मि न्प्रत्येके प्रवि चरति दे
व श्रुति रपि प्रिया यास्मै धाम्ने प्रणिहि

त नमस्तो स्मि भवते वभ्रु घ्रा ङ भीवा दन्न
मित मिदं जन्मानि ४ पुरारे नैवाहं कवि दपि
पुरा
भवंते प्रणतवान् नम स्कः सेप्र त्ततन्न
रह मत्रे प्यनतिमा न्महेश तेनवे तदिद
मपराध हय मपि ।२५। नमो नेदिष्ठा य प्रिय
द वद विष्ठायच नमो नमः सोदिष्ठाय स्मर ।

ग
म·

हर महिष्ठा यच नमो नमो वर्षिष्ठाय त्रिनय
न यविष्ठा यच नमो नमः सर्वस्मैते तदिद
मतिसर्वा यच नमो ३ः बहल रजसे विश्वोत्प
त्तौ भवाय नमो नमः प्रबल तमसे तत्संहा
रे हराय नमो नमः जन सुख कृते सत्वोद्रि
क्तौ मृडाय नमो नमः । प्रमहसि पदे ।

निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥३०॥ कृश परि
णति चेतः क्लेश वश्यं क्वचेदं क्वच तव गुण
सीमोल्लंघिनी शश्वदृद्धिः इति चकित मम
दी कृत्य मां भक्ति राधाद्वरद चरणयोस्ते वा
क्य पुष्पो पहारम् ॥३१॥ असित गिरि समं स्या
त्कज्जलं सिंधु पात्रे सुर तरु वर शाखा लेखि



२।
म.

नी पत्र मवी लिखति यदि ग्रहीता शारदा
सर्वे काले तदपि तव गुणाना मीश पारं न
याति ।३२। असुर सुर मुनीद्रै रर्चित सेंदुमौले
ग्रंथित गुण महिम्नो निर्गुण स्येश्वरस्य स।
कल गण वरिष्ठः पुष्पदंता भिधानो रुचिर।
मलघु वृत्तैः स्तोत्र मेत चकार ।३३ ॥

अहर हर नवद्यं धूर्जटे स्तोत्रमेतत पठति प
रम भक्त्या शुद्ध चित्तः पुमान्यः स भवति शि
वलोके रुद्रतुल्यः सदात्मा प्रचुर तर धनायुः
पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ।३५। दीक्षादाने तप स्ती
र्थे होमयागादिकाः क्रियाः महिम्नः स्तव
पाठस्य कलो नार्हंति षोडशीं ।३६। म॰

रा
म॰

हेशा न्ना परो देवो महिम्नो ना परा स्तुतिः
अघोरा न्ना परो मंत्रो नास्ति तत्वं गुरो परम्
।३७। कुसुम दशन नामा सर्व गंधर्व राजः श
शि धर वर मौले र्देव देवस्य दासः स्वगुरु निज
महिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात स्तवन मिद
मकार्षी दिव्य दिव्यं महिम्नः।३८। स्वर।

वर मुनि पूज्यं स्वर्ग मोक्षैक हेतुं पठति यदि

मनुष्यः प्रांजलि र्नान्य चेताः व्रजति शिव स॰

मीपं किन्नरैः स्तूयमानः स्तवन मिदममोघं

पुष्पदंत प्रणीतं ३९ । श्री पुष्प दंत मुख पंकज

निर्गतेन स्तोत्रेण किल्बिष हरेण हर प्रियेण

कंठ स्थितेन पठितेन समाहितेन । ।

रा हृष्टीगिणतो भवति भूत पति र्महेशः ।४०।

म॰ इति महिम्ना ख्य परि छेदः रागिनी सैंध

वी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ अथ महिम्न स्त्व पटि छेदः रागिनी मधुमा
धवी ताल। गीत॥ महिम्नः पारं ते परम विदु
षो यद्य सदृशी स्तुति र्ब्रह्मादीना मपि तद
वसन्ना स्त्वयि गिरः। अथा वाच्यः सर्वः
स्वमति परिणामा वधि गृणन् ममा प्ये
ष स्तोत्रे हर निर पवादः परि करः॥१॥ अ

ग॰ म॰

तीतः पंथानं तव च महिमा वाङ्मनसयो रत
द्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि सक
स्य स्तोतव्यः कतिविध गुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति नमनः कस्य नवचः
॥२॥ मधुस्फीता वाचः परम ममृतं निर्मि
त वत स्तव ब्रह्मन् किंवा गपि सुरगुरो।

विस्मय पदं मम नेत्रो वाणी गुण कथन

गुणेन भवतः पुना मोरु पैं स्मित्रमय

न बुद्धि ओव सिना ।२। नवै सर्वे य न जग

उदय रक्षा प्रलय कृत् त्रयी वस्तु व्यस्ते ।

त्रिरक्ष गुण भिन्ना सनत्रक्ष प्रभव्याना मस्मि

न् वरद रमणीया मर मणी विहंनेव्या क्रो

ग॰
म॰

शीं विदधत इहैके जडधियः ।४। किमीहः
किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं किमा
धारो धाता सृजति किमुपादान इति च अ
तर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसर दुःस्थो हतधियः
कुतर्कोयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय ज
गतो ।५। अजन्मानो लोकाः किं ।

म वय ववंतो पि जगता मधिष्ठातारं किं भव

विधि रनाहत्य भवति अनीशो वा कुर्या द्भुव।

न जनने कः परि करो यतो मंदा स्त्वांप्र त्य

मर वर संशे रत इमे ।६। त्रयी सांख्यं ।

योगः पशु पति मतं वैष्णव मिति प्रभिन्ने

प्रस्थाने पर मिद मदः पथ्य मिति च रुची

रा॰
म॰

नो वै चिन्त्या हृज्ज जटिल नाना मण्य ज्योषां न्रएणा
मेको गम्य रूव मसि पयसा मणीव इव ७ मह्ले
न्तः खिह्नोगे परस्त्र रजिने भस्म फणिनः कपा
लेचे नीय नव वरद नेत्रोप करणे स्वरास्त्रो ।
त्ता स्मृद्धि दयति न भव क्रू प्रति ह्निनो नह्नि ।
स्वात्मा रामे विषय मृग तृष्णा भ्र ॥

मयति ।८। थवे कश्चि स्तवें सकलमपास्त
थव मिदं पते थौव्ला थौव्ले जगति गदति ।
ग्रल्लविषये सम स्तोप्ये नस्लि स्वर मथन मैं
विस्मित इव स्तवें जिह्नेमि स्तो न खल ।
नतु दृष्टा सुखरता ।९। तवै स्वयं यात्रा
घड परि विरेचो हरि रथः परिक्षेत्रे यात्रा

ग॰
म॰

वनल मनल स्कंध वपुषः ततो भक्ति श्रद्धा
भर गुरु गृणद्भ्यां गिरिश यत् स्वयं तस्थे ।
ताभ्यां तव कि मनु वृत्ति र्न फलति ।१०। अ
यत्ना दासाद्य त्रिभुवन मवैरि व्यतिकरं दशा
स्यो यद्बाहू नभृत रण कंडू परवशान् शिरः
पद्म श्रेणी रचित चरणांभो रुहबलेः ॥

स्थिराया भक्तेस्त्रिपुर हर विस्फूर्जित मिद
म्। ११। अमुष्य त्वत्सेवा समधि गत सारंभुज
वनं बलात्कैलासेपि त्वदधि वसतौ विक्रम
यतः अलभ्या पाताले प्यलस चलिताङ्गुष्ठ
शिरसि प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुव मुप चितो मु
ह्यति खलः।।१२ यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद।

ए·
म·

परमो दैवै रपि मनी मथुस्त्रके वाणः परिजन

विधेय स्त्रिभुवनः न न स्त्रिडे नास्मि न्वरिवसि

नरि न्व स्वरणयो नैकस्मा म्नुत्रैर्न्य भवति ।

शिरस स्तव्य वनति । ५ । अकोड ब्रह्लोड ।

न्नय चकित देवा सुरह्रुपा विधे यस्मा सौध स्त्रि

नयन विषे से ह्रन वनः सकलाषः केटे न

व न कुरुते न श्रिय महो विकारो पि श्लाघ्यो

भुवन भय भंग व्यसनिनः । १४ । असिद्धा

र्था नैव क्वचि दपि सदेवा सुर नरे निवर्तन्ते

नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः सप

श्यन्नीश त्वा मितर सुर साधारण मभूत्

स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि व शिषु पथ्यः परि

ग॰ भवः १५ मही पादाघाता द्व्रजति सहसा सं

म॰ शयं पदं पदं विष्णो र्भ्राम्य द्भुजपरिघ रुग्ण ग्रह

गणं मुहुर्द्यौ दौस्थ्यं यात्य निभृत जटा ताडि

त तटा जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव वि

भुता ।१६। वियद्व्यापी तारा गण गुणि

त फेनो द्गम रुचिः प्रवाहो वारां ॥

यः एषत लघु दृष्टः सिरसिते जगद्वीपा का
रं जलधि वलयं तेन कृत मि त्यने नैवो न्नेयं।
धृत महिम दिव्यं तव वपुः ।७। रथः क्षो।
णी यंता शत धृति रगेंद्रो धनु रथो रथांगे
चंद्राकौं रथ चरण पाणि शर इति दिधक्षो।
स्ते को यं त्रिपुर तृण माडंबर विधि विधे

ग॰ यैः क्रीडंन्तो न खल पर नेत्राः प्रभुधियः । ८ ।
म॰ हरिस्ते साहस्रं कमल बलि माधाय पदयो यं
दे कोने तस्मि न्निज मुद हर न्नेत्र कमलं ग
तो भक्त्युद्रेकः परि णति मसौ चक्र वपु
षा त्रयाणां रक्षायै त्रिपुर हर जागर्ति ।
जगतां । ९ । क्रतौ सुप्ते जाग्र त्त्वम ।

सि फल योगे क्रन मतो क्रकर्म प्रथमे फल
ति पुरुषा राथन मते श्रन स्वो संप्रेदा क्रन
षु फल दान प्रति भुवे म्फजौ श्रद्धो बध्वा हफ
यरि करः कर्म सजनः । २ । क्रिया दत्तो द
त्तः क्रन पति रथीश स्तज म्हना स्वषीण मा
त्रिज्ये शरण द स दस्पाः स्वर गणाः क्रन ।

ग॰ म॰

श्रेष्ठा स्नानः कलश फल दान ध्यास निनो अवे
कर्मैः श्रद्धा विप्र मं॰भि चाराय हि मव्रोः २१
श्रद्धा नाथे नाथ प्रसभ मभिके स्रो उहि नरेग
ने रोहि ह्रनो गिर मयिष्ठ सख्यस्य वपुषा यत्नुषा
णे यीते हिव मपि स पत्रा कृत मक्षे चसे नेते
यापि रुजति न स्नुगध्याय रमसः । २२ ।

स्वला वण्या शंसा धृत धनुष मह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुर मथन पुष्पा युध मपि य
दि स्त्रैणं देवी यम निरत देहार्ध घटना दवै
तित्वा मद्धा वत वरद मुग्धा युव तयः २३ श्म
शाने ष्वा क्रीडा स्मर हर पिशाचाः सह चरा
श्चिता भस्मा लेपः स्रगपि नृ करोटी परिकरः

ग. अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैव मखिलं त

म. थापि स्मर्त्तृणां वरद परमं मंगल मसि ।२४।

मनः प्रत्यक्चित्ते सविध मवधा यात्त मरुतः

प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमद सलिलो त्संगित दृशः

यदालोक्या ह्लादं ह्रद इव नि मज्ज्या मृतमये

दधत्यन्त स्तत्वं किमपि यमिन स्तत्किल भवान २५

त्व मर्क स्त्वं सोम स्त्वमसि पवन स्त्वं हुत व

ह स्त्वमाप स्त्वं व्योम स्त्वमुधरणि रात्मा त्व मि

तिच परिछिन्ना मेवं त्वयि परिणता विभ्रतु गि

रं नविद्म स्त त्वं वय मिह हियत्वं न भवसि

२६ त्रयीं तिस्रो वृत्ती स्त्रिभुवन मथो त्री नपि

सुरा नकाराद्यै र्वर्णै स्त्रिभि रपि दध त्तीर्ण वि

ग॰ म॰

कृति तुरीयंते धाम ध्वनिभि रव रुंधान मणु
भिः समस्ते वस्ते त्वों शरणद गृणात्यो मिति
पदम् २८ भवः शर्वो रुद्रः पशुपति रथोग्रः
सहमहा स्तथा भीमे शाना विति यद भिधा
ना एक मिदं अमुष्मि न्प्रत्येके प्रवि चरति दे
वा श्रुति रपि प्रिया यास्मै धाम्ने प्रणिहि।

त नमस्यो ऽस्मि भवते वत्तु ष्टा उ भीवा दत्तु सि

त मिदं जन्मनि प्रुवा प्रुवारे नैवाहं कश्चिदपि

भवंते प्रणतवान् नम न्मस्कः सेत्र त्वपत्तु र

ह मध्ये प्यनतिमा न्महेश क्षंतव्ये तदिद मप

राध हृय मपि । २९ । नमो नेदिष्टाय प्रियद ।

वद विष्टायच नमो नमः क्षोदिष्टाय स्मर ।

ग॰ हर महिषा यच नमो नमो वर्षिष्टाय त्रिनयन

म॰ यविष्टा यच नमो नमः सर्वस्मैनेन नद्दिद मति

सर्वा यच नमो ३॰ बहल रजसे विस्वोत्पतौ

भवाय नमो नमः प्रबल नमसे तन्सेहारे ।

हराय नमो नमः जन सुखकृते सत्वो

द्रिक्तौ मृडाय नमो नमः प्रमहसि पदे

निस्त्रैगुण्याय शिवाय नमो नमः ३१ कृश परि
णति चेतः क्लेश वश्यं क्वचेदं क्वच तव गुण
सीमो ल्लंघिनी शश्व दृद्धिः इति चकित ममं
दी कृत्य मां भक्ति राधा द्वरद चरणयोस्ते वा
क्य पुष्पो पहारम् । ३२ । असित गिरि समं
स्या त्कज्जलं सिन्धुपात्रे सुर तरु वर शाखा ।

ग. म.

लेखिनी पत्र मुर्वी लिखति यदि गृहीत्वा शार
दा सर्व काले तदपि तव गुणाना मीश पारे न
याति । ३३ । असुर सुर मुनींद्रै रर्चित सेंदुमौले
र्ग्रथित गुण महिम्नो निर्गुण से श्वरस्य स
कल सुर वरिष्टः पुष्पदंता भिधानो रुचि
र मलघु वृत्तैः स्तोत्र मेत च्चकार । ३४ ।

अहर हर नवद्यं धूर्जटे स्तोत्रमेतन् पठति पर।

म भक्त्या शुद्ध चित्तः पुमा न्यः स भवति शिव

लोके रुद्रतुल्यः सदात्मा प्रचुर नर धनायुः।

पुत्रवान् कीर्तिमोश्च ३५ दीक्षादाने तप स्तीर्थं

होमयागा दिकाः क्रियाः महिम्नः स्तव।

पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीं।३६। म

रा॰ म॰

हेशा न्ना परो देवो महिम्नो ना परा स्तुतिः अघो
रा न्ना परो मंत्रो नास्ति तत्वं गुरो परम् । ३७ ।
कुसुम दशन नामा सर्व गंधर्व राजः शशि धर
वर मौले देंव देवस्य दासः स्वगुरुनिज महिम्नो
भ्रष्ट एवास्य रोषात् स्तवन मिद मकार्षी ।
द्दिव्य दिव्यं महिम्नः । ३८ । स्त ॥

वर मुनि स्तुत्ये स्वर्ग मोक्षैक हेतवे पठन्ति यदि
मनुष्याः प्राञ्जलि नम्र वक्त्राः वज्रिणि शिव समी
पे किन्नरैः स्तूयमानः स्तवन मिदममोघं बुद्ध
देव प्रणीतं ३९ श्री बुद्ध दत्त मुख पंकज
निर्गतेन स्तोत्रेण किल्विष हरेण हर श्रिये
ण कंठस्थितेन पठितेन समाहितेन ।

ग.
म.

स्वर्गीगणिनो भवति भूत पति मंडे शः ॥ ४ ॥ इति
गमिनी प्रथमापदी परिछेदः ॥

अथ राग ललित गंगा लहरी परिछेद १

२सा २म २मा २प २म २मा २ग २रे
माढ़ । ताल तीन । समृद्धं सौभाग्यं सकल

२सा २म २मा २ग २रे २सा २प २म २मा २ग
वसुधायाः किमपित । न्महैश्वर्यं लीला

२मा २प २म २मा २ग २रे २सा २सा २म २मा २प
जनित जगतः खंडपरशोः । श्रुतीनां स

२म २मा २ग २रे २सा २प २म २ग २रे २सा २प
र्वस्वं सुकृत मथ मूर्तं सुमनसां । सुधा १

२म २मा २ग २रे २मा २प २म २मा २ग २रे २सा
सौंदर्यंत सलिल मशिवंनः शमयतु ॥१॥

रा
गे

विलीनोवैवैव खत नगर कोलाहल भ
रो। गता हता हर क्वचिदऽपि परेता न्त्र
गयितं। विमानानां ब्राते विदलयति वी
थी दिर्विषदां। कथा ते कल्याणी यदव
पि महीमंडल मगात २ दरिद्राणां दैन्यं
डरित मघ डर्वीमनहदां। द्रुतं हरी ऊर्वं

न्मक्ष उपगतो म्हीह मरणे । श्रपि द्धागा
विघ्न द्रुम दलन दीक्षा गुरु रिह । प्रवा
हले वारां श्रिय मय मपारां दिशतु नः ३
उदंच न्मात्सर्य्य स्फुट कपट हेरंब जन
नी । कटाक्ष व्याक्षेप क्षण जनित संक्षो
भ निवहाः । भवंतु त्विंगंतो हर शिरसि

ग
गे

गंगाः पुनरमी । तरंगाः श्रोतंगा दुरित भ
र भंगाय भवताम् ४ मह ह्लीला लोल
लहरी ललितांभोज पटल । स्खलत्यो
त्सङ्गात तरण विसर स्त्रंजम लघिः ।
खर स्त्री वक्षोजद्वार दगहजेबाल जटि
ले । जले तेजे वाले मम जननि जाले ज

र यत्र ।५। स्फुरत्काम क्रोध प्रबल रस
संजात जटिल । ज्वर ज्वाला जाल ज्वलि
त वपुषांनः प्रतिदिनं । हरंतो संतापं क
मपि मरुदुल्लास लहरी । छटाचंच त्पा
थः कण सरणयो दिव्य सरितः ।६।
विनिर्या न्त्युन्मत्तें ऽपि च परिहार्याणि

गं
गे

पतितै। रवाच्या निश्चात्यैः सपुलक मपास्य
निमिषैः। हरंती लोकाना मनवरत मे
नांसि कियन्तं। कदापि श्रान्ता न स्वामिह
पुन रेका विजयसे।। स्वलंती स्वर्लोका
द्दवनि तल शोकापहृतये। जटाजूट ग्रं
थौ यदसि विनिबद्धा पुरभिदा। प्रये नि

लोभानामपि मनसि लोभं जनयतो। गु
णानामेवायं तव जननि दोषः परिण
तः। यदान्धभाव स्वह्वानां सहज शिशिराणा म
यमपामपारे स्थले मान जगति महिमा को
पि जयति। सदायं गायंति श्रुतल मनव
य श्रुति भृतः। समामायायापि स्फुट पटक

ग
गं

सांद्रा सगरजाः। भाकृतत्वद्दाग्रौघा नयक
टिति संतप्त मनसः। समुद्धतं संति विभ
वनतले तीर्थनिवहाः। अपि प्रायश्चित्त
प्रसरण पथातीत चरिता। त्वत्त्वरी कर्त्तं
जगति खलु जागर्ति भवती ९। जडानं
धानंगूनप्यकृति वधिरा नकि विकलान्।

ग्रहयक्षा नक्षा खिल डकिन निस्तार मर
णी। निर्लिपे निर्मलका नपिच निरयान
निपतिता। त्वया नेव चाते व मिह परमे
भेषज मसि।११। निधाने यमीणां कि
मपि च विधाने नव मदो। प्रधाने नीर्थी
ना ममल परिधाने त्रिजगतः। समा

ग
गे

याने वृद्धे रथ खलितो यान मथियो। त्रि
या मायाने नः परि हरतु तापं तव वपुः।४

इदं हि ब्रह्मांडं सकल भुवना भोग भवनं।
तरंगै र्यस्यांत र्लुठति परत स्तिंदुक मिव।
स एष श्रीकंठ प्रवित त जटाजूट जटिलो।
जलानां संघात स्तव जननि पापं हरतु नः ५

नगेभ्यो यांतीनां कथय तटिनीनां कत
मया । पुराणां संहर्तुः सुरधुनि कपर्दो
धिरुरुहे । कया वा श्रीभर्तुः पद कमल
मक्षालि सलिलैः । तुलालेशो यस्यां त
व जननि दीयेत कविभिः । ४ । समुत्प
त्तिः पद्मा रमण पद पद्मा मल नखात् ।

गं
गे

निवासः कंदर्पप्रतिभटजटाजूटभवने।
गणाग्र्येयामंगो वत पतितनिस्तारणविधौ।
न कस्माडुत्कर्षः। स्तव जननि जागर्त्ति ज
गति।।५।। त्वदंते तीर्थानि त्वरितमिह य
स्योह्नति विधौ। करंकर्णौ ऊर्व्वं न्त्यपि कि
ल कपालि प्रभृतयः। इमं ते मा मम्ब।

त्व मिय मनकेपाय हृदये। घनानो मर्वे
षा मद्य मथन दर्पं दलयामि १६ सपाका
ने ग्राते ध्मित विविकित्सा विचलितै।
विंमृक्ताना मेकं किल मदन मेनः परि
घट्टं। ग्रहो मामङतं जनानि चटयंत्याः
परिकरे। नव स्माद्यो कर्तं कथ मिह मम

रा
गे

र्यो नर पशुः। १४। न कोप्येतावंतं खलु स
मय मारभ्य मिलितो। यद्द्वारा वाराङ्ग
वति जगतो विस्मयभरः। इती मामी॰
हेति मनसि चिर कालं स्थितवती। स
ये संप्राप्तोहं सफलयित्र मेव प्रणयतः १८
स्वहृति व्यासंगो नियत मथ मिथ्या प्रल

पने । अत कैश्चस्माभिः सतत परपैशून्य
मननम् । अपि आवं मम त्व पुन रेवं वि
षगुणा । नते त्वत्कोनाम त्वग्ण मपि नि
रीक्ष्येत वदनम् ॥ १९ कियंतः संत्येके नि
यत मिह लोकार्थं चटकाः । परे शता
त्मानः कतिच परलोक प्रणयिनः ।

रा
गे

वसेत्वे ते मात स्तव स्वेल हृपात: पुन र
थे। जगन्नाथ: श्राघ्व त्वयि निहित लोक
हृयभर: २ विशालाभ्या माभ्यो कि मि
हृ नय नाभ्यो स्वेल फले । नयाभ्या मा
लीफा परम रमणीया नव तन्त: । श्रये
ह्नि न्यत्कारो जननि मनुजस्य श्रवणयो ।

येयो नीतर्यात स्तव लहरि लीला कलक
लः ११ विमानैः स्वच्छंदे हर पुर मये ते ह
ह्रतिनः । पतंति द्राक्पापा जननि नर
कोतः परवशाः । विभागोयं तस्मिन्न
शुभ मय मूर्तौ जनपदे । न यत्र त्वं लीला
शमित मनुजाशेष कलुषा । १२ । अपि

ग
गे

ध्नेतो विश्वा न विरत मघेतो गुह मतीः। पिवं
तौ मैरेयं पुन रपि हरंत स्म कनँम। विज्ञाय
क
त्वध्यैते नन्न मतन्न दाना धर त्वषा। मपयैं
वक्रीडं त्यविल हर संभाविन पदाः ३३
न्तणा मीत्ना मात्रा दपि परि हरंत्या भव
भयं। श्रिवाया स्ते मूर्तैः क इह महिमाने

निगदिते। अमर्षम्लानायाः परममनुरो
धे गिरिभवे। विहाय श्रीकंठः शिरसि नि
यतं धारयति याम् २४ अलभ्यं सौरभ्यं हर
ति सततं यः सुमनसां। क्षणा देव प्रा
णा नपि विरहशास्त्रक्षतभृतां। त्वदी
यानां लीला चलित लहरीणां व्यतिक

गा
गे

गा स्मनीते सोपि द्वा गह्ह ह पवमान स्त्रिभु
वनें । २५ प्रभाते स्मातीनो न्टपति रमणी
नो ऊच नटी । चटो यावत् प्रात र्मिलति
नव तोयै र्मृग मदः । स्नाव डैमा निक
प्रात मह्स्तैः परिहता । विशंति स्वच्छन्दे
विमल वपुषो नंदन वने २६ विधतो निः

10

घोके निरवद्य समाधिं विनियुक्तो । ह्वे
घोषे घोतो हरि इविरते न्तत्यन्न हरः ।
कृते प्रायश्चित्ते रत मध्य नपो दान यज
नैः । सवित्री कामानो यदि जगति जा
गर्ति भवती २० स्मृते मद्यः स्नांते विर
च यति घांते सहृदपि । प्रगीते यत्या

गी
गो

पं झटिति भवता पंच ह्रवति। इदं तङ्गेगे
ति श्रवण रमणीयं खेल पदे। मम प्राण
प्रीते वदन कमलांत विलसत २६। क
पर्ह्वी उल्लास प्रणय मिल दङ्गेग ग्रुवतेः।
प्रगारेः प्रेंखेत्यो मङल तर सीमंत सर।
रोो। भवान्या सापत्न्य स्फुरित नयने

॥

१२

कोमल रुचा। करेण शिरसि जननि

विजयं नो लहरयः। २५। अनाथः स्नेहा

र्द्रो विगलित गति श्चापि गतिदो। पतत वि

श्चोद्धर्त्ता गद विगलितः सिद्ध भिषजे।

क्षुधा सिंधुं तृष्णा ज्वलित हृदयो मातरः

मयं। शिशुः संशापन्नला मह सिद्ध विद

ए
गे

ध्याः समवितम ३· भवत्या हि ज्ञात्वा ध
म पतित पाखंड परिषत । परित्राणस्नेहः
स्थ यित मशाक्याः खलु यथा । ममाप्ये
वं प्रेमा दुरित निवहेष्वेव जगति । स्वभा
वोःये सर्वै रपि खलु यतो दुष्पारि हरः ३१
पपद्यंते लोकाः कति न भवती मत्र भव

तौ। मणयि स्वजायं स्फुरति यदऽभीष्टं वि
तरसि। शापे त्वभ्यं मात र्ममत्व पुन रा॰
त्मा हर्षधुनि। स्वभावा देव त्व या मित
मन्त्रागं विधूतवान्॥२९॥ पयः पीत्वा मा
त स्तव सपदि यातः सह चरै। विमर्दैः
संहर्तैं कचि दपिन विश्रांति मगमम।

गी
गो

इदानी मनंगे मृदु पवन संचार शिशि
रे चिरा उन्निद्रं मां सदय हृदये स्थापय वि
रम २३। सदैव त्वय्येवाऽर्पित ऊशल वि॰
ता भरमिमे। यदि त्वं मा मेव त्यजसि स
मयेऽस्मिन्नविषमे। तदा विश्वासोयं त्रिभु
वन तलादस्त समये। निराधारा चेयं ॰

भवति खलु निर्बीज करुणा।३४। तवा

लंबा दंब स्फुरद लघु गर्वेण सहसा।

मया सर्वे वज्ञा सरणि मथ नीताः सुर

गणाः। इदानी मौदास्यं यदि भजसि

भागीरथि तथा। निराधारो हारो दिमि

कथय केषा मिह पुरः।३५। नयत्साला

ग
गे

हैदे रपि गलित भेदै स्वसितै न यस्मिन
जीवाने । भ्रमयति मनो वागव स॰
रः । निराकारं नित्यं निज महिम नि
वीक्षित तमो विशुद्धं य तत्वं सुरतटि
नि तत्वे न विषयः ३६ । मणि शज्यं राज्यं
तृण मिव परित्यज्य सहसा । विलोल॰

ज्ञानोरे नव जननीन नीरे छिनवतो । त्वया
तः स्वादीयं सलिल मिद मा तद्विपिवतां ।
जनाना मानंदः परिहसति निर्वाण पद
वी ॥ ७ प्रदोषांत नृत्य त्पुर मथन लीलो
द्धृत जटा । तटाभोग प्रेंखल्लहरि भुज सं
तान विधुति । बिलक्रोडे क्रीड ज्जल ड

गृ
गे

महटंकारस्हभगे । निरोयतेनापे त्रिदश
तटिनी तांडव विधिः ३८ धरोयावं यावं द
विण मंदिरा ह्रींतिनटधों । मह्री पानं
नाना नर नरुण खेदस्य नियतं । ममैवा
ये मंत्रः स्हक्रत धात स्हेत्र जेडयियो । वियो
ग स्हे मात यदिस्ह करुणांतः तण मापि ३९

श्रविश्रांतः जन्मा वीय सुकृत कर्मो जेन व॰
ते। सतो श्रेयः कर्ते जगति कृतिनः सेति
विधुयाः। निरस्ता लेवाना सकृत सुकृ॰
तानो न भवतो। विना श्राष्ठि होके न प
र सवलोके हित करं। ४॰ यजं तपे के देवा
न्कष्ठिन तर सेवां सत दपरे। विनात श्राम

ग
गे

क्ता यम नियम रक्ताः कतिपये । अहं त्व त
न्नाम स्मरण कृत काम स्त्रिपथगे । जग
ज्जाले जाले जननि त[illegible]जालेन सहशो धा
ललाटे या लोकै विह त्वल सलीले ति
लकिता । नमो हं त्रं पचे हर तटिनि मार्तेंड
त्वलनो । विलंपंती सघो विधि लिखित १

16

दुर्वर्णि सरणी । त्वदीया सा सत्ता मम
हरतु सन्तता मपि शुचं ४२ नरा न्मफे
ले च जनपद समासक्त मनसो । हसे
तः सोल्लासे विकच जलज व्रात मिष
तः । पुनाना सौरभ्यैः सतत मलिनो
नित्य मलिनान् । सा त्वायो नः संह त्रि

रा
गे

दश नदिनी नीर नरवः षड यदंतः खेले
ते बङ्ल नर संतोष भरिता। न काकाना
का यी षर नगरसा कोंल मनसः। नि
वासा ह्लोकानो जनि मरण शोकाप ह्र
रणे। तदे नते नीरे श्रम शामन पीरे भव
तनः। षष महादाने थीने बेङ्क विधवि

तानै रपि चय। त्वलभ्यं योगाभिः ह्विम
ल तपो राजिभि रपि। अचिंत्यं तह्विसोः
पद मखिल साधारण तया। ददाना के
नास्ति त्वमिह तुलनीया कथय नः ५५।
स्तुतिं याता प्रेमा मकृत स्वकृताना म
पिच या। हरंत्यंत स्तोङ्गं तिमिरमिव चे

गं
गे

डेष्ठ सर्वाणिः। इयंते सामूर्त्तिः सकल स
र संसेव्य सलिला। समांतः संतापं वि
विध मथ तापं च हरतो। धृत्वावधान द्वा
मेवं हरि मर मणीयं परिकरं। किरी
टे वालेंदुं निय मय पुनः पन्नगगणैः।
न ऊर्ध्वा स्वं हेला मितर जन साधारण

पिया। जगन्नाथस्याःयं सुर धुनि समुद्धा
र समयः ४७ शरच्चंद्र श्वेतां शशि शक
ल शोभाल मकुटां। करैः कुंभां भोजे
वर भय निरा शौच दधतीं। सुधा धारा
कारा भरण वसनां शुभ्र मकरे। स्थितां
त्वां ये ध्यायं त्युदयति न तेषां परि भवः ४८

ग
गे

दर स्मित स्नमस्नस वदन कांति शुभ्रामसै।
भेव ज्वलन भर्जिता न निशा मूर्जयंती न
गान्। चिदेकमय चंद्रिका चय चमत्कृ।
ति तन्वती। त्वनोत्व मम शोतनौ सपदि
शोतनो रंगना। ५५। मेरै मीलित मोब
ये मंजलिते। त्वस्ले स्नगाणां गणैः। स्न

ले माड लथा रमै विंगलितं । गाहन्मतै

ग्रेवभिः । वीचिक्षालित कालि माहित

पदे । स्वर्लोक कल्लोलिनी । त्वं पापं श

मया पुना मम भव । ज्वाला वलीकात्म

नः ५ इते नागेंद्र कृति प्रथम फणी

गण श्रेणी नदींड मव्योः । सर्वेस्वंह्राणि



ग।
गं

तां स्व मथ पुरभिदि द्राक पाणी कर्त्तुका
मे। साकूतं हैमवत्या मृडलहसितया
वीक्षिताया स्त्वंभो। व्यालोलोल्लासिव
ल्ली लहरि नव घटा। स्तांडवे नः पुनीता
म्‌ पा। विभूषिता नंग रिपू त्तमांगा। सद्यः
कृता नेक जनार्त्ति भंगा। मनोहरो त्तुंग

चल तरंगा। गंगा ममांगा न्यमली करो
तु ५२ इमां पीयूष लहरीं। जगन्नाथेन नि
र्मितां। यः पठे त्तस्य सर्वत्र जायंते जयसं
पदः। ५३। इति राग ललित गंगा लह
री परिच्छेदः ॥ ॥ ॥ ॥

रा
गं

अथ रागनी विभावती गंगालहरी परिछेदमाह ताल ३
समृद्धं सौभाग्यं सकल वसुधायाः किमपितन् । महैश्वर्यं
लीला जनित जगतः खंड परशोः । श्रुतीनां सर्वस्वं सुकृ
त मथ मूर्तं सुमनसां । सुधा सौंदर्यंते सलिलम शिवं
नः शमयतु १ दरिद्राणां दैन्यं दुरित मथ दुर्वासन हृदां
द्रुतं दूरी कुर्वन्सकृदुपगतो दृष्टिसरणीम् । अपिद्रागा

ग·लं
री·

विद्यद्रुमदलनदीक्षागुरुरिह । प्रवाहस्ते वारां श्रियमय
मपारां दिशतु नः २ उदञ्चन्मार्तण्डस्फुटकपटहेरंबजन
नी । कटाक्षव्याक्षेपक्षणजनितसंक्षोभनिवहाः । भवंतु
त्विंगंतो हरशिरसि गंगातनुभुव । स्तरंगाः प्रोत्तुंगा दुरित
भरभंगाय भवताम् ३ स्मरंति याता पुंसामकृतसुकृता
नामपि वया । हरत्यन्तस्तन्द्रां तिमिरमिव चंद्रांशुसरणिः

इयं सा ते मूर्त्तिः सकलसुरसंसेव्यसलिला । ममान्तःसंता

पं त्रिविधमपनापंच हरनाम् ४ तवालंबादंबस्फुरदल

घुगर्वेण सहसा । मया सर्वे ऽवज्ञा सरणिमपनीताः सु

रगणाः । इदानीमौदास्यं यदि भजसि भागीरथि तदा ।

निराधारो हा रोदिमि कथय केषामिह पुरः ५ अपि

प्राज्यं राज्यं तृणमिव परित्यज्य सहसा । विलोलद्वानी

गा·खे·
गे·

रे जननितनवनीरे श्रितवनाम्। स्तुयातः स्वादीपः सलि
लमिदमात्मपि पिबतो। जनानामानंदः परिहसति ति
वीणा पदवीम ६ प्रभाते स्नानीतो न्दपति रमणीनां ऊचत
टी। यातो यावन्मात मिलति नवतोयैर्मृगमदः। स्तया
स्तावद्हैमा निकशत सहस्रैः परिवृतनाः। विशंति स्वच्छंदे
विमलवपुषो नेदनवने २ स्तंनेमयः स्वान्ते विरचयति

सं
२

2

ध्याने सकृदपि । प्रगीते यस्यापं जहिति भवतापं वह्नराशि-
रदेतत्क्रोति श्रवणा रमणीयं खल पदं । मम प्राणाधीने
वदनकमलान्तर्विलसत प यदन्तःखेविंखेनो वङ्कलन
रसेनोघभरिता । नकाकानाकाधीश्वरनगरसाको
लमनसः । निवासालोकानां जनिमरणशोकापह
रणं । नदेननेतौरं श्रमशमनधीरं भवततः ५ नयन

गा खं
ने

सान्द्राह्लादैरपिगलितभेदैरवसिते । नयसिज्जीवानो
प्रसरति मनोवागवसरः । निराकारं नित्यं निजमहि
म निर्वासिततमो । विशुद्धं यत्तत्त्वं स्फुरतदिनि नवेव
विषयः ९ महादानैर्ध्यानैर्बहुविधवितानैरपि च यन्
न लभ्यं घोराभिः सुविमलतपोराजिभिरपि । अचिंत्यं
न विष्णोः पदमखिलसाधारणतया । ददानाकेनासि
नै

५५

3

त्वमिह तत्तलनीया कथयतः ११ त्वयामीतामाग्र दयिपरि
हरेन्याभवभयं । शिवायास्ते मूर्तेः करुद महिमानेनिग
दत । प्रमर्थम्लानायाः परम मनरोधं गिरिभवो । विहा
य श्रीकेठः शिरसिदयया धारयतियाम् १२ विनिर्याम्ब
म्नैते रपिव परि ह्रार्यणापि श्रुते । रवाव्यानिबाभिः सप्त
लक मपास्यानि पतितैः ॥ हरंती लोकाना मन वरतमे

गा॰ऐ
गो

णोस्मि कियन्तो । कदाप्य ज्ञानात्मे जगति भनेरेकाविजयसे
१२ सवलेनी स्वर्लोका दृश्वनितलशोकापहनये । जटाजू
टग्रेथैो यदस्मि विनि वद्राञ्जभिद्रा ॥ अयेनि लैभानाभसि
मनस्मि लोभं जनयन्तो । गुणानामेवाये नवजननिदोषःप
रिणतः १४ जडानेधान्यंगरुत्वकृतिवपिरावक्ति विकला
न्युरुहायलानक्ता विलडिरन निस्तारनरणीम ॥ विलि

मैर्निमग्नानपिच निरयान्तर्निपतितान्। नरानेवंत्राते
त्वमिह परमंभेषजमसि १५ स्वभावस्वच्छानां सहज शि
शिराणामयमपांमपारस्ते मातर्जयति महिमा कोपिज
गति ॥ मुदायंगायंति द्युतलमनवद्यद्युतिजुषः। समा
साद्याद्यापि स्फुटपुलकसांद्राः सगरजाः १६ कृतक्षुद्रैन
स्कानथ झटिति संतप्तमनसः। समुद्धर्तुं संति त्रिभुवनत

ए·रेवं
ये

लेतीर्थि निवहः । अपिशायश्चित श्रमराणा पथ्यानीनवरि
नान् । नरान्तीकर्तें न्वमिव जननिन्वे विजयसे ९ ॥
नियाने यमीणां किमपिव वियानेवनम्नुदं । श्र्यानेनी
र्थ्याना ममल परियानेविजयानः ॥ समायानेत्रुद्देवयाव
लुनियेयानमयियां । श्रियामायानेनः परिहूवन्ननाये
नववञः १८ श्रयेयावेयावेड्विणा मदिराहूणीनटश्णां

मह्रीपाले नाना भरु नरुणा देवेदस्यानियते ॥ ममैवाथेमं

नस्त्वहित शत हेनन्नेउपियो । वियोगस्तेमानयैदिह क

रुणातःन्नणामपि १४ मरुल्लीला लोल लहरिल्वलितो

भोज पटल सबलन्मा सब्रान दरणा विल सन्कोंजमरु

वि ॥ सरसी वतोज दरद गरुजेवाल जटिले । जलेते

जेचाले ममजननजालेजरयन २· सम्रन्यानिःपद्मारम

ग·खे
ने

णपदपद्मामलनखान्निवासः केदर्थ्य अतिभद्रजटाजूट

भवने ॥ अथायं व्यासेन गोहनपतिनं निस्तारण विधौ ॥

नकस्माउन्नकर्षे स्तव जननि जागर्ति जगति ३१ नगेभ्योयो

नीनो कथय न हि नीनो कन मया। अगाण्णां सेहर्त्तेः स्वरय

नि कपर्दी पिकलहे। कथा वा श्रीभर्तुः पदकमलमत्ता

लि सलिले। स्वला लेशो यस्या तव जननि दीपेनकविभिः ३२

विपन्नो निःशोके निरवधि समाधिं विधिरहो । सुखं शेषे शे
ते हरिरविरतं नृत्यति हरः ॥ कृतं प्रायश्चित्तै रलमथ तपो
दान यजनैः । सवित्री कामानां यदि जगति जागर्ति भवती
२१ अनाथः स्नेहार्द्रां विगलित गतिः पुण्य गतिदां । पत
न्विश्वोद्धर्त्रीं गदविदलितः सिद्ध भिषजं ॥ सुधासिंधुस्तृष्णा
कुलित हृदयो मातरमयं । शिशुः संप्राप्तस्त्वामहमिह वि

दध्याः समवितम् २४ विलीनो वैवैवे स्वतनगारकोलाह
लभरो । गताहताहं क विदपि परेताम्नगा यितम् ॥ वि
मानानो ब्राने विदलयति वीर्यौर्दि विघदे । कथ्याने कल्या
णी यदवधि महीमंडलमगात् २५ स्फुरन्कामक्रोध प्रव
लवस संज्ञान जटिल । ज्वरज्वालाजाल ज्वलितवपुषानः
प्रतिदिनम् ॥ हंतेनो संतापे कमपि मरुडलासिलहरि ।

कुटांचंचत पाथः कणमरणाये दिव्य सरितः २६ इदं दिव
लांडे सकल भुवना भोगभवने । नदेवैर्यथं सेनानर्वदतिप
रितस्तिउक मिव ॥ सपथ श्रीकंठ प्रविततजटा जटजटि
ने । जलानां संचानस्तवजननि नापं हरतुनः २७ अपंने
नीर्थानि न्वरितमिह्न यस्मोह्रतिविधौ । कंरकाणीउर्वैग्य
पि किल कपालि प्रमतनयः ॥ इमंमंत्रं मामेवन्नमियमनुकं

गा. खे
गे

पाठे हृदये। स्तनानां सर्वैषामेव मथन दर्पं दलयसि २८ स्व

पाकानां ग्रन्थेरस्मिन विचिकित्सा विचलितै र्विमलकानामे

के किल सदसमेनः परिषदो। अहो मा महत्वं जननि घट

येत्साः परिकरं नवस्तावाकर्त्तं कथमिह समर्थो नरपशुः

२९ नकोप्येनावेत्ते त्वलु समयमारभ्य मिलितो यदुद्गारा

दाराज्जवति जगतो विस्मयभरः ॥ इतीमामीहान्ते मनसि

चिरकाले स्थितवती। मयंमेशमोहं सफलयितमंबग

णायनः ३· स्वहति आसंगो नियत मयमिथ्या प्रलयनं·

कृतकैश्च भ्यासः सतत परपैश्रम मननम्॥ अपिश्रावं

श्रावं ममतत्र पुनरेवं विचिन्तनात् न्दनेन त्वत्को नाम दाण

मपि निरीक्षित वदनम् ३। विशालाभ्यां माभ्यां किमिह

नयनाभ्यां खेलफले नयाभ्यां मालीढापरमस मणीया

गा॰ लं॰
गे॰

तवतनवः ॥ अयंदिव्यकारो जननि मनुजस्य श्रवणयो र्य
योनेंतर्यातस्तव लहरीलीला कलकलः ३२ विमानैः स्व
च्छंदं सरभरं मंयेन सुकृतिनः । पतेंतिद्राक् पापा जननिन
रकांतः परवशाः ॥ विभागोयं तस्मिन्नशुभ शुभमूर्तौज
नपदे । नयत्रांते लीला शमितमनुजाशेषकलुषा ३३ अ
पिप्रेतो विशा नविरत मंथानो गरुड मतोः । पिवंतोमेरेयंश

नरप ह्रत्नछ्र कनकम ॥ विह्राप त्वयंने नत्र मतन्वदा

नीथ्वरज्ञषा । मपर्य्य त्वक्रीडे न्याविल त्वर संभाविनपदाः

३४ ग्रलसंय्यैरासंय्य ह्रवनिमततेयः त्वमनसा । ताणादेवश

णा नपिविरहि शत्स्वतनस्ततो । त्वदीपानो लीलावलित

लहरीणां व्यतिकरो । त्वनीनेसोपिद्वागह्र पवमानस्ति

त्ववनं ३५ किंपनः संत्येके निपतमिह लोकार्थ घटकाः

रा·स्तं
मे

परेष्वात्मानः कतिव परलोकप्रणयिनः ॥ स्वदेशाने

मात्मानस्तव खलु कृपालः प्रणयिनः । जगन्नाथः शम्भुस्त्वयि

निहितलोकद्वयभरः २६ भवन्याहिङ्गान्यायमपतिनृपा

दैरपरिषन् परित्राणात्सेढुः स्मरयति न मशकाः खलुय

या ॥ ममाप्येवं प्रेमा दुरितनिबद्धेष्वेव जगति । स्वभावो

ऽयं सर्वेषामपि खलु यतो दुष्परिहरः २७ प्रदोषान्तर्नृत्यत्सव

मथनलीलोद्धतजटा। तदा भोगैश्चेल्लद्ररिभुजसंतान

विधृतिः॥ विलक्षोड्डीनोडुजलडमरुडक्कारशुभगस्ति

रोपम्नेनानांपचित्रदशनतटिनीनांडवविधिः ३प सदैवनथेवा

ष्यिनकपालविंताभरमिमे यदितेमामेवत्यज्यसिसमये

स्मिन्नविषमे॥ तदाविस्मायोयं त्रिभुवन नतलादस्तमय

ते। निरापायावेयं भवतिरवल्ल निर्व्याजकरुणा॥३५॥

गा. रवे
गे

कपर्दीउल्लसत्प्रणाय मिलदंष्ट्रीगणत्रवेतेः। प्रवरे:श्रेत्वंवेमो

ऽडल नत्वसौ मंतमत्राणौ ॥ भवान्यासापन्नस्फुरितनयने

कोमलरुचा। करेणात्रिमात्तेजननि विजयंतेतलच्छयः

५ प्रपंचेनैलोकाः कतिनभवनी मत्रभवनी। त्वपापित्त

गांयस्फुरति यदभीष्टं विनवसि। शापेन्नभंमानर्भमनत्रन

यान्मा स्वरशुति। स्वभावादेवत्वय्यमितमत्रगांगोविषतवा

११

न् ४१ ललाटेयालोकैरिह खलमलीलैतिलकिता । न

मोहं तेषणे नकृणा नरमानैड नलनो । विलिंपनीमयोवि

षि लिविनडैवीरमर्णि । नदीयाम्सैमरम्ना ममहरनकु

न्नामपिश्रवम् ४२ नराम्नफंलनजनपदसमासकमन

सो । हसंतनःसोलासेविकचजलमब्रानमिघनः । श्रना ।

नाःसैारमैःसततमलिनो निम्नमलिना न्सखायोनःसे

रा·खे·
गे

नत्रिदशाङ्गनाभिनीरनरवः ४२ पर्जन्येकेदेवान्कठिन
नरसेवोस्तदपरे। विनान व्यासक्ता यमनियमरक्षाःक
नियये। अर्हन्नवन्नामस्मरणाभ्तनकामक्षिपथ्यरो। जग
ज्जालेजानेजननिस्तणाजालेनमस्तेशाम् ४४ अविश्रांतेज
न्मावधिस्कृतनकर्मार्जनकृतो। सन्तोभ्रयःकर्णकतिन
कृतिनःसंतिविद्रधाः॥ निरस्तालेवानामकृतसकृता

नोन्तभवती। विनाम्रेक्षिल्लोके न परमवलोके हितकर

म् ४५ पयःपीनामानस्तवस्तपदियानःसस्रचौरे। विमुक्तैः

सेरेनेक्कचिदपिन विश्रांतिमगमम्॥ इदानीमवसेगेमरु

पवनसंचारशिशिरे। विराडन्निर्देमोसदयहृदयेस्थापय

चिरम् ४६ वयानन्दात्तैव इहिमरमणीयेपरिकरे।कि

रीटैर्वालेन्दैर्नियमयपवनःपन्नगगणैः। नजर्यायस्त्वेरे

ग खे
गे

त्वामितरजनसाधारणधिया। जगत्त्राणस्थायै स्मरभनि

समन्हारसमयः ४७ शरच्चन्द्रश्वेतां शशिशकलशोभा

मकुटे। करैः कुंभांभोजे वरभयनिरासौच दधतीम्॥

सुधाधाराकाराभरणवसनांशुभ्रमकरा। स्थितांत्वांये

ध्यायंत्युदयतिन तेषां परिभवः ४८ दरस्मितसमुल्लस

द्वदनकान्तिपूरामृतैर्भवज्वलनभञ्जिनानशिशिनमूर्जे

येंतीनशन ॥ बिंदेकमयचेंदिकावयचमन्हनिंनन्वनी
ननोन्हममशेंननेोःसपदिंशननोंरंगना ४९ मेंत्रेमी।
लिनमेोघंयेंम्हेंज्ञलिनेंयस्तेंखगाणंगगोः खलेंलेंाड्ख
थारसैविंगलिनेंगाकम्हनैग्रीवभिः ॥ बींविन्हलिन
कालिमाह्निनपदेस्वलोंककलोलिनि न्वेनापंतिरया
श्रनाममभवज्वालावलीदान्मनः ५ सूतेनागेंड्क

गं·खे
ये

निश्रमयमाणाफणिशेणिनेदीडुमक्ले सर्वसत्त्वहारायि
त्वासमध्यशरभिदिद्दाकपणीकर्नेकामे ॥ साकृनेहे
मवन्यामरुडलङ्गसितपावीहिनायामवोव ब्यालोले
लासिवलालूङ्गीनवचटानोडवेनःश्रनात ५१ विमू
षितानङ्गःरिपनमाङ्गासघःकृतानेकजनार्भिसंगा।
मनोहरोनेगवलनरङ्गारंगामभोगाममलीकरोत

५२ इमांपीयूषलहरींजगन्नाथेननिर्मितां। यःपठे

त्तस्यसर्वत्रजायेतेजयसंपदः ५२॥ इतिरागनी रवे

भावनी गंगालहरि परिच्छेदःसमाप्तः ॥ ॥ ॥

ག་ཁེ
ག

५
15

नं. ञ हरनीचेका
१५३ ञ् लिषाटनीचेका
ञ हरनीचेकाविसरामसे

ञ्ति
ञलिषाटनीचेका

12/19
//

ॐरागनीविलावलमीयेकीगतफरोजखा
नीतालथीमात्रितालाऊठेगीपेहलीसेकुछ
कैपेहलेस्वरमध्यमठलेगा अथस्थाई ॥

अबुरद १

डा गंधार

डु ऋषभ

डा गंधार

डाडिडडिड मध्यमबराबरका

डा ऋषभमीडजोरसेगंधारतकअरघडीरेहेगी

डिड स्वर

डा निषादऊपरका

डिड ऋषभ

डा स्वर

डा निषादऊपरका

अबुरद २

डा पंचमऊपरका

डिड स्वर

डा निषादऊपरका

डा ऋषभ

डा स्वर

डिड गंधार

डा ऋषभ

डा गंधार

अबुरद ३।

डिड़् ऋषभ
डा स्वर
डिड़् निषादऊपरका
डाड़ा स्वर
अन्तुरद ३
डाडा पंचमऊपरका
डा निषादऊपरका
डिड़् स्वर
डा ऋषभ
डिड़् गंधार
डा मध्यमबराबरका ड़ा पंचम
अन्तुरद ४

डा गंधार
डा ऋषभ
ड़ा निषादऊपरका
डिड़् ऋषभ
डा स्वर
डिड़् निषादऊपरका
डाड़ा स्वर
इतिस्थाई
अथअंतरास्थाईकेदूसरेअन्तुरदके
निषादकेडानकबजाकरचला
अन्तुरद १
डिड़् गंधार

नि ध नि सं नि ध प

डडाडिडडा डा डाडिड डाडा डाडिड डाडा

ध म ग नि सं ग म ध नि सं ग

डा डा डा। डिड डा डिड डा डा डा डा डा।।

म ग सं नि ध म ग सं

डिड डा डिड डा डा डा डा डा।। फिर स्थाई

के दूसरे आवर्दके निषाद की डिड ना

मिला इतिअंतरा।। अथ बिहाग रागस्य

१नि १प १ध १नि २सं २ग

आलापः।। ननरी इना आनन उननेंड

गा॰ बि॰ ५

२म २पि २म २ग २रे १नि २सै २ग
ग्रानन ग्रदननरी नते तना उननना ग्रान

२म २ग २रे २सै
रा ननन रतुम तातुम ।। ०:० ।। इतिस्थाई

२म २पि २पि २नि २सै
ग्रथ्यअंतरा ।०:० । ननन ग्रदनते ग्राननतु

२नि २सै २नि २प २पि २नि २सै
म तातुनै तना तन नरी नना ग्रान तान

२ग २रे २सै २नि २सै २नि २प २पि
तातुम नतु तरीन तातुरी रना नना ग्रान

२म २ग २रे २सै २सै
तान ग्रान तान रान तनम ।। इत्यालापः

17

१

५

सं नि पं ग म पं

रद मे जा मिला ॥ डिड डा डिड डाडा डा

म ग रे ग म ग सं

डा डा । डिड डा डिड डाडा डाडा डा ॥

फिर प्याई सेये प्रभुरदमें जा मिला है

नि सं ग म

डाडिडडाडाडाडिडडाडा । डा डिड डा

पं म ग नि सं ग म पं

डा डाडा डा । डा डिड डाडा डाडिडडाडा

म ग सं नि

डाडिड डाडा डाडाडा ॥ फिर प्रकहते

तीसरे तोडेके पहले ग्रबुर्दके नीचेके
स्वरमें जामिला डिंड पर। इति तोडे प्र
थ। अंतरा स्थाई प्रथ तोडे बजाकर फि
र स्थाई के तीन ग्रबूर्द बजाकर चला
तालकी पहलीमें ॥ डा डिंड डा डा डा
डिंडडाडा। डाडिंड डा डा डाडा डा। डि

राग बिहाग में पूर्णगत मसीतषानी
तालधीमाबिताला उठेणी हमरी में

पें नि सें म ग सें निं
डाडा डाडा डाडा डाडा डाडा डा । डि

सें ग म प म ग रे
ड डाडिड डा डा डाडा डा । डिड डा

ग म ग सें ग रे सें
डिड डाडा डाडा डा । डिड डा डिड डा

नि
डा ॥ इतिस्थाई ग्रथ तोडे प्रकेरे स्था

गः बिः ८

पै
ईके तीन मर्दंद बजाकर चले ॥ डिडडा

म ग म पै म ग रे ग म
डिड डाडा डाडाडा। डिड डा डिड डाडा

ग सै
डाडाडा ॥ फिर स्याईके चौथे मर्दद।

ग
मे जा मिला गेधारकी डिड पर ॥ डिड

म पै नि सै पै म ग रे ग
डा डिड डाडा डाडाडा। डिड डा डिड।

म ग सै
डाडा डाडाडा। फिर स्याईके चौथे मर्द

सब भाव मनौं आनि अंकलियें ॥ इति शृं
गार रस लक्षणम ॥ अथ विहाग राग

ठाट क्रमः ॥ षड्ज सम रहताहै ऋषभ
चढा निर्बलभीहै गंधारभी चढा मध्य
म चढा और उत्तराभी लगताहै धैवत च
पंचम सम
ढा निर्बलहै निषादभी चढा लगताहै

ग. वि. ८

इति नाटक्रमः ॥ अथ सरिगमः। गग
मपनिपपमगमगसासानिपनिनि
सामगमगसासानि ॥ इति स्थाई अथ
अंतरा ॥ पपपनिसासानिनिसासा
मग मग मग सस निनि प मग ससा
नि ॥ इति विहाग राग सरगमः ॥ ॰

न पाप विमोचन पूज मनबानी और ध्यानसों।

इतिअस्थाई ॥ जो के सुमरत सुर नर मुनि पा

र भये तरतही मिल गयो जाय परे ब्रह्म भगवा

सों ॥ इतिअंतरा ॥ पाप अज्ञान तिमर सब हर

है उदत होत पुन्य धरम और प्रीत करै ज्ञानसों

तीन मम नव और चारों दिस है विख्यात पूजें

गा॰ सब परमान आधीनके प्रभु सूरज परधानसो ॥

त्रि॰गा॰ इति आभोगः ॥ इति विहागरागस्य स्वर्यं परि।

छेदः समाप्तः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ विहाग रागस्य सूर्य परिच्छेदमाह ध्रुवपद

१नि १प १ध १नि २सं २सं १नि २सं

ताल चार ४ ॥ आज शुभ भाव दैन को प्रगट।

२ग २म २प २म २ग २रे २सं १नि २सं २ग २म २ध २नि २ध २म

भये सबही संसार में सूरज दिनकर दीनदुःख

२ग २रे २सं २ग २म २प २नि

हरण हार ॥ इति अस्थाई ॥ प्रभा छाया शक्ति

२सं २नि २सं २नि २ध २नि २नि २सं २नि २प

साथ बाल विलके नाथ तरग रथ चढके आ

२ध २नि २ध २म २ग २रे २सं १नि २सं

ये दूर करण अंधकार ॥ इति अंतरा ॥ तानी।

गा॰
वि॰ गा॰

२ग २म २प २म २प २नि ३सं २नि २ध २प २प २ध
ध्यानी साधु सेंत जपी तपी और महंतसे मन ला

२सं २ग २रे २सं १नि २सं २ग २म २प २म २ग २रे २सं २ग २म
ग रमा कंत वाहको करके नमस्कार ॥ जाके

२प २नि ३सं २नि ३सं २नि २ध २प २नि २नि ३सं
बाल वृद्ध कुमार ग्रहणोदय वेग देख पैसे द

३सं २नि २ध २प २ग २म २ग २रे २सं १नि ३सं २ग
याल कृपाल भरमहे को मेटन हार आधीन ए

२म २प २म २ग २रे सं
जैं बार बार ॥ इतिआभोगः ॥ राग विहाग ध्रुव

१नि १प १नि २सं १नि
पद सूर्य ताल चार ॥ वेग उठरे मन हरिलोच

२सां २ग २म २पं २म २ग २सां २नि २सां २ग २म २पं २नि २पं म २ग २रे २सां

न पाप विमोचन पूज मनबानी और ध्यानसों।

२ग २म २पं २नि २नि ३सां २नि

इति अस्थाई ॥ जो के सुमरत सुर नर मुनि पा

३सां २नि २पं २नि २नि ३सां २नि २ध २पं २नि २पं २म २ग

र भये तरतही मिल गयो जाय परब्रह्म भगवा

२रे २सां २नि २सां २ग २म २पं २पं २म २पं २नि

सों ॥ इति अंतरा ॥ पाप अज्ञान तिमर सब हर

२सां २नि २ध २पं २पं २म २ग २रे २सां २नि २सां २ग २म २पं २म २पं २म ग

है उदत होत पुन्य परम और प्रीत करै ज्ञानसों

२ग २म २पं २नि ३सां २नि ३सां २नि २पं २पं

तीन सम नव और चारों दिस है विख्यात पूजें

गा॰ सब परभात आधीनके प्रभु सरज परधानसें॥

वि॰गा॰ इति आभोगः॥ इति विहाग रागस्य सूर्य परि।

च्छेदः समाप्तः॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ विहाग रागस्य शिव परिछेद माह ध्रुव
पद ताल चार ॥ चलो सखी कैलास जांयें शि
व करैं विलास अतही हुलास भरे पार्वती संग
ले ॥ इति अस्थाई ॥ उमग बहे गंग सीस मा॥
थे चंद रुंडमाल गलें घोट घोट पीके भंग मन
वांछित फल दे ॥ इति अंतरा ॥ अरक पुष्प धू

गा॰ पदीप पान लाची और धतूरा वेल पात राग रंग

बि॰ गा॰ दिन रात बहुत प्यारे भोलेके ॥ सुर नर मुनि।

देव करत रहित वहांकी सेव नील कंठ व्याल

भूषण बाघंबर सबही को दूषन करै महर।

महादेव मांगत आधीनये ॥ इति आभोगः ॥

राग विहाग ध्रुवपद शिव ताल चार। हेडमा

ल ब्याल भूषण भाल वेद तीन लोचन भस्म अं
ग धारी ॥ इति अस्थाई ॥ जटा जूट सीस गंग पा
रवती शक्ति संग कर त्रिसूल डुमरु लीनों बृष
भ की सवारी ॥ इति अंतरा ॥ गणपत वीरभद्र
स्वामि कार्तिकीर्त भाव और साध गाजित शिव
के गण कुवेर भंडारी ॥ मुनी ज्ञानी गंधर्व सिध

२सं २नि ३सं २नि २ध २प २नि २नि ३सं ३ग ३रे ३सं २नि

गा॰ साध औ र विघ्न करत रहित वाकी सेव निसे स॰

२ध २प २म २ग २रे २नि २सं २ग २म २प २म २ग २रे २सं

वि॰गा॰ हित आधीन पूजत नर नारी ॥ इति आभोगः ॥

इति विहागरागस्य शिव परि छेदः समाप्तः ॥

॥ ❖ ॥

अथ विहाग रागस्य गणेश परिछेदमाह ध्रुव

१नि १प १धै १नि २सां १नि

पद ताल चार ॥ नित्य नित्य भज मन गिरि॰

२सां २ग २म २धै२म सां२ग२रे२सां १नि २सां २ग २म २धै २प २धै २म२ग २रे २सां

जा नंद मन वांछत फल लेहो आनंद ॥ इति॰

२ग २म २धै २नि ३सां २नि ३सां २नि

अस्थाई ॥ तन सिंधूर चतुर्भुज रतन माल क

२प २धै २नि २नि ३सां २नि २प २धै २नि ३सां २नि २प २धै २म २ग

ट व्याल जग सब देत लाव भाल सोहे बालचं

२रे२सां १नि २सां २ग २म २धै २धै २म

द ॥ इतिअंतरा ॥ विघन हरन मंगल रूप शि

ग॰ वकुमार गुनके भूप काटत दारिद्र और दुःखको

वि॰ग॰ फेंद ॥ सुर नाग मातलोक करम ह्रैको करणग्यो

ग आठ पूजै ठकुरैत आधीन कवी करहैं मबर

हैं जब नयो छेद ॥ इति आभोगः ॥ ❖ ॥ रागवि

हाग धुवपद गणेश ताल चार ॥ आदि समिरो

श्रीगणेश गिरिजानंद सुत महेश काटते कले

श जोन सबही नरनारके ॥ इतिअस्थाई ॥ गण

राज गज वदन विघन हरन सुख सदन उर

दारिद्र दूर करन सबही मेसारके ॥ इतिअंत

रा ॥ एक दंत सिद्धि केत भक्त माल शोभत

जोको सेवें सिद्ध संत प्यारे करतारके ॥ परशु

कमल अंकुश धर दंत सोहे एक कर मागेस

२प २पं २म २ग २रे १नि | २सं २ग २म २ग २रे २सं

रा· रब सदा आधीन बेटे दरबारके ॥ इतिआभोगः ॥

वि·रा· इति बिहाग रागस्य गणेश परि छेदः समाप्तः

अथ विहाग रागस्य विल्व परिछेद माह ध्रुव

१नि १प १पं १नि २सं २नि

पद ताल चार ॥ मेरी परनाम गोविंद श्या॰

२सं २ग २रे २पं २म २ग २रे २सं १नि २सं २ग २म २पं २नि २पं २म २ग

म सुंदर रमा कंत गरुड केतु पीत पट धारी

२रे २सं २ग २म २पं २नि ३सं

सों ॥ इति अस्थाई ॥ जा के सिर मोर मुकट।

२नि ३सं २नि २प २पं २नि २नि ३सं २नि

करण कुंडल बिथुरी अलक भाल तिलक भ

२प २पं २नि ३सं २नि २प २पं २म २ग २रे १नि २सं २ग २म २पं

मा यतुघ नींद भरी अंखपलक पहीखटका

ग॰ रेसों ॥ इतिअंतरा ॥ बन माल कौस्तुभ कंठ ग्रीवाक
वि॰ग॰ पीत सोहे भृगु पद उर विराजे शोभित रूप अति
अनूप भक्तन हितकारी सों ॥ शंख चक्र गदा॰
परम वेग मोरे अघहर प्रथम दर्शनते पुन वि॰
ख्यात आव सबही भाग जाते आधीन के प्रभु॰
गिरि वर धारी सों ॥ इतिआभोगः ॥ राग विहा

२नि २ध २प २नि २सं

ग ध्रुवपद बिलावल ताल चार ॥ इत प्रणाम सबवेत्र

२सं १नि २सं २ग २म २पं २म २ग २रे २सं १नि २सं २ग २म २पं २पं

लाक राजत उत गौर सबवे बैसर मोहे इत केस

२नि २पं २ग २रे २नि २सं २ग २म २ग २रे २सं

र तिलक भाल उत मांग मोतियनकी ॥ इतिच्र

२ग २म २पं २नि ३सं २नि ३सं २नि २ध २पं २नि

स्याई ॥ इत मोरपेंख सीस फूल चंद्रका उत चें

३सं ३ग ३रे ३सं २नि २पं २म २ग २रे १नि २सं २म

पकली बनमाल इत बेसरी मोहे उत छब ता

२ग २पं २म २ग २रे २सं २नि २सं २ग २म २पं २पं

ल तलीयनकी ॥ इतिचेतरा ॥ इत पीतपट उ

२म २धु २नि २धु २म २ग २रे २सां २नि २सां

गा॰ तनील छट सजत इत बिद्युरी अलक उत शोभा

२ग २म २धु २म २ग २रे २सां २ग २म २धु २नि ३सां

बि॰गा॰ वेनी औरदै नागिनकी ॥ इत कटई हूंगरी उत

२नि ३सां २नि २प २धु २नि २सां २नि २प २धु २म

छुद छेट इत पगकी पाइल रुनझुनेट उत फो

२ग २रे २सां १नि २सां २ग २रे २सां

जरकी छुण छुनेट आधीन देखो सेदर जोडी॰

२नि २सां २ग २म २ग २रे २सां

राया मोहिनकी ॥ इति आभोगः ॥ इति राग वि

हागस्य विल परि छेदः समाप्तः ॥ ❖ ॥❖

अथ बिहाग राग मे शक्ति परिछेद मांह ध्रुव
पद ताल चार ॥ आयो आश्विन मास मेंतनम
न हुलास करके बिलास बहुत जामें देवी दर
बार ॥ इति अस्थाई ॥ नर नार वृद्ध कुमार पा
उं पिआदे और सवार भक्ति मन धार तेरी करेहे
जै जै कार ॥ इति अंतरा ॥ पान सुपारी ध्वजा।

ग॰
बि॰ग॰

नेवेल धूप दीप और फुलेल गावैं स्वर मेल मेल

धुन धुन हाथ लेनी कुसमन के हार ।। कौरै मे

ट उमग उमग गाय गाय लागे रंग मागत फ

ल वन आधीन चरनन मैं हो प्रवीन करके जो

नमस्कार ।। इति आभोगः ।। राग बिहाग ध्रुव

पद ताल चार शक्ति ।। आदि शक्ति अंत शक्ति

१नि २सा २ग २म २प २नि ३सा २नि २ध २प २म १ग २रे २सा

मध्य शक्ति सर्व शक्ति शक्तिको संसार है ॥ इति

२ग २म २प २नि ३सा २नि ३सा २नि

अस्थाई ॥ जल शक्ति थल शक्ति पवन और ना

२ध २प २नि २नि ३सा ३ग ३रे २सा २नि २ध २प २म २ग २रे २सा

र शक्ति सर्व विश्वहू मे ज्ञान शक्तिको पसार है

१नि २सा २ग २म २प २प २म २प

इति अंतरा ॥ तीन लोक चौदां भवन और पा

२नि ३सा २नि २ध २प २म २ग २रे २सा १नि २सा

वों अस्थान शक्तिही प्रधान देखी प्राण पान।

२ग २रे २सा १नि २सा २ग २म २ग २म २प २ग २म २प २नि

फिर समान शक्तिको व्यार है ॥ सुर नर मुनि

गा॰ देव शक्ति कीने सबही भेव ब्रह्मा विस्नु शिव स्त्री
वि॰गा॰ धीन शक्ति को करतार॥ इतिप्राभोगः॥ ❖ ॥

इति राग विहागस्य शक्ति परिच्छेदः समाप्तः॥

अथ बिहाग राग स्य ख्याल परिछेदमाह ध्रुव।

२सा १नि २सा २ग २म २रे २सा

पद ताल चार ॥ अथम शब्द ख्याल ख्याल रूप

१नि २सा २म २प २म २प २नि २सा २नि २प २म२ग२रे

जाते उत्पत भयो वेद अपरम पार ब्र ॥ इति

२ग २म २प २नि २सा २नि २ध २प

अस्थाई ॥ जोको उचरत चतुर मुख शोधक

२नि २सा २नि २ध २प २म२ग२रे२सा १नि २सा

र रच्यो पुन संसार ब्र ॥ इति अंतरा ॥ पृथवी

२ग २म २प २प २म २प २नि २सा २नि१ध२प २प २म

और आकाश जाके मध्य पवन जल महा तत्व

२ग २रे २स २ग २म २प २नि ३स २नि ३स ३ग ३रे ३स

गा॰ नार जू ॥ चौरासी लक्ष योनी फिर बनाई राम ।

२नि २ध २प २म २म २ग २रे २स १नि २स २ग

वि गा॰ आप आप सब से तो भिन्न आधीन रहित निर्वे

२म २ग २रे २स

कार जू ॥ इति आभोगः ॥ राग विहाग ध्रुवप

१नि २ध १प १नि २स १नि २स

द ब्रह्म ताल चार ॥ तीन गुण तीन धाम तीन

२ग २म २प २म २ग २रे २स १नि २स २ग २म २प २प २म

नाम प्रगट जातें तीन काम भूत भविष वर्त

२प २नि ३स २नि २ध २प २म २ग २रे २स १नि २स

मान ब्रह्म को पसारये ॥ इति अस्थाई ॥ तीन

२पं २नि ३सं २नि ३सं २नि २प २पं २नि २नि

भक्ति तीन शक्ति तीन करम तीन धरम इनकों

३सं २नि २प २पं २नि ३सं २नि २प २पं २म २ग २रे २सं

अधिक न्यून होत कैहत है सेसारये ॥ इति श्रे

२नि २सं २ग २म २पं २नि २पं २सं २पं २नि २प २नि

तरा ॥ तीन देव तीन काल तीन प्रकृति तीन

३सं २नि २प २पं २म २ग २रे २सं २नि २सं २ग २म २ग

फसल एक साल ग्रीष्म शीत और बहार की

२रे २सं २ग २म २पं २नि ३सं ३सं २नि ३सं २नि

नो करतारये ॥ तीन आयु तीन तुह तीनको कु

२प २पं २नि ३सं ३ग ३रे ३सं २नि २पं २नि ३सं २नि २प

ल समूह तीन नार करी प्रधान जहामे आप

२प २म २ग २रे २सा १नि २सा २ग २सा २ग २रे २सा १नि

गा· तु भगवान और हत सबथी भिन्न आधीन प्रभु।

२सा २ग २रे २सा

वि·गा· निरेकारथे ॥ इति आभोगः ॥ राग विहागस्याव

लपरि छेदः समाप्तः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

मोर मकुट धारी ॥ इति अस्थाई ॥ पीत पट मो

हे कट केल करत यमुना तट पगमे नेवर ह

ण कनाट बांधे छब न्यारी ॥ इति अंतरा ॥ ना

क बुलाक फलक घलक विथुरी कुंडल श्र

वन कान शोभित तिलक गिरधारी ॥ कांधे

कमल हाथ लकुटी धेन कों चराये नाथ गो

२रे २ग २म २प २ध २प २म २ग २रे २सा

गा. पी लिये साथ फिरत आधीन के श्रम बनवारी

इ.क. इति आभोगः ॥ इति इमन कल्याण राग सं

विल परिछेदः समाप्तः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

13

अथ बिहाग रागस्य दशावतार परिच्छेद माह

१नि १प १धि १नि २सं

ध्रुवपद ताल चार ।। प्रभु तेरी माया वरणिकों

१नि २सं २ग २म २प २धि २नि २धि २म २ग २रे

न जौंन जौंन काम कीये तैने बेद हूंन कैहूजा।

२सं २सं २म २ग २रे २सं

भकत मानस कौन कमीन ।। इति अस्थाई ।।

२ग २म २प २नि ३सं २नि ३सं २नि २प २धि २नि

धर अवतार बेग आये भकतन की करी सहाये।

२नि ३सं २नि २प २धि २नि २धि २म २ग २रे २सं

असुरन के सतानते भये जब अतहिं दीन ।।:

रा॰ इतिश्रेतरा ॥ मीन कछ बाराहे नरसिंह बाम॰

वि॰रा॰ न परशुराम रामकृष्ण बौध हय निष्कलंक

दीने सब दुःख छीन ॥ विभीषण प्रहलाद॰

करत रहित याद तोहे द्रौपदी की सुनके दाद

दीनो दर्श शीघ्र आये दे मेत आधीन ॥ इत्याभो

गः ॥ इति विहागरागस्य दशावतारपरिच्छेदः ॥

स्वरूप ते ही है गणेशजू ॥ इतिअस्थाई ॥ स्वर

नर मुनि नार हाथ जोडे द्वार बार बार करैं पु

कार काटीयो कलेशजू ॥ इतिअंतरा ॥ शुभ

हेको करणहार संकट बिडार जोन सुवन

मैं प्रधान ते तो सुत गौरी महेशजू ॥ आपी

न दीन आयो शरण पूजित चरण तिहारे

२सं १नि १प १नि २सं २सं २रे २ग २ग २म

रा॰ हाथ जोड नमस्कार छनो हो दियाल मोघे रा

२ग २रे २सं

३॰क॰ ख दया हमें शरन ॥ इति आभोगः ॥ इति हेम

न्त कल्याण रागस्य गणेश परिछेदः समाप्तः

शुभं भद्रम ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ इमन कल्याण रागस्य विस्नु परिछेद मा

२रे २ग २म २ध २प २नि

ह धुवपद ताल चार ॥ चक्रधर हरनारायण

२प २ध २म २ग २रे २सां २नि २प २नि २सां २ग २रे

नरोत्तम विस्नु विश्वंभर भरण पोषण श्रीक

२सां २म २ध २प २नि ३सां

रतार ॥ इति अस्थाई ॥ दीना बंधु दीनानाथ

२रे ३सां २नि २प २ध २म २सां २रे २नि २सां

दीन दियाल कृपाल दुःख भंजन दामोदर।

२ग २रे २सां २रे २ग २म २ध २प

श्री दातार ॥ इति अंतरा ॥ धरनि धर प्रणाम

२नि २ध २पै २म २ग २रे २सा १नि १ध १नि २सा २ग

गा· सुंदर लोकनाथ जगदीश्वर मदन मोहन श्री

२म २पै २ध २पै २म २ग २रे २सा २म २ध २नि

३· म· मकुंद मधसूदन यन्त्र मुरार ॥ गोपीनाथ।

३सा ३रे ३सा २नि २ध २पै २म २ग २रे २सा १नि १ध

गोपाल गरुड केतु जगन्नाथ गोविंद भज श्री

१नि २सा २ग २रे २सा

दीन भो सागर उत्तरे पार ॥ इति आभोगः॥

राग इमन कल्यान ध्रुवपद बिलम्ब ताल चार·

२पै २म २ग २रे २सा १ध १नि २रे २सा २रे २ग २म

प्रणाम हूप सावके भूप रमाकेत प्रनेत मूरत

नी दयानी सर्वकाम दीन ह्वेके एक छिन मोही ॥

इति अस्थाई ॥ जब जब भीर बनत आवे द्वार

तेरे मनत तब तब देत धीर मार ऊषो तोही ॥

इति अंतरा ॥ महिष असुर एक स्यो जोर जग

त ह्वेमें कीनो शोर मच्यो जापें अंध चोर मार्यो

तैने आन अवे कीनो देव तोही ॥ सर नर मनी

२रे २सा २नि २ध २पि २म २ग २रे २ग २म

गा· गुनी ग्यानी पूजैं तोहे बाकबानी सदा लैन ठेटा।

२ग २रे २सा १ध १नि २रे २सा

३· क· जो आधीन जगत माही ॥❖॥ इति आभोगः।

इति इमन रागस्य शाक्ति परिच्छेदः समाप्तः॥

॥ ❖ ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ इमन कल्याण रागस्य गणेश परिछेद

२सा २रे २ग २म

माह ध्रुवपद तालचार ॥ सब मिल नवना

२प २ध २प २म २ग २रे २सा २ग २रे २सा

र चले द्वार गणपत के पूजन आनंद सों।

२प २म २प २ध २नि २सा ३रे ३सा

इति प्रथमाई ॥ पुष्प चंदन धूप दीप नैवेद्य

२नि २ध २प २म २ग २रे २म २ग २रे २सा

सिंदूर केरे प्रसंत्र रीझ रीझ अंतर खगोयसों।

२सा २रे २ग २म २प २ध २प २म

इति अंतरा ॥ कमलासन मनी सिंहासन ना

ग॰
इ॰ क॰

२ग २रे २सं १नि १प १नि २रे २सं २ग

पैं ठाढी राज बैठे देखिहै निहाल भैत गौरी नं

२रे २सं २म २पि २प २नि ३सं ३रे ३सं

के नंदसों ॥ आधीन है हाथ जोड कहै विन

२नि २प २पि २म २ग २रे २म २पि २म २ग

ती सुनो मोर विघन हरन नाम तोर शिवनं

२रे २सं

के चंदसों ॥ इति आभोगः ॥ राग इमन कल्या

२प २पि २म २ग

ण ध्रुवपद गणेश ताल चार ॥ आये है तेरे।

२रे २ग २म २पि २प २पि २म २ग २म

द्वार गावके अधार तेरो विघन हरण प्रभ।

निर्गुण निरंकार पूरणब्रह्म भगवान किनहे

ने ना पाई जात ॥ इति प्रस्थाई ॥ सुर नर मुनि

ग्यानवान करत रहितहै जो ध्यान मिलत निशा

न नाहि कोई तेरी जात ॥ इति अंतरा ॥ कथ

न मेंना आवे नाम धाम ग्राम काहू नाही व्यापक

सबहू के माही डाली डाली पात पात ॥ इति

गा॰ विविध बात एक हू पवेंग नाहि रोख हूर करत उ
इ॰क॰ तपात आधीन हुके वेग गावत जो दिन रात ॥

इति आभोगः ॥ इति इमन कल्याण रागस्य ।
बल परिच्छेदः समाप्तः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

२

अथ इमन कल्याण रागस्य शक्ति परिछेद मा

२प २ध २म २ग २म २ग २रे

ह ध्रुवपद ताल चार ॥ जै जै जै देवी सुरनर

२म २ग २रे २सा १नि १ध १नि २सा २रे २ग २म २ध

मुनी अमर सेवी भक्ति मुक्ति दायनी श्रीनग

२म २ग २रे २सा २म २प

र कोट कालिका ॥ इति अस्थाई ॥ मधुकैट

२नि ३सा २रे ३सा २नि २प २ध २म २ग २रे

भ महिष शोर धुम्रलोच चंड मुंड रक्तबीज।

२सा १नि १प १नि २सा २ग २रे २सा

सुंभ निसुंभ दले श्री अंबालिका ॥ इत्यन्तरा ॥

गा. ३.क.

नेद चार प्रकटि ग्रान केमहे कीयो विधंस वि
दगिरी बसन जाय भक्त प्रती पालिको ॥ ग्रा
धीन दीन आवे द्वार तेही तेही करें प्रकार।
तीन भूपनमें यार युवा वृद्ध बालिको ॥ इ
तिश्राभोगः ॥ राग इमन कल्याण ध्रुवपद
शाकि ताल चार ॥ या सिद्धि सिद्ध करनीभवा

अथ इमन कल्याण रागस्य ख्याल परिछेदमाह ॥

२सं २रे २ग २प २म २ग २रे २सं

ध्रुवपद ताल चार ॥। परमेश्वर नारायण मन

२ग २रे १नि १ध १प १ध १नि २सं २रे २ग २म २ग

वाणी हू ते भिन्न कथ्यो नाहि जात कहे अगम

२रे २सं २प २ध २सं २रे

अगाधज्ञ ॥। इति अस्थाई ॥ अविनाशी ब्रह्म

२ग २रे २सं २नि २ध २प २म २ग २सं २रे २सं २प २ग २रे

क निर्गुण निरंकार देव भेष नाही पावे थकेके क

२ग २रे २सं २ध २प २म २ग २रे

र समाधज्ञ ॥। इति अंतरा ॥। सिद्ध साय सेन्या

गा.
ह्रू. क.

सो जती जंगम और उदासी करत रहित दिन रै
न तेरोही गुणगायन्न ॥ वेद शास्त्र और पुराण स
नकादि ग्राट करत ध्यान देषत नाही कहूं नि
शान आधीन ह्वेको यही वखान वखशा गुण
गायन्न ॥ इत्याभोग: ॥ राग इमन कल्याण ध्रु
वपद वल ताल चार ॥ जा तेरी गुणगाय गति

२नि २सं २रे २सं २नि २प २ध २म २ग २रे

हरण दीन हेको भाव दैन मोह पै जो कृपा की

२प २नि २रे २सं २प २ध

जो करे तब चैनन्ह ॥ इति अंतरा ॥ सन्त मा

२म २ग २रे २सं २नि २प २नि २सं २रे २ग २ग २म

य नर नारी जती त्यागी संसारी हाथ जोड से

२ध २प २ध २म २ग २रे २सं २ध २म २प २नि

व करें करके भक्ति बैनन्ह ॥ हे आधी ठाडे

२सं २रे २सं २नि २प २ध २म २ग २रे २सं २नि

हार ऊक ऊककरें नमस्कार करके प्रसन्न

२प २नि २सं २रे २म २ग २रे २ग २रे २सं

वेग हरन वांछित फल लैनन्ह ॥ इति आभो

ग· गः॥ ❖ ॥इति इमनकल्याणरागस्य स्वर्प्र

३·क· भेदः समाप्तः॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ इमन कल्याण रागस्य हर्ष्य परिछेद मा

२रे २ग २म २प २ध २नि

ह ध्रुवपद ताल चार ॥ ग्रीष्म को भूप तेज ह

२ध २प २म २ग २रे २ग २रे २स

प तिमिर अरी रघुकुल को ताता ॥ इति अस्था

२म २प २ध २नि ३स २रे ३स २नि २ध २प

ई ॥ करम धरम ह्वै को प्रति पातक दरयक

२म २प २म २ग २रे २ग २रे २स २रे

रण करन रच्यो है विधाता ॥ इति अंतरा ॥ हा

२ग २म २प २ध २नि २ध २प २म २ग २म २ग २रे

दश नृप अति श्रन्नृप योगी देखैं जो मय पवा

रा॰
इ॰ क॰

२ग २रे २सा २म २ध २प २नि ३सा ३रे ३सा २नि २प

म प्रेम राता ॥ पाये दर्श सरस होत रवीको जो

२ध २म २ग २रे २सा २ध २प २नि २प २ध २म २ग २रे

प्रकट जोत आधीन दोव कमल जैसे खगत फु

२सा

ल जाता ॥ इति आभोगः ॥ राग इमन कल्याण ।

२प २ध २म २ग

ध्रुवपद सूर्य ताल चार ॥ बिनती करो नाथ

२रे २सा १नि १प १नि २रे २सा २रे २ग २म २ध

तुम पै अनाथ हो संसार रूप दुःख माही असो

२म २ग २रे २सा २म २ध २प

दिन रैन न्ह ॥ इति अस्थाई ॥ तेरो नाम दुःख

३

अथ इमन कल्याण रागस्य शिव परिच्छेदमा-

२रे २ग २म २प २ध २नि

ह ध्रुवपद ताल चार ॥ जटा जूट सीस गंगा ब्या-

२ध २प २म २ग २रे २ग २रे २सा

ल सोहे अंग अंग चंद भाल धारी ॥ इति अस्था-

२म २प २ध २नि २सां २नि २ध २प २म

ई ॥ रुंड माल मृगछाल पारबती संग सजत

२ग २रे २ग २रे २सा २रे २ग २म २प

देह भस्मधारी ॥ इति अंतरा ॥ डमरु त्रिशूल

२ध २नि २ध २प २म २ग २म २प २म २ग २रे

कर बैठे पिनाक धर बार बार कर समाय बांधें

रा॰
इ॰क॰

२ग २रे २सा २म २प २ध २नि २सा २नि २ध २प
गिरधारी ॥ नेंदीगण हूंकी छब वर्णन कैसे के

२म २ग २रे २ग २म २प २म २ग २रे २ग
मे को बोले नाथन्हकी मूरत लगत प्राधीन।

२रे २सा
प्यारी ॥ इति आभोगः ॥ राग इमन कल्याण।

२ग २म २प २ध
ध्रुवपद शिव ताल चार ॥ सुमरत जो एक

२प २म २ग २रे २सा १नि १ध २प १ध १नि २रे २सा
अक्षर भक्ति मन दृढ कर रैन दिन ध्यान धर

२रे २ग २म २प २ध २प २म २ग २रे २सा
रीक शंभु हो प्रसन्न कैहत मांग लीजो बर ॥

शि॰र॰
१

इतिअस्थाई ॥ हाथ जोड कहे जो अहरक्कण

तिहारी शिवजी शंकर देत हो असीस मोकों

गावें जाके सीस कर भस्म होय तरत जर ॥

इतिअंतरा ॥ पद नथाल्ह बोले बोले अस

रहिया नवही डोले निचेकरके देवि वरभ

समकैरें पिनाक धर लेजामे गौरी अपने च

गा॰
३॰ क॰

२म २पि २प २नि ३सं ३रे ३ग ३रे ३सं २नि

र ॥ अमर आँव देव के हर उठे भाग घर ह

२ध २पि २म २ग २रे २सं १नि १प १पि १म

र कर आगे नाच पाछे निसर खबर पाईगि

१पि १प १नि २रे २सं २ग २म २पि २प २पि २म

र वर घर आधीन होके मोहिनी म्हरत द्रग्य

२ग २रे २सं

कीयो भस्मा नर ॥ इति आभोगः ॥ ❖ ॥

इति इमन कल्याण रागस्य शिव परिछेदः

समाप्तः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥ ❖

अथ इमन कल्याण रागस्य दशावतार परि

छेद माह ध्रुवपद तालचार ॥ तेरी अगाधग

ती लागो न जाये नांही नाथ भक्तन हित तेने

आप कौन कौन कीये रूप ॥ इति अस्थाई ॥

कहे मछ कछ बाराहे नर सिंह बामन बन।

छीन बल छले भूप ॥ इति अंतरा ॥ परशुराम

२धे २प २नि २प २धे २म २ग २रे २सा १नि १प

गा० गामवेद गावण मारदीन ग्रानेद लेक गाये कीं

१नि २सा २ग २म २प २प २प २म २ग २म

३.क. नोबेध कमलकीय गान्यो कप ग्रान ग्रंथ पढे

२ग २रे २सा २म २प २नि ३सा ३रे ३सा २नि

वे ग्रंति ग्रन्थ ॥ कमल बोद्ध कल्की होये दीन

२प २धे २म २ग २रे २सा १नि १प १नि

हे की पीर बिये केमत कहपलमें गोयें दम

२सा २रे २ग २म २धे २प २धे २म २ग २रे २ग २रे २सा

ग्रवतार कमल कमममक ग्राधीन है मधुप

इति इमन कल्याणरागस्य दशावतारपरि।

[illegible]

मधुकैटभमैमहिषासुर सुंभ औार निसुंभ दैत्यमा
रे तैने एक छिन जब जब असुर बढे तब तब
देवन हित निस्तार पिछारैं। सुर मुनी गुनी ज्ञा
नी ध्यानी जती योगी जंगम गृहस्थी औार वि
हंगम से मैं दिन रैन करत चैन तेरी माया है।
कों उबयारैं। पूरब पछम औार पहाड ध्यावें।

२नि २प २धि २म २ग २रे २नि १नि २नि २रे २ग

गा॰ तोहे सभ संसार पावत फल बार बार आधीन

२म २धि २म २ग २रे २ग २रे २नि

सिं॰ उ॰ दीन ह्वैके सेवे पातक निवारै। इत्याभोगः। ❖

इति सिंधुरागस्य शक्ति परिच्छेदः समाप्तः ॥

35

2

अथ सिंदरागस्य शक्ति परिच्छेदमाह ध्रुवपद ता

२रे २ग २म २ध २प २नि २प २ध २म

ल चार ४॥ आयेहैं तेरी शरण पूजे जो चरण सदा

२ग २रे २सं २नि २सं २रे २म २ग २रे २सं २म २ध २प २नि

तूं भवानी दयानी सर्व जगत तारणी। इंद्र ब्रह्मा श्री

२सं ३रे ३ग ३रे २सं २नि २प २ध २म २ग २रे

र देव करत रहित धारी सेव चाहत मया कल्या

२सं २नि २सं २रे २ग २रे २सं २रे

नी दरिद्र डाव निवारणी। इतिस्थाई अंतरा॥ स

२ग २म २ध २प २नि २प २ध २म २ग २रे २सं २नि

स दीप नवखंड चौदा भुवन ब्रह्मांड सिमरें तोहे।

रा॰
सिं॰डु॰

२स २रे २ग २म २प २म २ग २रे २ग २रे २स

अखिंड पाणी हूंको देतदंड असुर सभ विडारणी।

२म २प २ध २नि ३स ३रे २ग ३रे ३स २नि २ध २प

धजा नरेल और सुपारी लगत भेट अतही प्या

२म २ग २रे २स १नि २स २रे २ग २म २ग २रे २स

री आधीन दीन आयो द्वारे जान भक्त तारणी॥

२नि २ध

राग सिंडु धुवपद शाक्ति ताल चार ४॥ याचे॰

२प २म २ग २रे २स १नि २स २रे २ग २म २प

डी प्रचेंड हूके चेंड मेंड हेड किये रक्तबीजय

२ध २प २म २ग २रे २म २ग २रे २स

अलोचमोचै और असुर सब विडारै। इत्यंतरा।

२म २प २नि ३सां ३रे ३ग ३रे ३सां

इतिस्थाई। नवखंड सपदीप तीनलोक चौदे

२नि २प २पं २म २ग २रे २सां २पं २प २नि २प

भवन कीयो नाही गमन कहूं सभहूमें रमन

२पं २म २ग २रे २सां २म २पं

तेरो दियाल दयावान है। इति अंतरा। जातपा

२प २नि २प २पं २म २ग २रे २म २पं २प २पं

त तैं रहित रेख भेख काउ नाही कहूं पिता ए

२म २ग २रे २म २ग २रे २सां २नि २ग २रे

त कहैं योगी अवधूत बन रंग रंगमें अयान

२सां २म २पं २प २नि ३सां ३रे ३ग ३रे ३सां २नि २प

है। अल्हाद कर समाय करत रहित तेरी याद

२म २म २ग २रे २मै २पि २ध २नि २ध २पि २म २ग

गा॰ दर्स तै जो तेरे हीन दीन प्राधीन भये पायोनाक

२रे २म २ग २रे २मै

सिं॰ ङु॰ हूं कर थके बहुत ध्यान ते ॥ इति सिंड राग॥

सप्तम परिच्छेदः समाप्तः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ सिंड रागस्य ब्रह्म परिछेद माह ध्रुवपदताल: ४

२नि २सं २रे २प २ध २म २ग २म २ध २नि २प २ध

तू अपरम अपार निरंजन निराकार परम जोतअ

२म २ग २रे २सं २ग २रे २सं २म

लष पुरुष अविनाशी नारायन। इतिस्थाई। अवा

२ध २प २नि २सं २रे २ग २रे २सं २नि २प २ध २रे २सं

क अकथ अगम अगोचर अकाल मूरत नादीसे

२रे २ग २म २ध २म २ग २रे २सं

कोई योगी थकत होत कर नारायन। इति अंतरा:

२नि २सं २रे २प २ध २म २ग २ध २नि २प २ध २म २ग २रे

सुर नर गंधरव यक्ष विद्याधर पंडत जन ध्यान।

२पे २म २ग २रे २सं २रे २म २पे २ध २पे २म २ग २रे

रा॰ सिंदु॰ कर कर चकत ह्वै रमत रहित स्वरन वेद नागाय॰

२सं २म २पे २ध २नि ३सं ३रे ३ग ३रे ३सं २नि २ध २पे

न। कै कोट ब्रह्मांड छाई है अखंड कला अंत हू है ना

२म २ग २रे २सं २रे २म २पे २ध २पे २म २ग २रे

पायो जात आधीन परबीन हिरदे अनन्त धाराय

२सं

न॥ इत्याभोगः॥ राग सिंड ध्रुवपद अन्यत बल

२म २पे २ध २नि २ध २पे २म २ग

ताल चार॥ ४॥ आदनाही अंतनाही स्वरन और स्व

२म २पे २ध २नि २ध २पे २म २ग २म २ग २रे २सं

रननाही करके बखान कोई अनंत भगवान है॰

को ७.२

ॐ अथ सिंधुरागारंभः येह सिंधुराग से
गीत रत्नाकरके मतमें श्रीरागका पुत्र
कहाहै अर हेमंत इसकी ऋतुहये और
ऋषभ इसका ग्रह स्वरहै अर इसकाम
मय अपन्यासहै और येह राग संपूर्ण सा
तस्वरहै अर ब्रह्मा ऋषिहै और अग्निदेव

ताहै अरु सिंबीज है और गायत्री छंद है य
र इसकी औढ्यानायिका हये और कृष्णना
यिकहै अरु वीर रस इसका है ॥ अथ सिंधुरा
ग प्रकीर्ण विधिः ॥ ॐ पीलोरागोतिविख्या
तः सावेरीगेन विमिश्रितः सिंधुरागोतिमे।
श्रोकीर्णपराह्नेगानमिष्यते ॥ रिषभोंशग्रह

ग·
सिं·
२

नाशो विषभेदादिकर्म्मवर्ज्जना ॥ इति सिंधुरकीर्ण·
विधिः ॥ अथ सिंधुरागस्य रसायनम ॐम
स्यश्री सिंधुरागस्य ब्रह्मा ऋषिर्वागिरीर्देवता
गायत्री छंदः सिंबीजं स्वामी ह्रसिद्ध्यर्थेन
येविनियोगः ॥ अथन्यासः ॐ सिं सिंधुर
गंगुष्टाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादिन्यासे

कुर्यात्। अथ सिंधुराग पूजनम्। आसने
पाद्ये अर्घ्ये आचमने स्नाने मधुपर्कम्।
अनुलेपने वस्त्रे यज्ञोपवीते गंधे अक्षते
पुष्पे धूपे दीपे नैवेद्ये दक्षिणा बलिं दद्या
त् प्रदक्षिणं पुनराचमनीयं पुष्पांजलिं
सर्वं पूजने कुर्यात्॥ अथ सिंधुरागध्याने।

ॐ यथा स्वच्छः श्रवीसोहृच्छभ्रनकवचोरोपि
लोवद्भधारी । उर्गादैवैकभक्तो विशाद पट
घरोलेलन्नादोवलीयान् । सिंधुरागः प्रबी
वान् ब्रह्मरतिसमरेकोपितान्मूपतीन्वै । दे
नाहकलोकमध्ये प्रदिशाजसनतंभ्रेगाले
मञ्जनाने ॥ इति सिंधुरागध्यानम् ॥ अथ

सिंधुरागमंत्रः ॐ सिं सिंधवे नमः । इति मंत्रः
अथ जपसंख्या द्वादशलक्षम् द्वादश स
हस्रं वा ।। अथ सिंधुरागदेवतामंत्रः ॐ श्र
धवे नमः ।। अथ श्रीछानायिकलक्षणम्
येहा । प्रतिविविचविभ्रमदा श्रीछाप्रवर
वधानि । जेकी दीपतिहृतिकाचियरिमि

रा. सिं. ५

लवै आनि ॥ कवित्त ॥ हैं गति मंद मनोह
र के सब आनंद कंद हिये उलहै है । और
विलासनि कोमल हासनि अंग सुबासनि
गहे गहै है । बंक विलोकनि कौं अवलि
कि सुभाइकै मंद कुमार रहै है । एई तो
कामके बान कहावत फूलनके विथि

मूलि कहै है ॥ इति श्री का वि विचितालक्ष
णम् ॥ अथ धृष्टनायिक लक्षणम् । दोहा
लाजन गारी मारकी छाड दई सबत्रास
देखे दोषन मानई धृष्ट सो केसोव दा
स ॥ कबित्त । नेह भरे लेले भाजत भाजन
कौन गनै दधि हथ मठाए । गारि दियें ।

गा॰
सिं॰
५

तें हमैंन बरजे घर आवतहैं जनु बोल प
ठाए। लाजकी ओर कहो कहों के आवजे
गनी एते सबै गनठाए। मामी पियें इन
की मेरी माई कोहैं हरि आठहू गांठ अठा
ए॥ इतिप्रहनायिकलक्षणम्॥ अथ।
पियुरागस्यसृंगार बीरमलक्षणम्। दोहा।

५

होय वीर उत्साह रस गौरव रन उतिअंग
अति उदार गंभीर कहि केषव राइ अभं
ग ॥ कवित्त ॥ गति गजराज साजी देह
की पिति वाजी लावण्य भाव आदे पो-
ति वल चालसों । केसोदास मंद हास-
असि ऊच भट भिरे भेट भये अति भट ।

रा. सिं. ५

भाल नष जालसों । लाज भाज कुलकानि
सोच पोच भय मानि भौंहे धनु तानिवान
लोचन विसालसों । प्रेम को कवच कसि
साहस सहाय कै लै जीति रति रन आजु ।
मदन गोपालसों ॥ इति वीर रस लछणं
अथ सिंधु राग सप राठक्रमः । षडज स

अथ गूजरी रागिनी सूर्य परिछेद माह

२ग २रे २सा २म

ध्रुवपद सूर्य ताल चार ।। अरुण अरुण

२प २ध २प २म २ग २रे २ग २म २प

मंडल जग विगत पाप करण सदा वि-

२ध २नि ३सा २नि २ध २प २म २ग २रे २सा

शाद बुद्धि करण मारि दर्शन जिह भारी·

२म २ध २नि ३सा ३रे ३सा

इतिस्थाई ।। अति प्रकाश अधिक जग

२नि २ध २प २म २ग २रे २ग २म २प २ध

त इतर सकल विकल रहे इंड सगण

मू॰ ता॰

उडपन निभ ताम दिहे थारी ॥ इतिग्रेतरा॰
वारी जब दर्श देत लेत स्वप्न गोचर वि
म परमात्मा रूप अनूप वेद ग्यान सारी ॥
बहि अंतर व्याप रह्यो करुणा कर बाल
निधे सधी दान दीजो यश रहे तुव उवा
री ॥ इत्याभोगः ॥ गूजरी रागिनी ध्रुवपद

२ग

री रागिनी ध्रुवपद शिव ताल चार ॥ स

२म २ध २प २ध २म २ग २रे २ग २म २ध २प

दा मङ्गल मोद ध्रुक भक्त ताप पाप हरण

२नि २सं २नि २प २ध २म २ग २रे २सं

धरण शिखर चंद किरण गंग वहे जो

२म २प २नि २सं २ग

की ॥ इतिस्थाई ॥ सित विभूति पाप ह

२रे २सं २नि २प २ध २म २ग २रे २ग २म २ध

रत जगत जनन पूत करत गायि उरस

२प २नि २प २ध २म २ग २रे २सं

बाऊ धरत सुजन प्रकष तोकी ॥ इत्ये

गू॰रा

२ग २म २प̂ २प २प̂ २म २ग २रे २ग

तरा ॥ शंभु भक्त रूष भयोगि भस्म जटा

२म २प̂ २प २नि २सं २नि २प २प̂ २रे २ग २म

धरत प्रटत विपन गयो भयो हृषण रा॰

२ग २रे २सं २म २प २नि २सं २ग

नम डुक थांकी ॥ धाइ पहो भक्तन हि

२रे २सं २नि २प २प̂ २म २ग २रे २ग २म २प̂

त प्रहित थार गरहिं फहो लगत भस्म

२प २नि २प २प̂ २म २ग २रे २सं

पाप हरो शांत हदो फांकी ॥ इत्याभो

गः ॥ इति गूजरी रागिनी शिव परिच्छेदः

अथ गूजरी रागिनी शिव परिछेदमाह।

२सा २ग २म

ध्रुपद शिवजी ताल चार ॥ परमदेव म

२प २ध २प २म २ग २रे २सा २रे

हादेव आशु वर विधान करत निज भ

२सा १नि २ध १नि २सा २ग २रे २सा

क्तन परम सुखद संपत बहु दाता ॥

२म २ध २नि २सा ३रे ३सा

इतिस्थाई ॥ एक समय रमानाथ लिंगा

२नि २ध २प २म २ग २रे २सा २रे २सा १नि

र्चन करत भये नित हि भेट सहस कम

मू॰ ता॰

२प २नि २सं २ग २रे २सं

ल निजहिं सुकर लाता ॥ इतिश्वेतरा ॥ प

२सं २ग २म २ध २प २ध २म २ग २रे २सं २रे २सं २नि

रम प्रीति युक्त सुभक करत रहें प्रनिमत वि

२प २नि २सं २ग २म २ध २प २ध २म २ग २रे

सु ठक हीन कमल पेषि भक्ति सुमनता

२सं २म २प २नि २सं २रे २सं २नि २प २ध

ना ॥ विकस कमल निजहिं नयन अर्पि

२म २ग २रे २सं २रे २सं २नि २प २नि २सं २ग २म २ध

ण कर प्रभि कहो यहो वक्र मदित श्री

२प २ध २म २ग २रे २सं

म विसु कर सुहाता ॥ इत्याभोगः ॥ मूज

ताल चार ॥ ऊः ब भीर हरण दव निज भ

क्तन रछ्छ पाल अपर धर्म त्याग जिन्हे वि

सु शरण ठानी ॥ इतिस्थाई ॥ जगत मो

ह्रोह त्याग भाग उछ जनन मपदि विप

ति हरण नाम जपैं बुद्धी परम ज्ञानी ॥

इतिश्रेतरा ॥ हेम किशिपु असर नातस

म॰ गा॰ ह्लाद नाम त्रास चास दीये विविध पिये

अमृत नाम बानी ॥ नाहितजी पिता त

ज्यो खंभ फार न्रहरि निकस भ्रमर उर

म्फारि थारि भक्त लाज जानी ॥ इत्या

भोगः॥ इति मुजरी रागिनी बिल पति

छेदः ॥ ❖ ॥

अथ गूजरी रागिनी विलपरिछेदमाह

२ग २म २ध २प

ध्रुवपद विलः ताल चार ॥ भक्त जनन

२ध २म २ग २रे २सा २नि २प २सा २ग २म

रछन हित धाव चक्र गदाधरें जहां ज

२ध २प २ध २म २ग २रे २सा

हां भीर परे हरें धाइ बिगरे ॥ इतिस्थाई

२म २प २नि ३सा ३ग ३रे ३सा २नि

करी करी टेर सुनी पीरहनी चनी ताम

२प २ध २म २ग २रे २सा २ग २म २ग २रे

धर्म राय विपति हरी त्ख्म कीयो जग

मृ॰ गा॰ री ॥ इतिखेतरा ॥ जब पांडव लाषि भव
न भोज फसे वसे नहो थीवरि इक पांव
सतन सहित नीट पगारी ॥ जरी नहो॰
भक्त वचै टरी करी प्रथम नाम निकस॰
गये बालबिल बुद्धि दीनि सगारी ॥ इत्ता
भोगः ॥ रजरी रागिनी ध्रुवपद बिलः

२ग २म
गिनी ध्रुवपद गणेश ताल चार ॥ आदि ग
२प २ध २नि २ध २सं २नि २ध २प २म
मन परब्रह्म धारि हारि पीर धीर धरण मेक
२ग २रे २सं २म २प २ध २प २म २ग
ट गण दलन हेत रदन एकधारी ॥ इति
२म २ध २नि २सं २ग २रे २सं २नि २ध
ध्याई ॥ उदर बृहद कटि पुष्ट श्रेतरायखा
२प २म २ग २रे २ग २प २ध २प
य खाय धाय धाय अगिन दलैं हलि गाम
२म २ग २ग २म २प २ध २नि
न चारी ॥ इति श्रेतरा ॥ छिपे छिपे श्रेतराय

गू॰ रा॰ अंकुश करि ऐंचि लेन देत देत चोट तिह्रे

निह्रे गर्व भारी ॥ ऐसे उपकारि अभय ।

धारी होयें बालनिधी करी वदन सावहि

मदन मदा मोद कारी ॥ इति आभोगः ॥

इति गूजरी रागिनी गाणेश परिछेदः ॥

अथ गूजरी रागिनी गणेशपरिक्रेमाह ध्रु

वपद गणेश ताल चार॥ गुणदाता अंत

हिं सुंदर बुद्धि विशद करण हार चारुमु

कुट धारि एक रदन सदा ध्यावो॥ इति

स्याई॥ भावित मनन यिउ चार कोडार

ण गान गामक संकीरण छाया लगामे

मृ·गा· द सकल पावो ॥ इतिअंतरा ॥ ताल भेद

गुण द्रुत लघु गुरु प्लुतादि सकल क

ला साधन विन जास कृपा पाय भेदगा

वो ॥ सभा मध्य मदन मदन प्रति उपमा

धारि रहो गण नायिक चरण शरण ।

धारि चित्त लावो ॥ इत्याभोगः ॥ मंजरी रा

२ध २प २म २ग २रे २सं २नि २ध

ध्रुवपद। विरहे तपत ज्वर अतहि विक

२प २ध २नि २सं २ग २म २प २म २ग २रे

ल भई मरक मरक देह गायिका निहा

२सं २म २ध २नि २सं

रीहै॥ इतिस्थाई॥ उतकंठा भारि का

२रे २सं २नि २ध २प २म २ग २रे

रि सांस लेत सीत कार करक करक

२सं २म २प २म २ग २रे २सं

कपत तन अतनें की जारीहै॥ इत्येतरा·

२ध २प २म २ग २रे २सं २नि २ध

पेषि के गुपाल इक गोपिका पुकारि।

२प २ध २नि २सं २म २प २म २ग २रे

ग॰ रा॰ अब अबलाकि अवय दृढ पलकी उघा॰

२सं २म २ध २नि २सं २रे २सं २नि २ध

री है ॥ दीजे नाही औषध जुधाइ अबबा

२प २म २ग २रे २सं २म २प २म २ग

लनिधी अतहि कठोर चित्त कहे जगत

२रे २सं

मारीहै ॥ इत्याभोगः ॥ ❖ ॥ इति रजनी

रागिनी शाकि परिछेदः ॥ ❖ ॥

अथ गूजरी रागिनी प्राक्रिपरिछेदमाह ॥

ध्रुपद आको ताल चार कवित्त ॥ अंतही

केद अंतही कुमारी अति प्यारी मनमोह

न की चेरी निज टारी कारी घटा फेरि

पेषिहै ॥ इति स्थाई ॥ पेषत ही स्याम रू

न मन माही आन बसे विरहकी विथा

गृ॰ रा॰

२सा २म २ग २रे २सा
कि पीर ग्रतहि विसेषिहै ॥ इतिअंतरा ॥

२ग २रे २सा २म २धि २प २धि २म २ग
श्याम स्न के आनन कीनि भा ह्र जिय करि व

२रे २सा १नि २प १नि २सा २ग २रे २सा
नि ग्रलष ग्रमित घटा नैन नीर रेषिहै॰

२म २प २नि ३सा ३ग ३रे ३सा २नि २प
दशन करक नैन चपला चमक इंद्रय

२धि २ग २रे २सा २म २ग २रे २सा
वष ग्रथर वैसी गायिका जे देषीहै ॥३॥

आभोगः॥ गूजरी रागिनी ताल चार ॥

टं॰ रा॰
१

ॐ अथ टंक श्रीः रागिनी प्रारंभः हनुमान्मतसें
येह मेघ राग की स्त्री है। और संपूर्ण है। श्लोक
षड्जांश ग्रह न्यासा टंकश्री मेघ भामिनी। सं
पूर्णाच चतुर्थेह्नो यामे गातं प्रयुज्यते ॥ अब इ
स रागिनी का अंश न्यास ग्रह षड्ज है और इस
का समय दिन के चौथे पहर में है अब कान्ह

डा भैरव अरु मालू श्रीराग तथा सारंग इन सें उ

त्पन्न होती है। श्लोक। कान्हडा भैरवी मारु श्री

सारंग रागश्च मिश्रिता टंक श्री सैंधव विज्ञेया मेघ

रागस्य वल्लभेति प्रकीर्ण विधिः॥ इसकी वर्षा

ऋतुहै इसका देवता बला है अरु बला ही ऋ

षी है अनुष्टुप छंद है टंगीजहै और प्रोषितपति

टे॰रा॰
२

का नायका है अरु अनुकूल नायक है और करुणा

रस है ॥ अथ टेक श्रीः रागिनी साधनम ॥ ॐ अ॰

स्यश्री टेक श्री रागिनी मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अनु

ष्टुप छंदः श्री ब्रह्मा देवता टे बीजं स्वाभी श्रार्थ सि

द्ध्यर्थे जपे विनि योगः ॥ अथ टेक श्री रागिनी॰

कर न्यासः । ॐ टे अंगुष्ठाभ्यांनमः ॥ एवं हृद

२

यादिन्यासं सर्वं कुर्यात ॥ अथ टंकश्रीः रागिनी
पूजां विधाय षोडशोपचारैः ॥ आवाहने । आसने
अर्घे । आचमनीये । वस्त्रे । यज्ञोपवीते । गंधे । अ
क्षते । पुष्पे । धूपे । दीपे । नैवेद्ये । दक्षिणा । अदक्ष
णे । पुनराचमनीयम् ॥ इति टंकश्री सर्वं पूजने
कुर्यात ॥ अथ मंत्रः । ॐ टंटंकश्रियेनमः ॐ ॥ ज

टे. गा.
३

पेऊर्यात्। अथ जप मंत्रो। १२५०००॥ अथ देवता
मंत्रः॥ ॐ बेबलणे नमः ॐ॥ अथ ध्यानम्। ॐ ब
लाणे रक्तवर्णाभे पीत वस्त्रे रत्ने कृते। चतुर्भुजे
चतु बज्रे स स्रुवे स्रुच हस्त कम्॥ अथ टेकथ्री
गागिनी ध्यानम्॥ ॐ नलिनी दल श्यामायो। प्र
सन्नाव विये गिनी। सर्वांग वर्णा चेंद्रास्या ग

३

गिनी टेक मेत्तिका ॥ अथ टेकश्री: भाषा ध्यानम

सोवत है नलिनी दल मे जौ सुंदर मैंन के बाण

हनी । प्रीतम दूर गये जब के तब से अति इषित

रहित खनी । प्रेम बिना मछली थल में जिम आ

कुल व्याकुल ता से हनी । सुंदर रूप अनूपम रा ।

गिनी खेद भावी तिया टेक बनी ॥ अथ प्रोषित:

टे॰ रा॰
४
५

पतिका नायका लक्षणम्। दोहा। जाको पिया वि
देश है विरह विकल तिया होई। प्रोषित पति
का नायका ताहि कहत सब कोई॥ अथ अनुकू
ल नायक लक्षणम्। दोहा। प्रीति करै निज ना
रि सौं पर नारिन प्रति कूल। केशव मन वच कर्म
कर सो कहीये अनुकूल॥ अथ करुणा रस

४

लनणम ॥ सवैया । दूरतें उंडभि दीह सनीन गुणी

जन पुंजकी गुंजन गाढी । तोरण तोरण दूरवजे

वरमावत भाटन गान छाडी । विघन मंगल मे

उ पढे अरु देषेन वार वधू ढिग ठाढी । केशव

तान के गान उतारति आरति आरति मानहो वा

ढी । इति करुणारसः ॥ अब टंकश्री रागिनीका

येह ठाट कथन करी है ॥ षड्ज सम रहता है। ऋ

षभ उतरा है। गंधार चढा है। मध्यम चढा औ उ

तरा है। पंच सम रहता है। धैवत किंचित् उतरा।

निषाद चढा है ॥ अथ टंकश्रीःरागिनी सरगमः

सानिनिरेगगरेसा निनिनि रेरे मपध मपम ग

रेपमसा नि पपप ममम गगरे गगरे सा ॥ इति।

स्थाई ॥ अथ अंतरा ॥ गगमम सानिरेसा सासारेग

सानिधप धधमप मगरे गगरे सारे सारे रेप गरे

पमधसारे सागरेसा निध मग धध मप मगरेग

गरेसा ॥ इति सरगम: ॥ अब टेकश्री रागिनीका

गत येह कहिते है ॥ डिठ डा डिठ डाठा डाडाठा

डिठ डा डिठ डा ठाडा डाडा। डिठ डा डिठ डाडा

टे॰ ग॰
८

6

डाडाठा। डिठ डा डिठ डाडा डाडा डा॥ इतिस्थाई

स्थ संतरा॥ डिठडा डिठ डाडा डाडाठा। डिठ डा

डिठ डा डा डा डाडा। डिठडा डिठ डाठा डा डाडा

डिठ डा डिठ डाडा डा डा डा॥ अथास्थायालापः।

ननरी इना आनन उनन उआनन अदननरी तने

नना उननना आनना ननन रत्र नातुम॥ इतिस्था

२म २प ३सं २नि ३सं

स्थाई ॥ अथ अंतरा ॥ तनन अदनते आनन तुम्

२नि ३सं २नि २प ३सं २नि ३रे ३सं २नि २प

तानुनै नना तन नरी नना आन तान ततुम् नत

२धं २प २धं २म२ग २म २ग २रे २नि२ग२रे २सं

तरीन तानुरी दना नना आन तान रान तानुम्

अथ यास्या ध्रुवपद गान मारू ॥ रागिनी टेकथी

ध्रुवपद ताल चार। ४॥

རེ་ག་
༡

༡

अथ टेकश्री रागिनी ब्रलपरिछेदमाह।

ध्रुवपद ब्रल ताल चार॥ अगम निग-

म जाम भेव लेव सकत नाहि जगत म

मसदा शुद्ध बुद्ध अनंत कला भारी॥

इतिस्थाई॥ रूपरंग रहित सदा एक रू

प व्याप रहो कह्यो नही जात कछुक।

टे॰ गा॰

२नि २प २म २ग २स २नि २प

अलाव रूप मारी ॥ इतिश्रेतरा ॥ एकक

२म २प २ध २नि २ध २प २म २रे २प २म

है ज्ञान रूप सेवित चित रूप जगत मे

२रे २ग २रे २स २ग २म २ग २रे २म २ग

धा निज बल अमार बुद्धि परत धारी ॥

२म २प २नि २स २रे २स २नि २प २म २ग २प

जब ईश्वर दया दृष्टि प्रेरित निज बुद्धि

२ध २प २म २ग २रे २प २म २ग २म

अचल मन विकल्प त्याग बाल आत्म॰

२ग २म २ग

रूप धारी ॥ ० ॥ टेकश्री रागिनी ध्रुवपद

२सा २नि २ध २म २रे २म २ध २नि
ब्रह्म ताल चार ॥ दृश्य जगत प्रकट भयो

२प २ध २म २रे २सा २ग २रे २ग २म २ध
मन समुद्र बहुत तरंग रंग रंग बुद्बुद ।

२प २ध २म २ग २रे २सा २म
जिमे भिन्न भेद पायो ॥ इति स्थाई ॥ जब

२ध २प २नि ३सा ३रे ३ग ३रे ३सा २नि २प
तरंग मिटत जात बुद्बुद निर्वात होत

२ध २म २रे २सा २ग २रे २ग २म २ग
जल समान सकल विकल एक प्रबल ।

२रे २सा ३सा २नि २ध २म २रे २म २ध
पायो ॥ इति अंतरा ॥ तहत मन भ्रमतत्र

टे·रा·

तत त्याग सेग अभि मति निज देह गेह भि
न्न जान आत्म ध्यान धायो ॥ विषयनकी
वास त्याग जोगि जस्यो भ्रमर रहे कहे बा
ल जगत दुःख मिटत निज उभायो ॥ ❖
इति आभोगः ॥ ❖ ॥ इति टेकश्री रागि
नी ब्रह्म परिच्छेदः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ टेकश्री रागिनी शक्तिपरिछेदमाह।

२ग २म २ध

ध्रुवपद शक्ति ताल चार॥ मनमोहन।

२प २नि २ध २म २रे २ग २म २प २ध २नि

श्याम बाल जसमति गृह केलि करतह

२स २रे २स २नि २प २ध २म २ग २म २ग २रे

रत ऊःख विविध भांत ग्वालनि के स

२स २म २प २नि २स २रे २स

गरे॥ इतिस्थाई॥ भानुसुता निकट कु

२नि २प २ध २म २ग २रे २म २ध

ल कुंद पेलि केलि रची ग्वाल बाल संग

टे॰ रा॰

सकल धाइ कुल धगरे ॥ इति श्रेतना ॥ स

ति पवित्र विशद सुडहि सूद भलण कु

ल कीयो पोषि ग्वाल बाल सकल श्याम

सेग फगरे ॥ जसमति को जाइ कहो कु

ल पकर बांधलियो मनमोहन कलो म्ह

धा बादि ग्वाल जगरे ॥ म्हाव प्रसार दर्श

२रे २सां २नि २ध २म २रे २म २प २नि २प

दीन सकल विश्व जीव चीह्न प्रति प्रवेश

२ध २म २ग २रे २ग २रे २सां २म २प

शोकित मन भीत भयी नगारे ॥ तब मा

२नि २सां २रे २सां २नि २ध २म २ग २रे

या मोह्र पाश फांसि तात निजहिं जातउ

२ग २म २ध २प २ध २म २ग २रे २सां

र लगात बालनिधी छिप्यो ईश भगरे।

इति आभोगः ॥ टेकश्री रागिनी ध्रुवपद

२ग २रे २सां २म २ध

शक्ति ताल चार ॥ जगदीश्वर कमलपणाम

टे· रा·

धाम जन्म गाव लोक गोकुल मद नंद गेह

बाल रूप धारी ॥ इति स्थाई ॥ एक समय

गोप सकल इंद्र याग करण लगे पेषि

नंद कुर कह्यो का समाज भारी ॥ इति

अंतरा ॥ धारी पुन गोप कहै इंद्रयाग भा

ग सकल वृष्टि करै अन्न उदक सरभि ।

मोद कारी ॥ तब मोहन बाक कहें रजोगुण

से वृष्टि होत गोवर्द्धन परम धाम देत गा

व चारी ॥ गोवर्द्धन यज्ञ करो इंद्र कोपि

त काल मेघ अति प्रचंड हस्तिशुंड सद

धा धार मारी ॥ गोपि गोप भीत कुल धा

रण गत पेषि सकल गोवर्द्धन वामह

टे. रा. सखव जिमे उमारी ।। ग्वाल बाल गोवत्स

परम मोद धार बसे समराग्र वर्ष वर्ष ह

र्षो इंद्र हारी ।। बालनिधी परम प्रबल.

विभु माया मोह करणि परम ऋषिनदे

वन मन हरिनि भ्राति डारी ।। इत्याभोगः

इति टेकश्री रागिनी शक्तिपरिच्छेदः ।।:

अथ टेकश्री रागिनी गणेश परिछेदमाह

ध्रुवपद गणेश ताल चार ॥ शंकर गण

सकल स्वामि नामि सिद्धि करण देव दे

वन के आदि पूज्य श्री गणेश वंदे ॥इति

ध्याई ॥ जाके पद पद्म सुभग पूजन तें

सिद्धि लइ परम ऋषिन देवन मिलमि

टे.रा. टे सकल देदे ॥ इतिअंतरा ॥ अथसंर नागः

अपर सकल जगत जीव नीव नीव कर

पूजन पूर्ण कार्य होत जगत थेदे ॥ हेम

सुता नात ध्यात जान जगति बालविप्र

पदपंकज हिये धरै करै मन अनेदे ॥ ॥

इत्याभोगः ॥ टेकश्री रागिनी ध्रुवपद ग

२रे २ध २प २नि २प २ध

णेश ताल चार ।। गगन महेश प्रणाम शृङ

२म २ग २रे २सा २नि २प २सा २रे २ग २रे

शिखर मुकुट भृकुटि नाग जात लियो ।

२म २प २प २ध २म २ग २रे २सा

दियो वेद डकल भाल चारी ।। इतिस्थाई-

२म २प २नि ३सा ३रे ३ग ३रे ३सा २नि २प २ध

एक रदन सिद्धि मदन बदन विघ्न कद

२प २ग २रे २ध २प २ध २म २ग २रे २म २ध २म

न करण हरण मान केटक जन दमन च

२ग २रे २सा २रे २ध २प २नि

रण भारी ।। इतिअंतरा ।। गैरै माल नाग

टे·रा· लिपट लपट चित्र मित्र धैरै श्रेगाद भज या

रि हारि पीर भक्त सारी ॥ याही नर नक·

बरत बरण शरण हृदय कारि सकल·

कार्य सिद्ध करन विपति नित निवारी ॥

इति आभोगः ॥ ❖ ॥ इति टेकश्री राग

नी गणेश परिछेदःमाप्त ॥ ❖ ❖ ❖ ॥

अथ टेकश्री रागिनी विलम्पपरिछेदमाह ।

ध्रुवपद विलः ताल चार ॥ बनमाला य

रण हरण विविध ताप भक्त जनन हन

न करत दुर्जन जिह धर्म हानि थारी ॥

इति स्थाई ॥ कालनेमि असुर जगत वि

गत धर्म लोप कीयो देव नाक छीनलि

टे. रा.

यो दीयो दुःख भारी ॥ इतिअंतरा ॥ धारी यु

नि विनय पूर्व देवन की रमानाथ हाथ

चक्र गदा शंख सभाव धुनि उचारी ॥ धा

इ गये कालनेमि असुर सेंग युद्धकीयो

काट शिर गिराय दियो धर्म धुर उभारी

आभोगः ॥ टंकश्री रागिनी धुवपद ।

२ग २रे २ध २प २नि २सं

विल: ताल चार ॥ इंदीवर नील वर्ण स्व

२नि २ध २म २ग २रे २म २प २ध २म २ग

र्ण मुकुट चटक लटक कुंडलकी चित

२रे २सं २नि २प २ग २रे २सं

हरत बिहरत हरि नीको ॥ इतिस्थाई ॥

२म २प २नि २सं २रे २सं २नि २ध २म

वीर सिंधु मथन समय रमा निकस पे

२ग २रे २ग २म २ध २प २ध २म २ग २रे २सं २नि २प

षि महेश वर कोना यार रही नाहि मि

२ग २रे २सं २ग २रे २ध २प

ले जीको ॥ इतिअंतरा ॥ आयुबड केही

२नि २सं २नि २प २म २ग २रे २म २प २ध २म २ग २रे

टे. रा. दिहे शील बिकृत ताहि पेषि देव महादे

२सं २नि २प २ग २रे २सं २म २प २नि २सं २रे

व मुंडमालि काल टीको ॥ इंद्रादिक स

२सं २नि २ध २म २ग २रे २ग २म २ध २प

कल देव हीन जानि हानि कीये प्रति से

२ध २म २ग २रे २सं २नि २प २ग २रे २सं

दर बिस बद्यो कान गुण नीधीको ॥ ❖

इत्याभोगः ॥ ❖ ॥ इति टेकश्री रागि

नी बिसः परिछेदः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

२ध २रे २म

ध्रुवपद शिवजी ताल चार ॥ परम प्रबल ।

२प २नि २प २ध २म २ग २रे २ध २प २नि २प

चेड कोप महादेव प्रति बिरूप ऊर्ध्वजटाज्

२ध २म २ग २रे २सां २म

ट जास उग्र दमन कारी ॥ इति स्थाई ॥ यो

२प २ध २नि ३सां ३रे ३सां २नि २प २ध २म

री कर तिग्म सूल खपर हाथ नरकपाल ।

२ग २रे २सां २रे २ध २प २ध २म २ग २रे २सां

भाल नयन मैन हरण विश्व दमय चारी ॥

२ध २रे २ग २म २ध २प २नि

इति अंतरा ॥ काल मेघ सहश वर्ण प्रह ।

२प २ध २म २प २नि २प २ध २म २ग २म २ग

टे·रा· हास करण हरण ग्रबर को भरण वेद तारा

२रे २स २म २ध २प २नि २स २रे २स

गण मारी ॥ सहस भुजा धारि कारि लीन

२नि २प २ध २म २ग २रे २स २म २ध २प २ध

जगत एक रूप काल रुद्र चरण शरण

२म २ग २रे २स

बाल विश्व धारी ॥ ❖ इत्याभोगः ❖ ॥

इति टेकश्री रागिनी शिव परिछेदः॥

अथ टेकश्री रागिनी सूर्य परिछेदमाह धु

२रे २धि २म २ग २रे

वपद सूर्य ताल चार ॥ कंकण कर पद्म

२प २नि २प २धि २म २ग २रे २स २नि २प २स

कर भास्कर जग ज्योति स्वावद दर्शदेत य

२म २धि २म २ग २रे २स २म

मे हेत मंडल उजियारी ॥ इतिस्थाई ॥ उ

२प २नि २स २रे २स २नि २प २धि २म

दय समय प्रथम जाम तिमर नाश होत

२ग २रे २म २धि २म धि २म २ग

देव कांका कर काक घोष होत स्वभ उ

टे॰ रा॰

वारी ॥ इति घेतरा ॥ कुलवर्ण तिमर ना

शा सोई वर्ण मीत भयो निजहिं नाम लेउ

लेउ कर उपाउ भारी ॥ शुद्ध वर्ण मदित॰

होत निजहिं नेम धर्म करैं बालवि

प्र वरण शरण धारी प्रति प्यारी ॥ इत्या

भोग: ॥ टेकश्री रागिनी ध्रुवपद हर्य ।

अथ टेकश्री रागिनी शिवपरिछेदमाह ध्रु

२ग २म २ध २प

वपद शिवजी ताल चार ॥ शिखर जटा-

२नि २प २ध २रे २ग २म २ग २रे २म २ध

जूट सुभग हेम मुकुट भृकुटि तिलक।

२प २नि २प २ध २रे २ध २रे २ग २म २ग रे

विशद भस्म वेदकिरण हसित बदनवा

२स २म २ध २प २नि २स

क ॥ इति स्थाई ॥ एकहाथ परशु लिये की

२रे २ग २रे २स २नि २ध २म २ध २रे २ध २प

ये अपर भक्त शिषर वरन देत हाथएक

टे·रा· मृगशावक याम॥ इतियेतरा॥ व्याघ्र क

ति बाम कीयो लियो बाम गोद भाम गिरि

जा है नाम जास तडित चमक भाम॥ हा

टक के कटक युगल अंगद भुज अपर

विविध भूषण धर शोभि रहे बाल सम

ति काम॥ इत्याभोग:॥ टंकश्री रागिनी

२रे २ग २म २ध २प २नि २प

ताल चार ॥ श्री सूरज जगत पूज्य परम

२ध २म २ग २रे २सा २नि २प २नि २सा २म २ध

देव हंश धाम करत काम पूरण नित भ

२म २ग २रे २सा २म २ध २प

क्त भय निवारी ॥ इति स्थाई ॥ प्रात स्नान

२नि ३सा ३रे ३ग ३रे ३सा २नि २प २ध

छिंहि जऊ संध्या त्रिक करत नमन उप

२म २ग २रे २ग २म २ध २म २ग २रे २सा

स्थान ध्यान धार पाप हरत भारी ॥ इति

२रे २ग २म २ध २प २नि २प

अंतरा ॥ ताकी कल ग्रंथ विपट कान पु

टे. रा. रुष नाहि जने नेत्र पूर्व उपहि निषद पा

व नेम धारी ॥ चारि भजा रक वर्ण ग्रक

ण जाम वाजि वाह पीत वसन ध्यान जठ

धारि भक्ति कारी ॥ ·:· ॥ इत्याभोगः ॥

इति टेकश्री रागिनी सूर्य परि छंदः ॥

अथ टेकश्री रागिनी चतुर्विंशति अवरणरि

छेट मारु ताल चार ॥ प्रथम पुरुष अल

ख अविनाशी । धर्म लोप जब देखे जगमे

धारि रूप भक्तन पत राखी ॥ इतिस्थाई ॥

सूकर हो कर भूमि धरी रद जज्ञ भयो ज

गमे सविकाखी । कपिल देव उपदेशक

टे. ग.

सो निज धाम परम गति मारग भावी ॥

इति श्रेतरा ॥ दत्तात्रे हैहय जग तारक स

नत कुमार उग्रसेन पावी ॥ नर नाराय

ण शांति धरी कर काम मगण की भेटा ।

लावी ॥ ध्रुव पृथु ऋषभदेव हय केयर

मत्स्य कमठ नर हरि जन मावी ॥ केरी ।

देर मन हरी भयो जग बामन पग पाव

न जग कों गावी ॥ हेम मन्वेतर धन्वेत:

रि पुन परशु राम क्षत्रिन भर गावी

रामचंद्र रावन गन घातक क्रुस्नके

लि हलधर चित गावी ॥ व्यासदेव ।

पौराणिक सारी । बुद्ध कल्कि कलि ।

२ग २रे २ग २रे २स २म २प २नि २स २रे

टे॰ गा॰ यवन विनाशी ॥ विंशति चार रूप ज

२स २नि २प २प २म २ग २रे २स

ग धारी जै जै बाल कृष्ण सुख कारी ॥

इति आभोग: ॥ ❖ ॥ इति टेकश्री॰

रागिनी चतुर्विंशति अवतार पदा

नि ॥ ❖ ॥ समाप्त: ॥ कल्या ❖ णमस्तु ॥

परिच्छेद: ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

दे. रा
१

ॐ अथ देशकारी रागिनी प्रारंभः ॥ हनुमान्मत में येह मेघराग की स्त्री है और इसका ग्रेश न्यास ग्रह षड्ज स्वर है अरु संपूर्ण है और उतरा मध्य म वर्जित है इसमें श्लोक ॥ षड्जांश ग्रह न्यासे संपूर्णा देश कारिका वर्षार्तौ च प्रगातव्या प्रातः काले सदा बुधैः ॥ अथ भरत मतेन प्रकीर्णविधिः

१

माली गौरा वभासेषु देषा कार्य्या पूर्व जन्म भूः

ऋषभ स्वरे निवा सएव प्रातःकाले प्रगीयते॥

अरु इसका वर्षा ऋतुहै और समय प्रातःकाल

है अरु इसका शृंगार रसहै और मध्यानायिका

है और (अनुकूलनायकहै) ब्रह्मा देवता है। उसका मंत्र येह है। ओं ब्र

ब्रह्मणे नमः ओं। ऋषी भी ब्रह्मा है अनुष्टुपछंद

है देंबीजहै ॥ अथ देषाकारी विनियोगः ॥ ॐअस्य
श्री देषाकारी मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप छंदः
ब्रह्मा देवता देंबीजं अभीष्ट फलप्राप्त्यर्थे जपे वि
नि योगः ॥ अथ कर न्यासः । ॐ दें अंगुष्टकाभ्यां नमः
एवं हृदयादि न्यासे सर्वे कुर्यात ॥ अथ पूजा विधा
य ॥ आसने । पाद्ये । अर्घ्ये । आचमनीये । वस्त्रे । यज्ञो

पवीतं। गंधं। अक्षतं। पुष्पं। धूपं। दीपं। नैवेद्यं। द

क्षणा। पुनराचमनीयम्॥ इति देशकारी रागिनी

पूजनं कुर्यात॥ अथ मंत्रः॥ ॐ दें देशकार्यै नमः

अथ ध्यानम्॥ ॐ भद्रा समं केलि कला वसक्ता।

सर्वांग पूर्णा कमला यताक्षी। पीन स्तनी रुक्म

तनुः सुकेशी। संपूर्ण चंद्रा ननं देश कारी॥ इति

दे. रा. २

ध्यानम । अथ भाषा ध्यानम ।। प्रीतम के साथ केलि
कौतुक करत अति । और कारे कारे केशा छवि ।
ही सों भारी है । शारद से शरद सुधा कर की शोभा
जीत । बदन की दीपती सों ज्योति उजियारी है ।
अंग अंग राजत अनेग मयी अदभुत । ऊचनि सों
केचन कलश उति हारी है । कमल से नैन हरि

वल्लभ ही सखि दैन। मृदु बैन बोले तिया रारिदेश
कारीहै॥ अथ श्रृंगार रस लक्षणम॥ केशव ए
क समै हरि राधिका आसन एक लसै रस भीने।
इति स्यायी। आनंद सो तिया आनन की दुति
देखत दर्पण त्यौं दृगदीने। भाल के लाल मैं
बालि बिलोकित ही भरि लालनि लोचन लीने

दे॰ग॰
४

सासन पाय सुवासन सीय हुताशन मैं मानो सा॰
सन कीने ॥ अथ मध्या नायका लक्षणम्। दोहा
मध्या रूढा यौवना पूरण यौवन वंत। भाग सु
हाग भरी सदा भावत हैं मन कंत ॥ अथ अनुकू
ल नायक लक्षणम् ॥ प्रीति करै निज नारि सों प
र नारिन प्रति कूल। केशव मन वच कर्म करि

सो कहिये अनु कूल ॥ अथ देषाकारी सरगमः।

ताल तीन ॥ पधपगमधम सानिरेधसनिधप प

धपगम रेगमधमगरेसा ॥ इति स्थायी ॥ रेगप

धनिसा सानिरेधसापधसा रेगरेसानिधसानिध

पधसा ॥ इति सरगमः ॥ अब इसकी येह गत है

डिठ डा डिठ डा ठा डाडाठा डिठ डा डिठ डाठा

दे. गा.
५

२नि २ध २पं २पं २ध २पं २गं २म २पं २ध
डा डाढा डिढ डाडिढ डाढा डाडा ढा डिढ डा डिढ
२पं २ग २म २रे २गं २म २ध २म २ग २रे २सा
डाढा डाडाढा डिढ डा डिढ डाडाडा डा ढा ॥ इति

अस्थायी अंतरा ॥ अब इसकी ठाठ येह है ॥ षड्ज

सम रहता है । रिषभ थोडा चडा । गंधार चडा । म

ध्याम भी चडा है पंचम सम रहता है । धैवत थो

डा चडा । निषाद चडा । मध्यम उतरा नदारद ॥

२ध २ग २रे २ग २ध २ग २ध २प २ध

अथास्थाग्रलापः॥ ननरी रना आनन उनन उआ

२प २ध २ग २रे २ग २ध २प २ध २ग २रे

नन अद ननरी नने नना उननना आनरा ननन

२स २रे २स २ध २ग २ध २प २ध

रन नानोम्॥ इतिअस्थायी॥ ननन अदनने आ

२प २स २रे २स २स २प २ध २स २रे २स

नन नम नानैने नना नन नरी नना आन नान।

२प २ध २प २ध २ग २रे २ग २ध २ग २रे

ननोम् नन नरीन नानरी रना नना आन नान।

२स २ध २ग २रे २स

आन नान रान ननम्॥ इतिअंतरा॥ इतिआलापः

དེ་ཀ
༥

༦ 6

अथ देसकारी रागिनी बोल परिछेदमाह

ध्रुवपद देसकारी ताल चार ॥ धन्य तै

हौ परम पुरुष विल रच्यो परम प्रबल

निबल बाल कैसे कहे चरण शरण या

री ॥ इतिस्थाई ॥ ब्रह्मादिक निकट वर्तित

व माया कथन मकै शेष नाम उचरि उच

दे. गा.

रि मनका ||| ||| ||| दिक मारी ॥ इतिश्रेतवा ॥
अर्थोकत वेदभणे नामरूप नाहिबने जा
त पात रहित अचल ज्योति अगम चारी ॥
जिन यारी कथन सकै जैयमे रम मूका।
रमन मरत मोद परम पैरे हेरे भटक मा
री ॥ इत्याभोगः ॥ टेमकारी रागिनी ध्रुव

अथ देसकारी रागिनी गणेशपरिछेद

माहि ध्रुवपद गणेश ताल चार ॥ नाद

अधि अतिअगाध साधन हित गौरि ता

त पद पंकज उरहिं धरो गुणगाहिक

सगरे ॥ इतिस्थाई ॥ प्रतिभा युत बुद्धि।

विशद करण परम चतुर चरण पदम

दे. गा. ऊर्ध्वरेख आदि चिह्नित उरसि धरे ।। इति

ग्रंतरा ।। उर तमिस्र नाश करै डेड दशाक

नाखन धरैं करैं ज्ञान मान युक्त स्वर उचा

र मधुरे ।। कोमल स्वर तीव्र ज्ञान मूर्छन

को देत ध्यान रसिक गान बाल स्वनत

गीकर रहैं जगरे ।। इत्याभोगः ।। देसकारी

रागिनी ध्रुवपद गणेश ताल चार ॥ प्रति

विचित्र चित्र मित्र खेड देड प्रति पवित्रमि

त्र कोटि शोभि धरै गणपति को भारी ॥

इतिस्थाई ॥ चारिभुजा ग्रहण ग्रहण शो

भै जिमे कर्णिकार भार हरै भक्त जनन।

विघ्न पुंज फारी ॥ इतिअंतरा ॥ नारीजि

दे॰ गा॰ हे ऋद्धि सिद्धि दाता दायक भक्त जनन पूर

करण धीर धरत धीर हरन भारी ॥ शोक

र को तनय विनय दान करैं बालनिधे॰

विद्या विद्योत संयश करण चारी ॥ ॥

इति आभोगः ॥ ॥ ॥ इति देसकारी रा

गिनी गणेश परिच्छेदः ॥ ॥ समाप्तः

अथ देसकारी रागिनी विलं परिछेदमाह

ध्रुवपद विलं: ताल चार ॥ नाभिकमल:

जाम विशाद जगदो कुर मार रूप पर ब्रह्

प प्रथम जहो बोला प्रकटाठे ॥ इतिस्था

ई ॥ इयर उयर हष्टि करी वारि चलत ।

सिंघु सकल विकल मन विचार करीक

टे॰ रा॰ मल नालि याडो ॥ इति श्रेतरा ॥ पाडो नहि

पार कछुक बहिर निकस चकित भयो

कह्यो विघन वाणि सुनत तप्यो ग्रात्मण

डो ॥ शेष शयन कमल नयन दर्शादीयो

कियो जगत् बालनिधी ग्रादिविस मक

ल जग समाडो ॥ इत्याभोगः ॥ टेमकारी

मल नालि याठो ॥ इतिश्वेतरा ॥ पाठो नहि

पार कछुक बहिर निकस चकित भयो

कह्यो विपत वाणि स्रनत तप्यो ब्राम्मण

ठो ॥ शेष शयन कमल नयन दर्शदीयो

कियो जगत बालनिधी ब्रादिविस्नमक

ल जगसमाठो ॥ इत्याभोगः ॥ टेमकारी

रागिनी ध्रुवपद विलः ताल चार ॥ अति
कुसुम कांति जास पीतांशुक बीतदेह
चतुर्भुजा शंख चक्र केयु केज धारी ॥
इति स्थाई ॥ वैजंती माल भाल तिलक
लग्यो मलय जात जिह मव ममकानभा
न दांत पांति सारी ॥ इति अंतरा ॥ रमा छ

२सा २रे २सा २प २सा २रे २सा २प २ध

दे·रा· क चरण यौ कै कर समर्द्दन नित अमित

२प २ध २प २सा २प २ध २ग २ध २ग २रे २सा २ध

तेज पुंज तडित नील घन उजारी ॥ जग

२ग २ध २प २सा २रे २सा २प २सा २रे २सा २प

त सकल आदिसुरम परम पुरुष प्रकृति

२ध २प २प २सा २प २ध २ग २ग २ध

युक्त चरण शरण बाल विश्व नमोपद ।

२ग २रे २सा

उजारी ॥ इत्याभोगः ॥ ❖ ॥ इति देसका·

री रागिरी विलु परि च्छेदः ॥ ॥ ❖ ॥ ॥

अथ देसकारी रागिनी शिवपरिछेदमाह

ध्रुवपद शिवजी ताल चार ॥ ज्योतिलिंग

वाराणसि पुरी मध्य वास करै हरै तापत्रि

विध जगत मुक्ति दानकारी ॥ इतिस्थाई

एक समय ऋषियनकी भक्तिभावमान

धैर्य ज्ञान निहित शंभु क्रमर निजरूह

दे॰गा॰

प धारी ॥ इति श्वेतगा ॥ अति सुंदर राजकु

मार रूप धार कर सिंगार पुहप माल गा

रैं विप्र पत्नि मध्य चारी ॥ पेखि विप्र कु

पित कह्यो गुंड लिंग काट दियो अति हि

यतन करत बाल उठ्यो नाहि भारी ॥

सुनत तेऊ देव सकल कर समाज अव

रज विपति भूमि बढत जात मोच मन

विचारी ॥ हरि सुकर भूमि थमे उर्धहेम

ब्रमनमे लिंग थ्रत नाहि मिल्या नमोपद

उचारी ॥ इत्याभोगः ॥ देसकारी रागिनी

ध्रुवपद शिवजी ताल चार ॥ भक्तन हि

त प्रोकर नित यतन करत नये नयेभये

दे॰ग॰

लिंग रूप गौरि जल भरि वप थाप्यो ॥ इति
स्थाई ॥ अतहिं सुगम सुदा हरण जल ह
रि युत लिंग करण बिल्वपत्र अर्क कुसुम
वारि धार मार्यो ॥ इति अंतरा ॥ धूपदीप
कछु सुभत्र पान बीट आगि धरै हरै सक
ल पाप ताप परम मोद चाह्यो ॥ सदित

१प २ध ३म ३रे ३म २ध ३म ३रे ३म २ध १प

प्रभु गाय अमित अनत देत अल्प लेत ऐसे

२ध १प २ध ३म २ध १प २ग १प २ग २रे १म

उपकारि बाल सुभग रूप कान्हो ॥ ❖ ॥

इति आभोगः ॥ ❖ ॥ इति देसकारी ।

रागिनी शिव परिच्छेदः ॥ ॥ ❖ ॥ ॥ ❖ ॥

अथ देसकारी रागिनी सूर्य परिछेदमाह

२प २ग २प २ग

ध्रुवपद सूर्य ताल चार ॥ हेम मुकट कुं

२रे २म २म २ग २प २ध २प २ग

डल युत श्रवन बिच शिखर थको हरो

२प २ध २प ३म २ध २प २ग २प २ग २रे २म

तिमर सकल जगत भानु भानु चारी ॥

२प २ग २प २ध ३म ३रे ३म २ध ३म

इतिस्थाई ॥ योगीगरमाल कंज मैन श्रेग

३रे ३म २ध २प २ध २प २ध ३म २ध २प २ग

चमकत सभ मंडल जग दीप परे सूर्य॰

दे॰ रा

लोक भारी ॥ इति श्रेतरा ॥ मंडल मथ अपर ।
लोक वाम करत जिम्हहि जगत भूमिशि
खिरि वारि पवन तेज रूप सारी ॥ भास्कर
को परम रूप हरिहि देव अतिशय थकै बाल
निधी अल्पमती नमो पद उचारी ॥ इत्या
भोगः ॥ देसकारी रागिनी ध्रुवपद सूर्य

ताल चार ॥ मोद करण चक्रवाक परम
जोति रूप प्रबल अपर तेज हीत करण
केन विकच कारी ॥ इति स्थाई ॥ चतुर्भु
जा केकण कर जोहनद घटित पैरे अंगु
लीय अंगुलि मय वज्र खचित सारी ॥
इति अन्तरा ॥ पीत बसन दमनकेद से

दे॰ रा॰ दर सोव कंज विकसो अरुण अरुण वर्ण

नास यास प्रभा नारी ॥ सस बीति यानवै

ठि मैर करत सकल जगत हरष देव प

रम सुभग बाल मोद चारी ॥ ॥ ❖ ॥ ॥

इत्याभोगः ॥ ❖ ॥ इति देसकारी रागि

नी समर्थ परिच्छेदः ॥ ❖ ॥

ग्रंथ देसकारी रागिनी दशावतारपरिछेद

माह ध्रुवपद ताल चार ॥ चिदानंद जग

त जनक पालक सोई हरत सकल बला-

विस्नु रुद्र रूप केलि निज प्रचारी ॥ इति-

स्थाई ॥ मत्स कमठ क्रोड फोड विभनरह

रि बछ करी वामन पद नीर वीर पावन-

दे॰ रा॰ की गारी ॥ इति अंतरा ॥ भार्गव तनु भार हृ
लो दशकंधर मराण सकल रामवेद वाण
न कर दिव्य लोक चारी ॥ नीलांबर नील
नीर यमुनाका पैंव लियो कियो बुद्ध बुद्धि
॥ प्रथम ॥
नाश कल्कि भर उनारी ॥ इति आभोगः ॥
इति देसकारी रागिनी दशावतार परिच्छेदः ॥

ग्रंथ देसकारी रागिनी शक्तिपरिच्छेदमा

ह ध्रुवपद शक्ति ताल चार ॥ चारबेद ।

स्मृति पुराण षट्शास्त्र उप पुराण अ

पर बहुत ग्रंथ पढ़े बढ़ो मान भारी

इतिहास्याई ॥ अपर पंडित मोहु समान ।

ज्ञान बान नाहि दिहे विद्वज्जन सकल

दे॰ रा॰

हीन करङ्क विजय मारी॥ इति श्वेतरा॥ वि
विय भोत ध्यात हरो प्रलोतर परम करो
गाय गाय भूमि भयो करो मन विचारी ॥
नाहिं ज्ञान कछु भयो कहीं कथन बङ्ग॰
प्रकार मन कठोर भूलि भयो मोह बुद्धि
मारी॥ इत्याभोगः॥ देसकारी रागिनी॥

ध्रुवपद शक्तिताल चार ॥ वाणि कथनम

मय सकल ज्ञान ध्यान बहुत कहे निज

हि मनन नाहि वहे माया मति मारी ॥ इ

तिस्याई ॥ जग दिषाउ बहुत करै हृदय

सकल कपट भरै किसउपाय यनहि ह

रै यिउहि मन विचारी ॥ इतिश्रेतरा ॥ ❖

दे॰रा॰ विश्व प्रकाश दउ प्रकार मायाकर व्यापिरहे

विद्वज्जन जड कबुडि अधिक कौन मारी॰

एक महेश जिमहि गाढ प्रेयकार मोह

न बसै प्रेय सन्तति मेहि बाल प्रेय भये

भारी ॥ ❖ ॥ इत्याभोगः ॥ ❖ ॥ इति दे

मकारी रागिनी शक्ति परि छेदः ॥ ❖ ॥

पद ब्रह्म ताल चार ॥ निजपाठो परम

मरम उनहीं के माहि रहे कहें कथा अ

परमात गोचर उपकारी ॥ इति स्थाई।

मन वाणी नेत्र अपर करण सकल वि

कल रहें बुड़ि परत वामकैरै हैरे जाऊ

भारी ॥ इति अंतरा ॥ चेतन चित चमक

दे.रा. देत लेत सार सकल जगत जास तान

थिरहि रहे सोइ सक्र कारी ॥ देव रह्यो

सकल जगत ऊपर नहीं देव सकै व्या

पक जग बाल निधी चरण शरण था

री ॥ इत्याभोगः ॥ ❖ ॥ इति देसकारी

रागिनी ख्याल परिछेदः ॥ ❖ ॥

ॐ नमः ॥ शिरोरोग निर्णये
ऊर्ध्वजत्रादौ शिरसः शारीरके
लिखितं । प्राणाः प्राणभृतो यत्र
स्थिताः सर्वेन्द्रियाणि च । यदुत्तमां
ग मंगानां शिरस्तद भिधीयते ॥
तत्स्वांगुलि प्रमाणेन दशांगुल
समन्वितम् । दंनोगुलि विस्ती
र्णं नानावयव विगोलकम् ॥

टीका

सिरके रोगों का निर्णय करना हुवा
पहिले सिरका शारिरक लिखना है
शरीर धारी जीवोंके प्राण अरु संपू
र्णी इंद्रियभी जिस विषे है तथा सब

श्री गणेशजी कारण …गेजी

श्रीः पीठा सुदाम ०

श्रीपीठको निदानं संग्राहित संख्यादिको क्र(१)नाहे

५.उ१५०

१. ग्रहवर्ग

२. त्रैलोक्यकादि

३. कुब्जप्रसा०

४. कामप्रदर्शि०

५. नगरा०

६. दक्षा०

७. नादपरा

८. लिंगादि

९. नीलात्पल०

१०. स्वगराजे

११. केस्म०

१२. भृंगराज

१३. महामाकादि

१४. माकादि

१५. महाना०

१६. बोध०

१७. वरदत्तामू०

१८. प्रानपाक

१९. प्रानावली

२०. प्रानावली

२१. प्रानावलीदिव्यौ

२२

२३ [illegible]

२४ स्यमन्तक [illegible]

२५ [illegible]

२६ [illegible]

अथ सारंगबिंद्रावनीरागसाक्षाक्रिपरिच्छेदमाह

१नि २रे २स १नि २रे २म
ध्रुवपद ताल चार ॥ चंडी प्रचंड करनी प्रह

२प २नि २प २म २रे २स १नि १प १नि २स २रे २म २रे
र हरनी रक्तबीज भक्त हेत काली रूप धार्यो

२स २म २प २नि ३स ३रे ३स
है ॥ इति अस्थाई ॥ धूम्रलोचन आयो द्वार।

२नि २प २म २प २म २नि २प २म २रे २स १नि १प
कीयो बहुत बडबराड हुंकार करके तैनें बे

१नि २स २म २रे २स २नि २रे २स २नि
ग वाको मार्यो है ॥ इति अंतरा ॥ चंड मुंड आ

गा॰ वि॰स॰

२सं २रे २म २रे २म २पं २नि २पं २म २रे २सं १नि २पं १नि

ये दो युद्ध करण लागे सो हेड इंको फेकरकेङ्क

२सं २म २रे २सं २म २पं २नि ३सं ३रे ३सं

डमैं निब्राह्यो है ॥ सुंभ ग्रौर निसुंभ मूढ करे

२नि २पं २म २रे २सं १नि १पं १नि २सं २रे २म २पं

है संग्राम मूढ मारे तैने क्रूर क्रूर निशचर को दू

२नि २म २पं २रे २म २रे २सं

र कर आधीन देवता ह्यो है ॥ इति आभोगः ॥

राग सारंग विंद्रावनी ध्रुवपद शाकि ताल चार॰

२रे २म २पं २नि २पं २म २रे २सं १नि २सं २रे

आये हैं संत द्वारपै तिहारे ब्रेंबे हाथ जोड नम

तेरो प्रभु किनहूं न पायो है ॥ इति प्रस्थाई ॥ ऋ

षी मुनी बार बार बेद जो बिचार थके मिल्यो।

नाही बेद कहे बहुत ध्यान लायो है ॥ इति अंत

रा ॥ सत चित आनंद घन तापै वारे तन धन

मन सें जो रीक रीक नेत नेति गायो है ॥ हरी ह

र बिरंच देव करत रहित सेव तेरी देखके क्रपा

रा॰ बि॰सा॰

२रे २म २प २नि २प २म २रे २सं

ल दियाल आधीन शरण आयो है ॥ इति आभोगः

इति राग सारंग बिंद्रावनी ब्रज परिछेदः स

माप्तः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

नं॰ १८६२

१नि २सं २२ २म २प २नि ३सं २नि २प २म २२ २प
निधी डलाव पत्यरहै घम ग्राधीन नारदीनत्र

२म २२ २प २म २२ २सं
वीन तलसी न्हको पानहै ॥ इतिग्राभोगः ॥

इतिसारंगविंद्रावनीरागस्य विस्र परिछेदः

समाप्तः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

ག་
བི་མ་

अथ सारंग बिंद्रावनी रागस्य शिव परिछेदमा

ह ध्रुवपद ताल चार ॥ गौरीपत शंकर महा

देव जोंकी सेव देव करत पावत फल इंछाव

न बेदमै बिखानेहै ॥ इतिअस्थाई ॥ जटा जू

ट सीस गंग बालचंद रुंड माल गले व्यालहै

मैं परम प्रीत उपवीत धारैं डिमरू त्रिमूलदो

रा॰
बिं॰सा॰

करमै सहाने हैं ॥ इति अंतरा ॥ मस्त अंग अजब रे
ग ब्याघ्र चरम यौं उमंग पीके भंग मस्त होत शि
खर गिर रमाने हैं ॥ मनी गुनी ज्ञानी ध्यानी दी
न है अधीन सब अंक पतरा भेट देत शंभु ही
रिझाने हैं ॥ इति आभोगः ॥ राग सारंग बिंद्रा
बनी ध्रुवपद शंभु ताल चार ॥ चलो सखी शि

व पूजें जिह समान नाहीं दूजे अर्क पुष्प भेट देत

वांछित फल पाइयें ॥ इति अस्थाई ॥ सब ही

देव करत सेव पावत ना नाको भेव कैवें जिहा

पै अपनी सेव वेद शास्त्र औरु पुराण नहीं न

हीं गाइयें ॥ इति अंतरा ॥ दानूं यक्ष गनी गंधर

व हारा हूहू तेंबरु नारद हनूमान शाकि शा

गा· रद रीक रीक वेगहीं जो बीनको बजाइये ॥ रे

बिं·सा· मा उरबसी आदिशेभुजको सुनके नाद भूल

जात अपनी याद बला आद सरमनाद होक

र आधीन दीन जल रूप वह जाईये ॥ ❖ ॥

इति आभोगः ॥ इति सारंग बिंद्राबनी रागस्य

शिव परिछेदः समाप्तः ॥ ❖ ॥

अथ सारंग बिंद्राबनी रागमा सूर्य परिछेदमा

२सं २रे २म २प २नि

है ध्रुवपद ताल चार ॥ अंसुमान दयावान।

२प २म २रे २म २प २नि २प २म २रे २सं

दीन है के दुःख हरण प्रगट भये जहानमें ॥

२म २रे २म २प २नि ३सं ३रे ३सं

इति अस्थाई ॥ अंदकार हरकरत तेजकोंह

२नि २प २म २रे २म २प २म २रे २सं सूरज २म २रे २सं

ज्वर धरत भक्त भरपूर येबल भगवान सूरज

२सं २रे २म २प २नि २प २म

में ॥ इति अंतरा ॥ करम है को फल जो देतले

२रे २म २पे २नि २पे २म २रे २सं २म २रे २सं
गा॰ त पाप पीर हरत देखो साखी वेद और पुरान में ॥

२म २रे २म २पे २नि ३सं ३रे ३सं २नि २पे २म २रे
बि॰ सा॰ धर्मके निशान ज्ञान सिद्ध साधके जो परान ऋ

२म २पे २म २रे २सं २म २रे २सं
षि परवी मिली आधीन भानु ज्ञके थान में ॥

इति आभोगः ॥ राग सारंग बिंद्राबनी ध्रुवपद

२म २रे २म २पे २नि २पे
स्वरज ॥ ताल चार ॥ मैं तो ठाडो थारे द्वार हाथ

२म २रे २सं २नि २पे २नि २सं २रे २म २पे २नि २पे
जोर करों पुकार पापको निवार मेरे स्वरज भ

सि॰

२म २रे २सं २म २पं २नि ३सं ३रे
गवानते ॥ इति सस्थाई ॥ हरि करी ग्रंथकार लो

३सं ३रे २म २पं २नि २पं २म २रे २सं १नि १पं १नि २सं
प्रकाश करण अज्ञान हरन ध्रकत वरन दिया

२रे २म २पं २नि २पं २म २रे २सं १नि १सं २म २रे
ल सुरत पातक सब दाह करत प्रेम के निशा

२सं म २रे २सं २नि २पं
नते ॥ इति अंतरा ॥ वैमोह हे कार तेरो नाम

२म २रे २सं १नि १पं १नि २सं २रे २म २पं २नि २पं
पतत तार दीन को जो दातार भ्रम हरण भान

२म २रे २सं १नि २सं २म २रे २सं २म २पं २नि ३सं
सुरत तान हे की खानते ॥ कृपा निधान सव

गा· कौ कान तीन लोक मे प्रधान विनय करौ बार·

विं·सा· बार बार बकशले आधीन हूं कौ होयके मिहरबा

नके ॥ इति आभोगः ॥ ❖ ॥ इति सारंग विं

द्राबनी रागस्य हर्ष परिच्छेदः समाप्तः ॥

अथ सारंग बिंद्राबनी रागस्य दशावतार परि

छेदमाह ध्रुवपद ताल चार ॥ आयेहै भगवा

न प्रगट होके बीच जहान दसहे अवतार या

र दीन दुःख हरणकों ॥ इति अस्थाई ॥ मीन

कछ बाराहे नर हर बामन परशुराम कृसबो

द्ध रूप निकलंक राजा रंगझेके आप पषघणभ

अथ सारंग विंद्राबनी रागस्य दशावतार परि
छेदमाह ध्रुवपद ताल चार ॥ आयेहै भगवा
न प्रगट होके बीच जहान दसहे अवतार धा
र दीन उःख हरणकों ॥ इति अस्थाई ॥ मीन
कछ बाराहे नरहर बामन परशुराम क्रस बो
ध रूप निकलंक राजा रंगाझके आप पूषणम

रा· बिं·सा·

रनकों ॥ इतित्रेतरा ॥ अहुर मार दियो छाड क
रत जगत रविवार दीनको आधार हरी देवकी
की पीर शिला ह्वै के तरनकों ॥ प्रह्लाद उल्हाद ।
द्रौपदी लाज आधीन ह्वै के करण काज जोदा
मैहै चरनकों ॥ इतिआभोगः ॥ ❈ ॥ इति
सारंग बिंद्राबनी रागस्य दशावतार परिछेदः

अथ सारंग बिंद्राबनी रागस्य विलंपरिछेदमा

२रे २म २रे २सा

ह ध्रुवपद ताल चार ॥ चतुर्भुज हर नाराय।

२नि २पे २म २पे २नि २सा २रे २म २पे २नि २पे २म

ण नरोत्तम चन श्याम राम सर्वमें जगत हूंके

२रे २पे २म २रे २सा २म २पे

करण हार जगधर ॥ इति अस्थाई ॥ येही शे

२नि ३सा ३रे ३म ३रे ३सा २नि २पे २म २रे

ष शायन करत कमल नयन सुंदर मोहे लेत

२सा २नि २सा २रे २म २पे २नि २पे २म २रे

सब सुरनर सिधुक्ता मों करैं बेन बेठ नीर

गा·
बि·सा·

सागर ।। इति धेनता ।। मोर मुकुट मकर कुंडल दे
व हित कर बल ब्बल हत्यो असुर चक्र धारनो
के कटपीत बर ।। गदा पदम शोख मोहे पत
त हृके पापखोहे दीन दियाल कृपाल आथी
न मक्के प्रभु विश्वभर ।। इति आभोगः ।। रागसा
रंग बिंदाबनी धुवपद विलनाल चाव ।। एक

२प २म २रे २प २म २रे २स १नि १प १नि
सभैं गये हरि अम्बर हूंके श्रापधर नारबोकी
२स २रे २म २प २नि २प २म २रे २म २प २रे
लीनि हर रूप जो जालेयर यर शास्त्र मैं वि
२म २रे २स २म २प २नि ३स ३रे
ख्यात है ।। इति अस्थाई ।। मारलीनो दैत्य इ
३प ३म ३रे ३स २नि २प २म २रे २स १नि
यर वेगहीं जो गंगा यर स्वम देख नार उय
१प १नि २स २रे २प २नि २प २म २रे २प २म
र जागा उठी घर हर कर भेख सेग मकुट यर
२रे २म २प २नि २प २म २रे २स
श्राप देके शिला कीने करत विललात है ।।

२नि २धि २म २२ २धि २म २२ २सं २नि

रा॰ इतिश्रेनरा ॥ भये याल क्रपाल नारको निहाल

२धि २नि २सं २२ २धि २म २२ २म २धि २नि २धि २म २२

बि॰ सा॰ करत प्यारी पदवी वेग थरत रमाहूंसों डरत

२सं २नि २सं २२ २म २धि २नि ३सं २नि २धि

डरत धाये पङ्केदे नीरसागार कहोते आये॰ अ

२म २धि २म २२ २सं २म २२ २म २धि २नि

बेहो कछु रातहै ॥ जाओ जहो रैन जगें सोत

३सं ३२ ३धि ३म ३२ ३सं २नि २धि २म २२

नके अंग लगे राखे पाये डग मगे स्रावण कों

२सं २नि २धि २नि २सं २२ २धि २नि २धि २म २२ २सं

अयर गले छगे तैंने कितने चार हमगेरहित

अथ सारंग विंद्राबनी राग सगणेश परिच्छेद मा
ह ध्रुवपद ताल चार ॥ गौरि नंद माथे चंद त
न सिंदूर भरपूर विघन हर करत वेग सबही
नर नारके ॥ इति अस्थाई ॥ एक रदन हस्ति ब
दन करण हूं सों देत लाल मोतीमाल सोहे ग
ल भुज चरके ॥ इति अंतरा ॥ रिद्धि सिद्धि।

गा· दै संग आसन बैठे भैरे उमंग स्वरापीत हूँ निसं·

बि·सा· गान ले देव नरके ॥ पांप बास आम पास कर हैं नि·

बास जहां हर्ष होके दास ठाडे आधीन कमर।·

के ॥ इति आभोगः॥ राग सारंग बिंद्रावनी धु

वपद गणेश ताल चार ॥ गिरिजा के लाल

दियाल मूरत विघन हरी शुभदायिक सुख

गा·

२सा २म २प २नि २प २नि ३सा

केत ॥ इतिग्रस्थाई ॥ नागोपवीत पीतपटक

२नि २प २म २रे २म २रे २सा २म २रे २सा

ट गज करण खेड धर पर चढ भये विसहेत

२रे २म २प २म २रे २प २म २रे २सा

इतिग्रंतरा ॥ बालचंद एकदन्त ग्रेभुज मोक

१नि १प १नि २सा २रे २प २नि १प २म २रे २म

व ग्रनन्द करदि शक्ति मन्भाव हो मोदक भर

२रे २सा २म २प २नि २प २नि ३सा ३रे ३सा

घालदेत ॥ नर नारी कौवै काज पूजत कहैगा

२नि २प २म २रे २सा १नि २रे २प २म

खिलाज डःख दरिद्र मेकट सभ ग्राधीनह्रैके

ग॰ हरलेत[२२][२मि] ॥ इतिआभोगः ॥ इति सारंग बिदाब

बि॰सा॰ नीरागस्य गणेश परिच्छेदः ॥ समाप्तः ॥

ग॰ २

अथ सारंग बिंद्राबनी रागस्य ख्यालपरिच्छेदमा

२रे २म २प २नि २प

ह ध्रुवपद तालचार ॥ सांमिरो मन नारायण

२म २रे २सं १नि १प १नि २रे २म २प २नि २सं

निरंकार परम ब्रह्म करतार पतित पावन पतत

२रे २म २प २म २रे २सं २म २प

नार निर्गुण निरंजन ॥ इति अस्थाई ॥ अलष

२नि २सं ३रे ३म ३रे ३सं २नि २प २म २रे २सं १नि

अगम अकथ अविनाशी अव्यक्त अपार अपा

२सं २रे २म २प २म २रे २सं

र जाको ढूंढत सब योगी जन ॥ इति अंतरा॥

गा॰
विं॰ स॰

२रे २म २प २नि २प २म २रे २स १नि १प १नि २स २रे २म
अनादि कर समाय अष्टयाम रहे अथाय पायो है।

२प २नि २प २म २रे २स २म २प २नि
न उहांको आद मंत्र नाम चैतन ।। वार वार क

२स २रे २म २रे २स २नि २प २म २रे २स १नि
है विचार येही आधीन हूं के प्रभु कृपाल हैं के दि

२स २रे २म २रे २स
याल दर्श देत ननतन ।। इति आभोगः ।। अथ।

राग सारंग विंद्रावनी ध्रुवपद ब्रह्म ताल चार।

२स २रे २म २प २नि २प २म २रे २म १नि १प
है अपार निराकार शब्द रूप दातार आदि अंत

स्कार करैं जो भवानी तोहे ॥ इति अस्थाई ॥ चार
वेद छोउ शास्त्र सप्त पुर चौदह भवन जाकि।
जनन तेहि हरी हर मोहे ॥ इति अंतरा ॥ नाक
वेसर केसर तिलक योगन मेग करत किल
क भैरो आदि गीथ गाथ मेड माल हेड हाथ।
शिव वाहिन मोहे ॥ बीडा पान और निशान

२म २पै २नि २पै २म २रे २सै २म
स्कार करैं जो भवानी तोहे ॥ इतिअस्थाई ॥ चार

२पै २नि ३सै ३रे ३सै २नि २पै २म २रे २सै १नि
वेद छओ शास्त्र सप्त पुर चौदे भवन जाकि।

२सै २रे २म २पै २म २रे २सै २रे
जनन तेही हरी हर मोहे ॥ इतिअन्तरा ॥ नाक

२म २पै २नि २पै २म २रे २सै १नि २रे २म २पै २नि
वेसर केसर तिलक योगन संग करत किल

२पै २म २रे २म २पै २म २रे २सै १नि २सै २रे
क भैरो आदि गीध गाथ संड माल हंड हाथ।

२म २पै २म २रे २सै २म २पै २नि ३सै ३रे
शिव वाहिन मोहे ॥ बीडा पान ओर निशान

२सं १नि २पं २म २रे २सं १नि २सं २रे २म २पं २नि २पं २म

गा॰ ग्यान कै बखान तेरे करके ध्यान विनती करत ह

२रे २सं २रे २पं २सं २रे २म २रे २सं

बिं॰ सा॰ रैं पाप आधीन कों दरिद्र दूर होये ॥ इति श्री ।

भोगः ॥ ❖ ॥ इति सारंग विंदावनी राग सं ।

शक्ति परिछेदः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ दर्बारी कान्हडा रागस्य स्वर्थ परिछेदमाह

२रे २ग २म २धै २प २धै

ध्रुवपद ताल चार ॥ एजेरे मन एज दिनकर

२म २ग २रे २सै १नि १प १नि २सै २रे २ग २म २धै

दिनेश सूरज तिमिर निवार दुःख दारिद्र सब

२म २ग २रे २सै २म २धै २प २नि

हरहो तेरे ॥ इति अस्थाई ॥ सुर नर मुनि गु

२सै २रे २सै २नि २प २धै २म २ग २रे

णी सेवत जाको सफल कर देत जो करम स

२सै २रे २ग २म २धै २प २धै

ब केरे ॥ इति अंतरा ॥ अथ परमारथ स्वार

गा॰ घ को दाता बिघन हरत करत काम पलेरे ॥

द॰का॰ निस्य निस्य ध्यान जपत हरि लोचन मोचन।

जो मे कट सब आधीन तेरे ॥ इत्याभोगः ॥ इति॰

राग दर्बारी कान्हडा ध्रुवपद सूर्य ताल चार

प कश्यप शौरि सवज सुमेर रमण त्रैलोकह

ग तेज रूप करत पति मनसा के दाता मेरे ह

२ध २म २ग २रे २सा २म २ध
घनिवारो तिमिर हर ॥ इतिअन्तरा ॥ द्वितीनेद

२प २नि ३सा ३रे ३ग ३रे ३सा २नि २प २ध
भास्कर पाप हरण शुभ करण श्रेशमान भानू

२म २ग २रे २सा २रे २ग २म २ध २म २ग २रे
ऊगउल यर दीजो मोङ्को श्याव सेपत श्री सवि

२सा २सा २रे २ग २म २ध २प २ध २म २ग २रे २सा
तर ॥ द्वादश रूप अति अनूप बेश आदि ग

१नि १प १ध १प १नि २सा २रे २ग २म २ध २प २सा २म
ति अगाय ज्ञान कारण अज्ञान हर मनू तात।

२ग २रे २सा २रे २ग २म २ध २प २नि ३सा ३रे
दिनकर ॥ दयानिध अमर मगत ऋषी पूज

२ग २रे २सा २नि २प २ध २म २ग २रे २सा २रे

ग॰ जगत कारी बालविह्ल नाथ वेद वक्ता करम।

२ग २म २ध २प २ध २म २ग २रे २सा

द॰का॰ माली स्वाधीन पर कृपा कीजे दया सागर ॥❖

इतिश्राभोगः ॥ ❖ ॥ इति दर्बारी कान्हडा।

रागस्य सूर्य्य परिछेदः समाप्तः॥ ❖ ॥

अथ दर्बारी कान्हडा रागस्य दशावतार परिछे

२सा २रे २ग २म २प

द माह ध्रुवपद ताल चार ॥ जगत्र उद्धार नि

२प २नि २प २प २म २ग २रे २सा १नि १प

स्तार करण कार अवतार धर नारायण विशं

१नि १सा २रे २ग २म २प २म २ग २रे २सा

भर मात लोक प्रकट भयो आप गोपाल ॥

२म २प २प २नि ३सा ३रे ३सा

इति अस्थायी ॥ मछ कछ वराह नर सिंह वा

२नि २प २प २म २ग २रे २सा १नि १प २नि २सा

मन परशुराम रामकृष्ण बुद्ध रूप निष्कलंक

२रे २ग २म २पि | २म २ग २रे २सा

गा॰ दीन दुःख हरन दयानिध दयाल ॥ इत्येतरा ॥

|२सा २रे २ग २म २पि २पि २नि | २ध २पि २म २ग २रे २सा

दृ॰का॰ विस्वरूप प्रति प्रनूप भक्त वत्सल पतित नाव

|२नि २ध २नि २सा २रे २ग |२म २ग २रे २सा |२म

क गोपीनाथ गोवर्धन चक्रपाणी कृपाल ॥ गा

२पि २ध २नि ३सा ३रे २सा |२नि २ध २पि २म

दा पद्म शंखधर मोर मुकुट पीतांबर गरुड

२ग २रे २सा |२नि २ध २नि २सा २रे २ग २म|

धारी बनवारी रमाकंत अनंतवेश धार आये आ

२पि २म २ग २रे २सा

धीनके प्रभु प्रतिपाल ॥ इति दशावतार: ॥

[illegible] कान्हडा रागस्य ब्रह्म परिछेदमाह

ध्रुपद ताल चार ॥ जप मन पार ब्रह्म परमे-

श्वर अकाल मूरत प्रकाश रूप दीन दयाल ॥ इ-

ति अस्थाई ॥ अगम अगोचर अचिन्त अनन्त आ-

दि अनन्त मध्य रहत कृपा सिंधु कृपाल ॥ इति

अंतरा ॥ वेद बिदत नाद वर्ण मन बाणी अती

रा·
द·का·

२म २प २ध २प २म २ग २म २ग २रे २सा २म २प

नगुण गुणमय जिह सुमिरत बियाला ॥ सुरन

२ध २नि २सा २रे २ग २रे २सा २नि २ध २प २म २ग २रे

र मुनी ज्ञानी योगीस्वर रटत रहित निस बासर

२म २प २ध २प २म २ग २रे २सा

आधीन के प्रभु परमात्म प्रतिपाल ॥ इत्याभोगः

राग दर्बारी कान्हडा ध्रुवपद ब्रह्म ताल चार ॥

२ग २रे २ग २म २प २ध २प २म २ग २रे २सा

नाद ब्रह्म पवन ब्रह्म तेज ब्योम प्रकाश ब्रह्म सर्व

१नि १ध १प १नि २सा २रे २ग २रे २सा

स्थान व्यापक रहो ब्रह्म दसहो दिशान मे ॥ इतिस्था

२म २प २ध २नि २सं २रे २सं २नि २ध २प
यी ॥ पसु बल पंछी बल कीट और मतंग बल फू

२म २ग २रे २सं २रे २ग २रे २सं
ल बेल पात फल बल सब जहान में ॥ इत्यंतरा ॥

२ग २रे २ग २म २प २ध २प २म २ग २रे २सं
देव बल दानव बल किन्नर और यक्ष बल मात।

२नि २सं २रे २ग २म २ग २रे २सं २म २प २ध
तात भ्रात बल सबहू सयान में ॥ नाद बल बे

२नि २सं २रे २सं २नि २ध २प २म २ग २रे २सं २रे
द बल करम और धरम बल प्राचीन बलहू पु

२रे २ग २रे २ग
कों षट् शास्त्रहू

२सं
राण में ॥ इति आभोगः ॥ इति दर्बारी कान्हडा ॥

गः गस्य ब्रल परिछेदः समाप्तः ॥ ❖ ॥❖

दः काः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ दरबारी कान्हडा रागस्य शक्ति परिछेदमाह

।२सं २रे २ग २म २पं २ध
ध्रुवपद ताल चार ॥ स्रष्टिहूके करण हेत तीन

२नि २ध २पं २म २ग २रे २सं ।नि ।ध ।नि ।२सं २रे २ग
रूप प्रकट किये ब्रह्मा शिव बिस्नु देवी ग्रेवे के

२रे २सं ।२म २पं २ध २नि ३सं ३रे
भवानी ॥ इति अस्थाई ॥ मैसारी मैंडारी दरबारी

३सं २नि २ध २पं २म २ग २रे २सं ।२रे २म २ग
परधान किये बिख्यात तैने आप मात नगर।

२रे २सं ।२सं २रे २ग २म २पं
कोट रानी ॥ इति अन्तरा ॥ दशा ओर सम पोर

रा० नगर ग्राम चारो धाम तेरी जोत छाये रही मा

द०का० ई काली कल्यानी ॥ नवकोट रूप धर उत्प

पन किये नारी नर मारे सब असुर आधीन म

न मानी ॥ इति आभोगः ॥ राग दर्बारी कान्ह

डा ध्रुवपद शक्ति ताल चार ॥ अविगत अरनी।

चिता हर करनी मे तन मन मानी गिरिजा कैला

से पत प्यारी ॥ इति अस्थाई ॥ दत्तसुता छिन्नमा

ल भक्त युक्त प्रति पाल भुवनेश्वरी भवानी धूमा

केभरी तोहे पूजित नर नारी ॥ इति अन्तरा ॥

श्यामादेवी मनसादेवी नैना वज्रेश्वरी नारदा।

शारदा भगवती आदि शक्ति अघहारी ॥ अ९।

सिद्धि नवनिधि ऋद्धि बुद्धि विद्या रूप सरस्वती

गा॰ वाकवानी आधीनके दुःख दारिद्र हरनी श्रीअंबे।
द॰का॰ सुखकारी॥ ❖ ॥ इति आभोगः॥ ❖ ॥

इति दरबारी कान्हडा रागस्य शक्ति परिच्छेदः॥

समाप्तः॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ दरबारी कान्हडा रागस्य गणेश परिछेदमा

२सां २रे २ग २म २प २ध २नि

ह ध्रुवपद ताल चार ॥ दन्तयर परशुधर त्रैलोक

२ध २प २म २ग २म २ग २रे २सां

यर मालयर भालचंद्र राजेरी ॥ इति अस्थाई ॥

२म २प २ध २नि ३सां ३रे ३ग ३रे ३सां २नि २ध २प

शुंडयर लंबोयर गजकर्णयर मुकुटयर तन

२म २ग २रे २सां २सां २रे २ग २म

सिंदूर छाजेरी ॥ इति अन्तरा ॥ भूषणयर वस

२प २ध २नि २ध २प २म २ग २रे २सां १नि १ध १प १नि २सां

न यर व्याल उपवीत यर कमल पोप धीन यर

गा॰ दै शक्ति येग साजेरी ॥ इतिअस्थाई अंतरा ॥ म ।

द॰ का॰ क्रमाल गलधर गणधर मेपत धर हरष धर ।

गणेशजुके दर्शते आधीन विघन हर भाजेरी ॥

इतिसंचारी आभोगः ॥ राग दर्बारी कान्हडा ध्रु

वपद गणेश ताल चार ॥ एरे मन मेरे नित उठ

पूजा गणपत गणनायिक विघन हरण मेहे

२रे २सा | २म २ध २प २नि ३सा ३रे

प्रलाल ॥ इतिश्रस्थाई ॥ जोके सिर रत्न मकुट

|३ग ३रे ३सा २नि २प २ध |२म २ग २ग २रे २सा

पीतपट कटमणि मका गल गल सोहे माल

|२रे २ग २म २ध २प २ध २म| २ग २रे

इतिश्रन्तरा ॥ दशभुज एकदन्त रमत कल्प ब

२सा २नि २सा २रे २ग |२म २ग २रे २सा |२म २ध

न करत आनन्द बाल चंद पर भाल ॥ ऋद्धि

२प २नि ३सा ३रे |३ग ३रे ३सा २नि २प २ध २म

सिद्धि केत जाहे सेमें भक्त संत पावत हैं फल

२ग २रे २सा २रे २ग २रे २सा

अनेत आधीन प्रतिपाल ॥ इति संचारी आभो

गा॰ गः ॥ ❖ ॥ इति दर्बारी कान्हआ रागस्य गाणो॰

द॰ का॰ ष्ण परिच्छेदः समाप्तः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ दर्बारी कान्हडा रागस्य विलंपरिछेदमा

२सा २रे २ग २म

ह ध्रुवपद ताल चार ॥ चतुरभुज हरि नारा

२प २ध २नि २ध २प २म २ग २रे २सा १नि १ध १प

यण रामकृस्न गोविंद गोपाल गोपीनाथ गोव

१नि २सा २रे २ग २म २प २म २ग २रे २सा २म

र्द्धन धर चक्रपाणि नर हर ॥ इति अस्थाई ॥ मो

२प २ध २नि २सा २रे २ग २रे २सा २नि २ध २प २म

हन मधुसूदन मुरारि मुकुंद विश्वरूप वासुदेव

२ग २रे २सा १नि २सा २रे २ग २म २ग २रे २सा

देवकी नंदन यादोपत वामन धरनी धर ॥

गा॰ इति अंतरा ॥ दीनबंधु दीनदयाल दीना नाथ

द॰का॰ दामोदर दुःखभंजन काम पूज्य रमा केत कल्या

नर ॥ कमल नैयन शांति कार भुजग शायन

पद्मनाभ स्वाधीन के प्रभु श्रीकमल गरुड धारी

मुकुट धर ॥ इति आभोगः ॥ राग दर्बारी कान

डा ध्रुवपद बिलम्ब ताल चार ॥ प जग जीवन ज

२ध २प २म २ग २रे २सं १नि १ध १नि २सं २ग २रे

गधर जगनाथ पृथिवीनाथ वैकुंठ रमण गोलो

२सं २म २प २ध २नि २सं २रे

कवासी ॥ इतिस्थाई ॥ पंडो आपद हरण कु

२सं २नि २ध २प २म २ग २रे २सं १नि १ध १नि

रु वंध करण विश्वंभर विश्वंभरन ह्राव ह्पप द्रा

२सं २मे २ग २रे २सं २सं

विड हरि पूरण अविनासी ॥ इतिअंतरा ॥ ना

२रे २ग २म २प २ध २प २म २ग २रे २सं

द्रोपती पूजा दामा मित्र हरनानस बिडार प्र

१नि १ध १नि २सं २रे २ग २म २प २म २ग २रे

ह्लाद रछक ब्रज बिहारी केस अरी घट घट ।

गा॰ वासी ॥ शोभ चक्र गदा पद्म गरुड शेष सेगा।

द॰का॰ सजन रमाकंत मदन जात आधीन कै प्रभु सा

गर निवासी ॥ ❖ ॥ इत्याभोगः ॥ ❖ ॥ इति

दर्बारी कान्हडा रागस्य बिष्णु पदि छेदः ॥ ❖ ॥

समाप्तः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ दर्बारी कान्हडा रागस्य शिव परिछेद मा

ह ध्रुवपद ताल चार ॥ भोलानाथ भंडार भर

न भरम हरन भइ करन भगवती पत त्रिशूल

धारी ॥ इतिअस्थाई ॥ भूतेश मन महेश नील

कंठ गंगाधर चंद्र शेखर श्वेतभरण त्रिपुरारी

इतिअंतरा ॥ रामेश्वर विश्वेश्वर त्रैलोकनाथ।

२ग २रे २सं १नि १प १प १नि २सं २रे २ग २म २प २प

गा॰ पतन पावन कैलास रमण पातक हर पिनाक

२प २म २ग २रे २सं २म २प २प २नि ३सं ३रे ३ग ३रे

२॰ का॰ धर भक्त हितकारी ॥ नाग भूषण भस्मधरन हे

३सं २नि २प २प २म २ग २रे २सं १नि १प

डु माल शोभित गल आधीन के प्रभु रत्नाकर्ण

१नि २सं २ग २रे २ग २रे २सं

आरु कर बैलकी सवारी ॥ इति आभोग: ॥ ❖

राग दर्बारी कान्हडा ध्रुवपद शिव ताल चार

२सं २रे २ग २म २प २प २प २म २ग २रे २सं

शिव शिव करत देव जाकी अस्तुत बरनी न

पि

१नि २सा २रे २ग | २म २प २म २ग २रे २सा

जाय ब्रह्मादिक कहित है अपार अपार ज्यू ॥ ३

| २म २प २प २नि २सा ३रे | ३ग ३रे

निब्रह्याई ॥ रच्यो जिन संसार भांत भांत रंग

३सा २नि २प २प | २म २ग २म २ग २रे २सा

सब ठौर खिलौ कीऊ आसमान निर आधार ज्यू ॥

| २सा २रे २ग २म २प २सा | २प

इति अन्तरा ॥ पांच तत्व पांच प्राण पांच हू जो

२म २ग २रे २सा १नि २प | १नि २सा २म

किये परधान जीव होके खेल रहो मध्य दस।

२म २ग २रे १सा | २म २प २प २नि ३सा ३रे ३ग ३रे |

हौ द्वार ज्यू ॥ ज्ञान ध्यान बुद्धि दीन पालन मैं

गा॰ प्रवीन सौ शंकर शंभू एनित आधीन सब ही

८॰का॰ नर नार न्ह ॥ इति आभोगः ॥ ❖ ॥ इति द

वीसी कान्हडा रागस्य शिव परिच्छेदः ॥ ❖ ॥

॥ ❖ ॥ समाप्तः ॥ ❖ ॥

रागिनीपर्ज ध्रुवपद श्रीब्रलजीके ॥

तालचार· अगत जगत आत्मरूप अ

निअरूप रूप रहित रंग ढंग कछुकक

ही कहत सकत रसना स्या नयन न

ग. छिन देखसबैं थकित कान सुनत सुनत

मनविकल्प नानाविध जगत सोचरच।

ना ॥ श्रे ॥ सुद्धबोधनाहिंथैरे सरोज

गनदंदफंदजयसैंनिजबीनहोत्रविसरु।

स्नका

लिंगहटना नयमैंहीबालनिधीबिधिनिषेधशब्द
कहतजासबिनायेहनिषेधहूयातामघटना अब
घटवं॰ निगम अगम बुद्धिसोच रहित रूप रंग स
कल मन बाणी बिकलभयेकहैं कहाजानी ॥।
स्या॰॥ तेरेतें अवर रूप नामकाम कोन कथत।
तैसैंही बालनिधी कहे उपम मानी। अं॰। शुद्ध

रा॰ शुद्ध निर्विकार निराधार व्यापक जग ईश्वर वन
मेघ शुक्ल सगुण कथित वानी॰। सं॰। निज इच्छा
धार कारि विविध रूप रंग ढंग वेदादिक कथ
न करै गुण गण कौं ध्यानी॰ ॥ रागणी पजं॰ ध्रु
व॰ श॰ श्रीशक्ति॰ आदिशक्ति विश्वमाय प्रबल
सकल देवन में जास विना जगत मनुष काज।

कछुनसाधे ॥ स्था ॥ खान पान दान ध्यान वास

वसन हसन मोद अपर सकल तास विना वृथाऽपा

सबाधे । अं० । जासकृपासु उघडवैठसभामुहिदेत

विद्वजन मूकरहे आधिमन समाधे । सं० । वालनि

धीचरणादास आसकरत जगत अनधनव सहरकरो

हरोवकुडपाधे । अथानत । अल विल्ल गिरशआदि

रा॰ देवनकौं कोप भयौ महिखा स्वरुङःखदेखनिख
लतेजभारी। स्था॰ परम जोत भाम रही महाल॥
क्ष्मि नाम जास अष्टादश भुजा नाम वाल शरणाथा
री॰। अं॰। अक्ष माल परशु गदा वाण कुलि पद्म
धनुष दंड शक्ति खड्ग चर्म शंख पाश वारी॰। मं॰।
घंटा अरु सुरापात्र चक्र शूल कुंडि थरै कैरै विजय

वालतिधेअरिनटलनसारी ॥ रागनी॰ पर्ज॰ श्री

गणेशजीके गणनायक विघन हरन भरण स

दा सेवक निज अष्ट सिद्ध घर करै हरै दुःखभारी

स्या॰ ॥ सिंधुर वदन वर्ण कर्ण कर्ण कार फूल पैरें

अंग रंग गंध मंद मंद धारी ॥ श्रे ॥ कारी फिण धैरें

सीस कीट मुकुटलरीपरी मानन की चंद कला ।

रा· स्रत उज्वल सारी·। सं·। सुंड दंड मंडित कर मो
दक स्त्राव भत्त यैं करैं काज वाल निधे सिद्ध
पति विहारी। श्रीगणेश·। पारवती सुत पकदं
त संतन की त्रास भैरे करै मोद मोदक प्रिय सुं
ड दंड धारी। स्या·। लंबोदर विकट रूप संकट
को नास करत हरत पाप ताप सकल विकल

तापहारी·। अं·। चंद्र शाप हर करण अमि मतिको
मान हरण शरण गत रक्ष करण आठुटष्टचारी
मे·। त्रिकुट मुकुट चंद्र कला भाललाल वर्ण धैरै
ह्रैरे पीर बाल तिथे दास निज विचारी। भोग॥
रागणीपर्ज· ध्रुव· श्रीविलोजीघट·॥ श्रीहरि चरण
शरण जग माई कीर्तन करि ह्रो थाई॥ स्था·। जो

रा॰ ते अपर अराधन कलिमे होइ न मन ठैहराई जप
तप संयम सिथलभये कलि काल कुसंग बढे
समुदाई विषयनमें मन परत महाजड नरदनन्त
र पछताई॰ ३ प्रेमनेमरसरागरंगसें भजो तजो
कपटाइ बडाई ॥ गायन के चिर निमष अर्द्धं।
में दृजन कोटि कही फलताई॰ ४। जहां प्रेमरस

नारायण तहां ठाढे रहैं मोद मन छाई बालनि
थी आनंद ब्रह्ममें लीन रहे निसदिन हितला
ई ५ कृपाकरे करुणा निधि निजमन विषय ला
ज धर। अनपत वि०। जीवात्मा विस्व सदा मंदिर
तिंह देह जान मान प्राण सेवक तिस इंधर उध
र धावै। स्या०। तिंह प्रजा भोगै सकल इंद्रयगा।

ग॰ ण माधरहो नीदध्यान थिरता कर मनममाधि

भावै ॥ स्थं ॥ नाना विधवाणि सफल यश स

धार उस्तन कर पाद क्रम प्रदक्षिण विध नवहि

ध्यान लावै । सं॰ । जोजोकुकबालनिधी करम

करत नाना विध अर्पण कर पूजक नित रमा

पति रिझावै ॥ मो॰ ॥

रागनी सोरठी. श्रीहर्ष्यजीके ताल तिमर
हरण धोत शोक रोक हृदय आश पास विघ्न
की तोड जोड सेवो नित ज्ञानी आद अंत काल
रूप भूप ग्रहन नवन रमत अष्ट याम रैन दिव
स ध्यावो नित ध्यानी जड चेतन आतमरूप
अति अनूप द्वादशात्म षड ऋतुअंत भेदकार

ग॰ नहुषिवारिदानी मानी जिह परम जोत बाल

सो॰ निधी सुधी सुभग शोकरोग रहित सदा सिमर

सोर जानी  अनपत काल वक्र भ्रमत सदा गदा

धरै एक हाथ अपर कमल विमल लिखैं वा

हमजा धारी  स्या अपन दक्ष दल सौम्य घटक

अपजत पर्व जाम दोष दमहिं आपन कर हक्क

म गत कारी   सकल जगत विगत संस हो
न ज्ञान विना आद अंत उन अनंत येह रूप
भारी वालतिथी देव दनुज मनुज सकल अं
त करत थिर हि रहे सदा विभु कमला पति
मोरी ॥ रागिनी सोरठी दशावतार ताल
परमे श्वर निरविकार निराधार एकरूप जवैं

रा॰ जग बिली न होत रहे शेष सारो स्या॰ एकके

मो॰ अनेक रूप धारणा की इच्छाकर मायाकों प्रे

रेत होत जगत भारो बिपत वायु अनल उ

दक भूमि अन जीव जंत देव असुर कर्म रूप

काम समाचारो भूमि जीव हरण रूप सब

भूकर है न हरि वद्दकाम चितक उह कलि

गीता॥

रागिणी पर्ज अथ श्रीशिवजी ॥ गंगा धार हर
न मकर ध्वज कर त्रिशूल छावसारी । स्था० । १ ।
एकसमैं अहुराहुर मिलकर मथ्यो सिंधु पयभारी
२ चौदे रत्न ता ममथ निकस्यो हालाहलविषजा ।
री ३ अत उलण करजत देवगण शंभुशरणानवधा
री ४ करुणाकरकरधार लियोगर नीलकंठजग

रा॰ चारी॰ ।५। बालनिधीतव बिज्वर ह्वरगण पमेज ।
म उपकारी॰ ।६। ग्रन्यत्त् षट्पदी ।। शिवग्रनंद म
न ध्यान मगन नित मीलित लोचन नत्पट धारी
ईन्द्रिय गण मन हढ किये पद्मासन धार लिये
ह्वबसारी॰ १ इडापिंगला मध्य ह्वाबमना सहित
प्राण मव मध संचारी॰ ।२। प्रथम ग्रधार लिंग

९

नाभीउन ह्रिदय चक्रदीयो अम्रुकारी
३ कंठललाट मध्य ग्राज्ञांब्रुजमदावैसे
निजरूपसंभारी ४ अम्रतपानकर मन्नर
है जहां जराकाल नहि अतिभयजारी·
५ बाल तिथी जोगिन पत संपत देऊ
सदा निज विरय विचारी ६ ॥

रा॰ रागिनी पर्ज ध्रुवपद श्रीसूर्य्यम्पजीके

दिन कर प्रतपल देव अपर देव गुन

रहे अति अनेद दायिक जग कर्म्म फल वि

धाता॰ सूर्या उदया चल अरुण वर्ण होतसा

र अत उतीत ऋषि यत जप तप गुरु वर्ण

प्राण दाता॰ अं॰ सांग वेद पाठ करैं मनमें

10

अनत और औरैं साधु संग विविध देश मिल स
माजगाता से जड चितन्न आत्म जान तिमि
र हरण ध्यान औरै हौ बुद्धि तिमिर मिहर बा
ल भक्तिदाता॥ श्रीसूर्य्यस्य ध्रुवपद रागि
नी परजे अति प्रचंड मंडल जिंह तिमिर
हरन सकल जगत अगत जगत आत्मरूप।

ग॰ व्यापक जग चारी॰ स्या॰ सम अश्व सदा राम
न यान जास श्रास पास घूमत भ गोल स
कल दिवस रजनिकारी॰ श्रे॰ पूर्व दिशा पश्चि
म दिक उत्तर तिन भेद जैनैं दक्षिण दिक वा
र भांत भिन्न भिन्न जारी चारकोण अग्नि निऋ
ति वायव पुन ईश कोण वाल निधी सकल भेद

श्री जग उजारी ॥

॥

रागिणी॰ पर्ज॰ षट्पदी॰ दशावतार ताल ३

चरण कमल अरलाये निरंजन जगपति मेवो

ध्य॰ ॥ १ जगुल ब्रह्मरूप धरविरचित जगत जन

देवो २ सतगुणविस्नुभयोकमलापति पालक

श्रम सनमेवो ३ तमगुणरुद्र जगत संहारकप्र

लय कालकोमेवो ४ मच्छकच्छवराह श्रकार न

रा॰ १ हरि वामन परशुराम मनयेवो॰ ५ वालति
धी पति रामचंद्र बुध कल्कि नाम निनलेवो॰।
६॥

12

मिश्र तलनीया कश्यपनः ४५ स्फटि यानाछेसाम
क्षत सक्षना नामपिवया। ह्रंस्यतसंलङ्घेतिसिरमि
व वेङ्गश्च सरणीः। इयंते साम्रुतिःसकल स्वरसंसेख
सल्लिला। समंतःसंतापं त्रिविध सथ्यता पंवह
रनाम्। ४६। वथानद्धागेवे हङ्गिमर् मणीयं परि
करम्॥ किरीटे वालेंडे निय मय श्चनः पन्नगाग

रा॰मा॰
गे॰

तैः ॥ नक्रयाँस्ले हेला मितरजनसा थारणाघिया-

जगन्नाथ स्याये स्वरधुनि समबार समयः। ४७

शरत्स्वेद्रश्वेतो शशि शकल शोभाल मुकुटोक

देः क्रेभो भोजे वरभय निरा शैाव दयतो ॥ स्व

या याग कारा भरण वसनो भ्रमम करे ॥ स्थि

तातोये ध्याये स्तदयमि ननेषां परिभवः ॥४८॥

दश्मिन समलसहृदन कोंति एतम्स्तैर्भे वज्जल

न भर्जिता नतिश मृजेंपनो नवान् । विदेक मय

वेड्का चय चमन्त्रुति नवतो । त्वनोत्न मम शे

नतैो मपरि शेतनोरगना ४८ मेत्रैमीलित मोछये

मेञ्ञलिनं यले ह्रगाणंगणैः । ह्रलं माहृ ह्रथार

मेर्विगलिनं गाहन्मैतेर्गोवभिः । वीविन्तालित

रा॰मा॰
बे॰

कालि माहिन पदे स्वलोक कलोलिनी ॥ नेपा।
पे समया धना मम भव आला वलीफाम्मनः ॥
॥५॥ सुने नागेंद्र कृति समय फणि गणश्रेणि
नदौड भाग्यः ॥ सर्वले हारपिना स्वमय धुर भि
रिहाक पाणी कर्न कामे। साकुते हैम वना सर
डल हसि नया वीदिनापास्तवांभो ॥ आलो

लोलासिवल्ली लहरी नवखड्गा। श्लोऽश्वेनः श्रनीतो

५१ ॥ विभूषितानंगरिपूत्तमांगा। सद्यःकृतानेक

जनार्तिभंगा। मनोहरोत्तुंगचलत्तरंगा। गंगाम

मांगान्यमलीकरोतु ५२ इमां पीयूषलहरीं जग

न्नाथेन निर्मिताम् ॥ यः पठेत्तस्य सर्वत्र जायंते

जयसंपदः ॥ ५३ ॥ इति रागमालकौशस्य गंगा

रा·मा·
ते·

लहरी परिच्छेदः समाप्तः ॥ शुभंभूयात् ॥

incomplete

तालचार.

रा. रागिनी परज झवपट श्रीब्रह्मजी के रागमालीजैजैवंती अगन

जगन आतमरूप अतिअनूप रूप रहित रंग ढंग

कछुककही कहन सकत रसना । स्था । नयन ।

नहिन देखसकैं थकित कान सुनत सुनत मनविकल्प

नानाविधजगतसोचरचना । अं । सुबुयबोधना ।

हिंयेरैसरेजगतदंदफंदजेयसैंनिजबीनहोत्रविसु

रा.
प.

रागिनीपर्ज ध्रुवपद श्रीब्रह्मजीके तालचा
र. अगत जगत आत्मरूप अतिअनूप रूप र
हित रंग ढंग कछुककैंही कहत सकत सम
ता ध्या नधत नहिन देवसबैं थकित कान।
सुनत सुनत मनविकल्प नानाविध जगत
सोचरचना। अं। सुबुधबोधनाहिंयातें सोज
गतटंटफंटजगमैंनिजबीनहोतविस्कु ॥

इति श्रमस्थाई ॥ जौन जौन पूजे तोहे मांगत फल

पावें सोई हृय एत देके वाको करत निहाल।

न्द ॥ इति श्रेतरा ॥ जगत बीज मनुज सब ध्यान

ज वस्र एत सहित भक्ति रहित तेरी तुहें ध्रति

पाल न्द ॥ हाथ जोडके हे आधीन मेरी उर हो

प्रवीन तेरो नाम दीनबंधु दीन के दियाल न्द

ग॰ इति आभोगः ॥ ❖ ॥ इति कलिंगारा रागस्य॥
क॰ग॰ गणेश परि च्छेदः॥ समाप्तः ॥ ❖ ॥

२२

गं॰ २

२नि २ध २प २म २ग २रे २सा २सा २रे २प २म २ग २रे

म दासी नित वांको धरत ध्यान पूज मन मेरे ॥

२प २म २ध २नि २सा २नि २सा २रे २नि २सा २नि २ध २ध २प

नटा ज्नट सीस गंग गौरि जाके सोहे संग पंचव

२नि २ध २प २ग २म २ध २प २म २रे २ग

क तीन नयन चैन भस्म अंग तेरे ॥ इतिस्थायी

२सा २नि २सा २रे २ग २म २ध २प २नि

अन्तरा ॥ चंद भाल व्याल भूषण हरत विघन

२ध २प २म २ग २रे २प २रे २सा २प २म २ग २रे २सा

दूषण सब आनंद हर्ष दौडाडे द्वार बन चेरे ॥

२प २म २ध २नि २सा २नि २सा २रे २नि २सा २नि २ध २ध

हेडं माल मृगछाल देख दीन भये निहाल है

गा॰ षबा हठ्ठै हन्नर पातक सब कौरै हूर आधी
क॰गा॰ न अभु तैरै ॥ इतिआभोगः ॥ ❖ ॥ इति क
२४ लिंगरा रागस्य विस्तु परिच्छेदः समाप्तः ॥❖

अथ कलिंगरा रागस्य शिवपरिछेद माह ध्रुव

पद ताल चार ॥ हर हर हर हर कर समरत स

ब नारी नर जटा जूट सीस गंग भालचंद सोहे

इति अस्थाई ॥ शुक्लवरण नैयन श्रवण मुद्रा

नोके सोहें करण हंडमाल हाथ डिमरु तीन लो

क सोहे ॥ इति अंतरा ॥ अंग बभूत अव धूत ना

२प २नि २ध २प २म २ग २रे २सा २सा २रे

गा· गहै को याहो सत मैना जो की प्रेत भूत भूषण

२प २म २रे २सा २प २म २ध २नि २सा २नि

क·गा· व्याल सोहे ॥ आसन कीन केहर बाल बासन

३सा ३रे २नि ३सा २नि २ध २ध २प २नि २ध २प २ग २म २ध

लीन कर कपाल शक्ति संग अति विशाल दी

२प २म २ग २रे २सा २रे २प २म २ग २रे

न आधीन कर निहाल दुःख दारिद खोहे ॥

इति आभोगः ॥ राग कलिंगरा ध्रुपद शिव ता

२सा १नि २सा २रे २ग २म २ध २प

ल चार ॥ कैलास के निवासी जो के कुशल दे

१३

पि·

ॐस्हरो । स्तोवा प्पय वानरो ।

नरः सर्वात्मनाया स्हस्नरुमी

स्वर्ं भजेन रामं मनुजाकृतिं

हरिं यउन्नरा ननय त्कोपाला

परमात्मनेनमः ॐमुक्तानांपरमायैगतयेनमः ॐ
अव्ययायनमः ॐपुरुषायनमः ॐसाक्षिणेनमः
ॐक्षेत्रज्ञायनमः ॐअक्षरायनमः ॐयोगायनमः
ॐयोगविधांनेत्रेनमः ॐप्रधानपुरुषेश्वरायनमः
२० ॐनारसिंहवपुषेनमः ॐश्रीमतेनमः ॐकेश
वायनमः ॐपुरुषोत्तमायनमः ॐसर्वायनमः ॐ
शर्वायनमः ॐशिवायनमः ॐस्थाणवेनमः ॐभू
तादयेनमः ॐनिधयेअव्ययायनमः ३० ॐसंभवा

त्विवं नजन्म नूनं महतो नसौभगं नवाङ् नवुद्धि
र्नाकृति स्तोष हेतुः तैर्यद्विसृष्टा नपि नो वनौक
स श्चकार सख्ये वत लक्ष्मणा ग्रजः स यस्य पा
द द्वय सिद्धशासनः सदा समभ्यर्चति पाकशास
नः प्रभोः प्रसादा मलया हयासनः क्रिया द्विप
डुंग मनंग शासनः ॥ बालकराम ॥ शुभम्
ॐनमोभगवतेवासुदेवायनमः शुभम् कल्याणम्

परमात्मनेनमः ॐमुक्तानांपरमायैगतयेनमः ॐ
अव्ययायनमः ॐपुरुषायनमः ॐसाक्षिणेनमः
ॐक्षेत्रज्ञायनमः ॐअक्षरायनमः ॐयोगायनमः
ॐयोगविदांनेत्रेनमः ॐप्रधानपुरुषेश्वरायनमः
२॰ ॐनारसिंहवपुषेनमः ॐश्रीमतेनमः ॐकेश
वायनमः ॐपुरुषोत्तमायनमः ॐसर्वायनमः ॐ
शर्वायनमः ॐशिवायनमः ॐस्थाणवेनमः ॐभू
तादयेनमः ॐनिधयेअव्ययायनमः ३॰ ॐसंभवा

म. २

यनमः ॐभावनायनमः ॐभर्त्रेनमः ॐप्र
भवायनमः ॐप्रभवेनमः ॐईश्वरायनमः ।
ॐस्वयंभुवेनमः ॐशंभवेनमः ॐआदित्या
यनमः ॐपुष्कराक्षायनमः ५ ॐमहा
स्वनायनमः ॐअनादिनिधनायनमः ॐधा
त्रेनमः ॐविधात्रेनमः ॐधातुरुत्तमायन
मः ॐअप्रमेयायनमः ॐहृषीकेशायनमः
ॐपद्मनाभायनमः ॐअमरप्रभवेनमः ॐ

विश्वकर्मणेनमः ५० ॐमनवेनमः ॐत्वष्ट्रे
नमः ॐस्थविष्ठायनमः ॐस्थविरायध्रुवा
यनमः ॐअग्राह्यायनमः ॐशाश्वतायनमः
ॐकृष्णायनमः ॐलोहिताक्षायनमः ॐप्र
तर्दनायनमः ॐप्रभूतायनमः ६० ॐत्रिक
कुब्धाम्नेनमः ॐपवित्रायनमः ॐमंगला
यपरस्मैनमः ॐईशानायनमः ॐप्राणदा
यनमः ॐप्राणायनमः ॐज्येष्ठायनमः ॐ

म. ३

श्रेष्ठायनमः ॐप्रजापतयेनमः ॐहिरण्यग
र्भायनमः ७० ॐभूगर्भायनमः ॐमाधवा
यनमः ॐमधुसूदनायनमः ॐईश्वरायन
मः ॐविक्रमिणेनमः ॐधन्विनेनमः ॐमे
धाविनेनमः ॐविक्रमायनमः ॐक्रमायन
मः ॐअनुत्तमायनमः ८० ॐदुराधर्षायन
मः ॐकृतज्ञायनमः ॐकृतयेनमः ॐआ
त्मवतेनमः ॐसुरेशायनमः ॐश ॐसूमयु

3

त्कोदंडपाणिः यस्यधनुर्द्धारणेनस्वभक्तशत्रुनाशः प्रतीय
ते पुनःकीदृशः जगत्प्रद्योतः सूर्य्यस्तस्यान्वयः सूर्य्यवंशोय
स्तज्जलजम् वारिजातनिकरे कमलसमूहे मित्रःसूर्य्यः तद
त्प्रमोदप्रदः प्रमोदोविकसनमानंदस्तंप्रकर्षेणददातीति प्र

ॐश्रीसीतापतिपादकंजयुगले भृंगोल्लसत्प्रीतिमञ्जीमञ्जीरणवीरसिंहनृप
ति वीरहृदरोजीसितुक पेसाधींद्रमहेंद्रराज्यस्तिपरः काश्मीरजेन्द्रादिपः जी
यात्पुत्रकलत्रमित्रसहितः संपालयन्मेदिनीम् ॥

मोदप्रदः यद्वा सूर्य्यान्वय एववारिजकोमहद्ध्रदः तत्रवंशः
तज्जातकमलनिकरे राजकुलम् अतःसूर्य्याहृष्टि तस्मात्त
सूर्य्येतेततः कमलोत्पत्तिः सूर्य्यकमलयोरितिः प्रसिद्धा गगं

2

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॐ देवेंद्रेति श्रीरामः श्रीरणवीरसिंहनृपतेः
रत्नकोशो भवेदित्याशीः कथंभूतस्य प्रभोः राज्ञः अयोध्येशस्य पुनः
कथंभूतस्य धर्म्मास्पदस्य कुतो हेतोः शालिग्रामनर्मदेश्वरपार्थि
वलूषार्द्धनगामनामलोलन जपहवनादिसत्कर्म्मानुष्ठानकरणात्

ॐ देवेंद्रारिविमर्द्दकारिविलसत्कोदंडपाणिर्जगत्त्रयोतान्वयवारिजातनिकरे मित्रः प्रमोदप्रदः
श्रीरामो नृजगत्यवाहृजनमावैः सेव्यो भवेद्रत्नकः श्रीमत्श्रीरणवीरसिंहनृपतेर्द्धर्म्मास्पदस्य प्रभोः ॥

नष्टकंगीतान्त पंचदावरतिश्च हस्तन्नदेवेनरोजनतः सघस्त्रमाणं
कुरुते लोकललटन्नवर्तते ऽनेनैव धर्म्मास्पदत्वम् श्रीरामः प्रियाशी
नृपाणुकोरामः श्रीरामः पुनः कीदृशः देवानामिंद्रः देवेंद्रः तस्य
अरयः शत्रवः राक्षसाः रावणादयः तेषां विमर्द्दकारि विलस।

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ देवेंद्रेति श्रीरामः श्रीरणवीरसिंहनृपतेः रक्षको भवे
दित्याशीः कथंभूतस्य प्रभोः राज्ञः श्रीयोद्धरेशस्य पुनः कथंभूतस्य धर्म्मास्पदस्य
कृतो हरहरः शालिग्राम नर्मदेश्वर पार्थिवरुद्राक्षैन राम नाम लेखन जपहव
नादि सत्कर्म्मानुष्ठान करणत्वात् ॥ तदुक्तं गीतासु यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्त

ॐ देवेंद्रारिविमर्द्दकारिविलसत्कोदंडपाणिर्ज्जगत्त्रयोतान्वयवारिजाननिक
रे मित्रः प्रमोदप्रदः श्रीरामो नु जगन्नवाहनमुखैः सेव्यो भवेद्रक्षकः श्रीम
च्छ्रीरणवीरसिंहनृपतेर्द्धर्म्मास्पदस्य प्रभोः ॥

देवेतरो जनः स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्त्तते ॥ नेनैव धर्म्मास्पदत्वम् ॥ श्री
रामः श्रिया सीतया युक्तो रामः श्रीरामः पुनः कीदृशः देवानामिंद्रः देवें
द्रः तस्य अरयः शत्रवः राक्षसाः रावणादयः तेषां विमर्द्दकारि विलसत्को
दंडपाणिः यस्य धनुर्द्दण्डेन स्वभक्ता शत्रुनाशः प्रतीयते पुनः कीदृशः
जगत्त्रयोतः सूर्य्यस्तस्यान्वयः सूर्य्यवंशीय राजकुलम् वारिजाननिकरे

से म·
१

कमलसमूहे मित्रः सूर्य्यः तद्वत्प्रमोदप्रदः प्रमोदो विकसनमानंदस्तत्प्र
कर्षेणददातीति प्रमोदप्रदः यद्वा सूर्य्यान्वय एव वारियुक्तोमहह्रुदः
स्तत्रवेष्टः तत्तानाकमलनिकरं राजकुलम् कुतः सूर्य्यात्दृष्टि स्तस्मात्प्र
दः सूर्य्यस्तेनततः कमलोत्पत्तिः सूर्य्ये कमलप्रीतिः प्रसिद्धा गर्गसंहिता

ॐ श्रीसीतापतिपादकंजयुगले भृंगोल्लसन्श्रीतिमत्कीर्त्तिमत्सूरिरणवीरसिंहनृप
तिश्रीहारदरोजीसियुक् पेसायीडमहेंद्रराज्यसिपरः काश्मीरजंबादिपः म्बा
जीयात्पुत्रकलत्रमित्रसहितः संपालयन्मेदिनीम् ॥

यो श्रीकृष्णवाक्यं गोपीनां योयस्यचित्तेवसतिनसदूरे कदाचन रविसूर्य्यः
कमलेभूमौ हृष्ट्वदेस्फुटतिप्रिये तथासूर्य्यस्यापिकमलेप्रीतिः सदास्व
करधारणत्वात् तद्वत्परस्परंप्रीतिस्तस्मात्प्रमोदप्रदत्वम् पुनः कीदृ
शः रामानुजो लक्ष्मणः गन्धवाहो वायुस्तस्यात्मजो हनुमान् तन्मुखः

सर्वेऽनुचरास्तैः सेव्यः

सू॰सा॰
कृ॰
२

ॐश्रीकृस्नायनमः राग केदारा

कीजै पान जल रे ल्याई हरषि जसोदा मैया। कन

क कटोरा भरि कै लीजै यह पयै पीजै सुघट कन्है

या। आछे औटौ मेलि मिठाये रुचि करि अचव

न कौं न कन्हैया। बहुत जतनन करि के राखो मै

नमकारनवलभैया छकि छकि जननी पैप्यावति

आनेदउरनसभैया। सूरदासप्रभुपपपीवतदोऊ

जननीलेतवलैया। रागकेदारा

वलमोहनदोऊअलसाने। कछुकछुपाइहूथि

लैअचयौसुषजंवातजननीजियजाने। उठौलाल

स्व·म्रा
८
२

कहिमुषपषरा यौ तम कोलै यौ ढाऊं। तम सौ वौ मै

तमै तमै सवाऊं कसु मधुरे सरगाऊं। तरतजा इ

पौढि दोऊ मै या स न तम यौ श्रा नेद। सरदास जस

मति सबपावन पौढि बालगो विंद। राग भैरो

उठै नंद कुमार भयौ सकार ज

२

मित्र कलत्र सहितः पुनः कथंभूतः श्रीशोभा तद्युक्तासी
ता श्रीसीता तस्याःपतिः श्रीसीतापतिः तस्यपादपवकंजः
पादकंजः पादकंजयेयुगलं पादकंजयुगलं तस्मिन् उ

खिन्नागानसरस्वतीक्षितितलेस्वेच्छाचरानुद्वरैर्भग्नाङ्गासमगीतशास्त्र
विरहाद्विज्ञान्निजार्थेरज्ञान् दृष्ट्वाश्रीरणवीरसिंहनृपतिः त्राणार्थमत्रा
गमच्छ्रीजम्बूपुरवासिनीहसुखितालब्धादरापातुसा ॥४॥

लसत् प्रीतिमान् भृंगइव· किंकुर्वन्· पुत्रमित्रादिनूपेणमे
दिनीं पृथ्वींपालयन् सत् जीयात्· उत आत्मावैजायते
पुत्रः ॥३॥ खिन्नेति· हेनृपते त्वां गानसरस्वतीपातु कीदृशा

संहितायां श्रीकृष्णवाक्यं गोपीनां· योयस्यचित्तेवसतिनस
हूरेकदाचन ॥ विसर्य्यः कमलंसमौदहेतुंदस्फुटतिप्रिये·
तथासूर्य्यस्यापिकमलेप्रीतिसदास्वकरधारणत्वात् तद्व-
त्परस्परंप्रीतिस्तस्मात्प्रमोदप्रदत्वम् पुनः कीदृशः रामा
नुजोलक्ष्मणः गन्धवाहोवायुस्तस्यात्मजोहनुमान् त-
न्मुखः सर्वैरनुचरैःसेव्यः ॥१॥ श्रीसीतेति· श्रीमच्छ्री१०८
रणवीरसिंहनृपतिर्बाहादुरजी सिपेस आयी इंद्रमहें
द्रसिपरसलतनतकाश्मीरजम्बूआदिदेशाधिपतिर्जीयात्
सर्वोत्कर्षत्वेन वर्त्ततांतस्यजयोभूयात् कथंभूतः सः पुन

अर तीसरा मांजिष्टा राग है. जो हटने वाला नहो अर अतिशोभाकर युक्तहो अवमान उसकों कहिते हैं जो कोप हो सो दोप्रकारकाहै. १ प्रणयमान २ ईर्ष्यामान दोनो में प्रणय मान उसको कहिते हैं जो वडीप्रीति देखकर प्रेमकीकुटलतामें कोप होना विना कारणथी। ओर ईर्ष्यामा

माञ्जिष्ठारागमाहुस्तंयन्नापैत्यतिशोभते मानः
कोपःसतुद्वेधाप्रणयेर्ष्यासमुद्भवः द्वयोःप्रणयमा
नःस्यात प्रमोदेसुमहत्यपि प्रेम्नःकुटिलगामित्वा।
ॐतमः न्कोपोयःकारणंविना पत्युरन्यप्रियासङ्गेदृष्टेथानुमि
तेश्रुते० ईर्ष्यामानोभवेत्स्त्रीणांतत्रत्वनुमितिस्त्रिधा ॥

न वोह होता है. जब आपनापति किसेअवर की स्त्रीसंग सक्तदेषा हो अथवा. अनुमित कियाहो. अथवा श्रवणकीया हो. वोह स्त्रीयों का ईर्ष्यामान होता है. तहां अनुमिति ती न प्रकारकी हये ॥

ना॰
२९

स्वप्नायित भोगांक गात्रस्खलन येहीतीन भेदहैं स्वप्नमें पतिकोंअन्यकामिनीसहस्वप्नदेख
णा॰ वा पतिकेदेहमें अन्यस्त्रीरतिकेचिह्न देषने॰ वापतिके अंगोका स्खलन का शिथिलदेषणा॰
येहीतीनप्रकारकी अन्तमितिहूये॰ अब इसकेभंगवास्ते पतिको उपाउ करे सो येह हूये साम।

उत्स्वप्नायितभोगाङ्कगोत्रस्खलनसम्भवा साम
भेदोऽथदानंचनतिरुपेक्षारसान्तरम् तद्भङ्गायपति
कुर्यात्षडुपायानितिक्रमात् तत्रप्रियवचःसाम
भेदस्तत्सख्युपार्जनं दानंव्याजेनभूषादेःपादयोः
पतनंनति ॥

भेद दान नति उपेक्षा रसान्त
र ॥ अब तहां जो प्रियवचनोंकाक
थनकरणा उसकों साम कहिते हैं और जो तिसकी साखीयेंकोंआपनीतरफकरलेना उ
सकों भेदकहिते हैं और किसीभूषणकेवहानेजाना येहतरेवालेनयावनवाया है॰ ॥॰

के देह के सम समझते हैं जैसे देह में एक मेरु
दंड होताहै जिसको पृष्ठवंश कहिते हैं तिसके
स्थान वंसका अथवा काष्ठ निर्मित बीणाका

अथातस्तन्नाध्यायः प्रारभ्यते ततंवीणादिकंवाद्यंस्यादित्यमरः दारवीगात्रवीणाचद्वेवीणेगानजाति
षु गात्रवीणास्वराध्यायेप्रपंचिता दार्वीवीणाःप्रोच्यंतेधुनातास्वायामहतीवीणा तल्लक्षणम् कोहली
ये· दंडंवंशमयंकांतं वर्तुलंतत्स्वगुप्मकम् तवस्तैस्स्वरस्थानंचात्रयत्नेनकारयेत् तस्मिन्दंडेसमसंख्या।
मोटंनीसन्निवेशयेत्॥

दंड होता है मनुष्य के पृष्ठवंश के जोड जो हैं उ
नके स्थान इक्कीस सारं बीणा में हैं जैसे देह में

व न म ह र को गा न । स ब आ प र हे स ब ल सी दा

मा हा रे अ ब कौं ना न । ब ड़ र वा र ह रि स ब ल हिं था

प ग द्यौं सी दा मा जा ३ । दे दे सो ह ने द वा वं की ज

न नी पे लै आ इ । हं सि हं सि ता री दे त स घा स ब भ प

सी दा मा चो र । सू र दा स हं स क ह त ज सो दा जी

छु नैननि सुष दीजै मैया कों। मैं मूंदौं हरि आंषि तु
म्हारी बालक है लुकाई। हरषि स्याम सब सषा बु
लाये षेलन आंषमुंदाई। हलधर कह्यौ आंष कों
मूंदै हरि कह्यौ जननि जसोदा। सूरस्याम लिये
जननि षिलावति हरष सहित मन मोदा॥

सू
रा·स

राग गौरी                    हरि अपनी तब

श्रीषिझे दाई। सषा सहित बलराम छुकाने जहां

तहां गई भगाई। कान लागि जब कहौं जसोदा

वाहर मैं बलराम। बलदाऊ कौं आवन दीजैं सी

दामा सों काम। दौरि दौरि बालक सब आवत छु

2

केकनियों। कछ्कघातकच्छुथरनगिरावतनिरघ

तिहैनंदरनीयों। वीरवरावेसनबङ्भोंतनिबंज

निविधिआगनियों। डारनघातलेतअपनेकरहव

माघनदधिडनियों। मिसरीदधिमाघनमिश्रत

करिभुघनावतछ्विचनियों। आभुनघातनेद

सू
रा∙स

शुषनोवनसोसुषकहतजवनियो। जोरसने द

जसोदाविलसतसोनहींनिहूंभवतिनियो। सूर

दासप्रभुब्रजजननिरषतआनंददेतनौछुनियां

श्रीषमूंदनषेलरागकानड़ा

बोललेउहलधरभैयाकों। मेरेआगेषेलकरोक

मथतनंदबैठेल्यावड़बोलकान्हतनकालहि।भोज

नकरैंनदसंगमिलकैभूखलगीह्वैहैमेरेबालहि।

सूरस्याममगजोहतिजसुमतिआईगयेसननबच

नरसालहि॥ रागनट हरि

कौंटेरतहैनंदरानी।बड़ीबेरभईकहूंखेलतकहा

सू
रा स

रत्यौ अब सारेग पानी। सुनत हि टेर दौरत नब आये कब
कि निकसे लाल। जेवति हौं तुमारे बिनु नंद बेग बल्यौं
गोपाल। स्याम हि ल्याई महर जसोदा तुरत ही पाइ प
धारी। सूरदास प्रभु संग नंद कै बैठे है दोऊ वारी ॥

राग सारंग जेंवत स्याम नंद के

आई दोऊ बैठे उन बिन भोजन कौने काम। जसुमति

सुनति चली अति आतुर ब्रज घर टेरति लै लै नाम। आ

ज अबेर भई कहुं खेलत बोल लेउ हरि को कोऊ बाम

ढूंढ फिरी नहिं पावत हरि कौं अति अकुलानी आव

ति धाम। बार बार पछितात जसोदा बासर बीत ग

सू.
राम

घेजगजाम। सूरस्याम कौं कहूं न पावति देषे बहु

बालक बहुं ठोम॥ राग नट

कोऊ माई बोलि लेंउ गोपालहि। मैं अपने कौ पंथ पति

हारति षेलन वेर भई नंदलालहिं। देरन वडी वेर भई

मो कौं नहीं पावति घनस्याम तमालहिं। सदजेवन

८

हरनषअतविराजतछबिनवरनीजाइ।मनहुबा
लकवारिथरिनवचंददईदिषाइ।गुंजमालविशा
लउपरकछुकहौउपमाइ।मनोनीगगनननिविच
तनिसगगनद्यौछाई।अरुनअधरअनूपनासानि
रषजनसुषदाई।मनोंसुकफलबिंबकारनलैन

सू.
रा.स

6

वेष्यौ आइ। कुटिल अलक बिना वघ्न की मनो अलि

सि सजाल। सूर प्रभु की ललित सोभा निरषि रही ब्रज

बाल ॥ राग सोरठ नातनेद

स धि करी कान्ह के लागी बोल स्याम बलराम। षेल

न बछी वेर कहूं लाई ब्रवीनर काहू के धाम। मेरै संग

नहीदयिविरतमिताई। षेलतषाइदुराइदेतफ

गरतदोउभाइ। श्ररसपरसजुदियागाहैवरजत

हैमाई। महाढीठमानैनहीकछुलडुरबडाई।

हंसकैबोलीरोहनीजसुमतिसुसकाई। जगन्ना

थधरणीधराइसूरजबलिजाइ॥ रागनट

सू
रा स

षेलत स्याम अपने रंग। नंद लाल निहारि
सोभा निरषथ कनत्रु नेंग। चरन कछु विनि रषडरयौ
गगन रह्यौं छपाइ। जाउ कलभा की सबै छवि निदर
लई छुडाई। जुगल जंघनि षंभ रंभा नही समर उताहि
कटि निरषि केहरि लजाने रहे वन घने चाहि। हृदय

सू
रा॰स

ठाढे षेलो जडराई। मोको सुष दिषराइ कै त्रैताप न

सावड़ु। तुम सुवेंद च कोरै नैन मधु पान करावड़ु।

सुष तैं पट हरि हरि हूर करी भगननि हष कारी। हम

न उठे हरि सेज तैं हूर ज बलिहारी ॥ राग बिलावल

बाल भोग कनक कटोरी भा

गावति नंदकी रानी। फारे लै जल वदन पषारो सब
करि सारंग पानी। माषन रोटी अरु मधु मेवा जो भा
वै सो लीजै आनी। सूर स्याम मुष निरष जसोदा मन
ही मन हरि सुहानी। राग विलावल
भोर भयो मेरे जागौ कुंवर कनाई। सषा सबै द्वारे

मा॰रा॰
१

ॐ अथ मधुमाधवी रागिनी प्रारंभः ॥ मधुमाधवी रागि

नीका प्रातःकाल समय है अरु संपूर्ण है अरु इसका

हनुमान् ऋषि है अरु इसका प्रजापति देवता है अरु शृंगा

र रस है अरु स्वकिया नाइका है अरु इसका ग्रीष्म ।

ऋतु है ॥ अथ मधुमाधवी रागिनी ध्यानम् ॥ श्लोक । विनियोग गाउ प्रात

श्लोक । स्रग्धराछंदः ॥

ॐ आस्मिन्नाश्रुवनेहि प्रियमदद्रुपालिंगनेचैवहर्षा

न् । नेत्राभ्यांडः स्वमांशुकमलच्छविरगा हृदि देशे प्रहासमा

न् । स्वर्णाभ्रदेपशरीरेहन्नुनिमसिसमिते हर्षितेकुंकुमेन

शोभाढ्याभैरवस्यांप्रतिप्रभमयुमा श्रीप्रियाभासतेसा

इतिध्यानम् ॥ अथभाषाध्यानम् । सवैया ॥ देत अलिं

गन छुबन प्रीतम आनंद सो जो कछु हंसिकै ॥ के

चन देह दिपै लगि कुंकम ठोडी में दीनो मसा मसिकै

[margin: लोचनमोचनहैं दुब केछविनीरजहूं कि गईनसिकै २]

हरिवल्लभ भैरवकी तरुनी छबि सो मथि रहीलसिकै ॥ [above: नाथ]

मा॰रा॰
२

इतिभाषाध्यानम् ॥ अथस्वकियानाइकालक्षणम् ॥ दो॰

दोहा। मन बिंना यन वावनतैं बिंना मणि की रीत ॥ स

खी सील कुल कान अरु प्रीतम पावन प्रीत ॥ पर न

न वैंकी नरा जरी यातें उर मै लगाय ॥ छोह पवै पर

पुरुष की जंनि त्रीया परम लजाय ॥ इतिनायकाल।

क्षणम् ॥ अथश्रृंगाररसलक्षणम्। मो हनि मोहन

प्रीति करे निज
नारि सों परना
रिन प्रति कुल
केशो मन वच
कर्म कर लोक
हि ये मन कुल

स्यामकी कामनि देषि लुभाई रीफकै की मोही जकी।
बकी रही टकलाई ॥ पिय तन निरष कटाक्ष सौं यौं
त्रीय भरी लजाय ॥ मनो खैंच मन मीन को लीनो।
वनछी लाय ॥ पास आय मुसकाय कै अति दीनता दि
षाय ॥ नेह जनाय बनाय हरि मोमन लियो लुभाय
इति श्रृंगार रस लक्षणम् ॥ अथ मधुमाधवी रागिनी

मा॰रा॰
३

३

विनियोगः ॥ ॐ अस्य श्री मधु माधवी रागिनी मंत्रस्य ह
नुमान ऋषिः प्रकृति छंदः प्रजापतिदेवता क्लीं बीजं
मनो कामना सिध्यर्थे श्री मधु माधवी रागिनी विनियो
गः ॥ अथ करन्यासः ॥ ॐ क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृ
दयादि न्यासं सर्वे कुर्यात ॥ अथ मंत्रः ॥ ॐ क्लीं पंपं
उंपैं नमः स्वाहा ॥ अथोपमंत्रः ॥ ॐ उंपैं नमः ॥ ॐ इति

प्रीत्यर्थे जपे

ॐ मं मधुमा
धव्यै नम इति
मंत्रः ॐ मं
हृदयाय नमः

३

प्राणायामः। ॐ ऐं ह्रस्त्यासने ॐ ऐं ह्रस्तिपाद्येनमः ॐ ऐं ह्र
स्त्यार्घ्येनमः ॐ ऐं ह्रस्त्याचमनीयेनमः वस्त्रेनमः यज्ञोप
वीतेनमः गंधेनमः चंदनेनमः कर्पूरेनमः पुष्पेनमः धू
पेनमः दीपेनमः नैवेद्यं पुनराचमनीयेनमः दक्षिणां
सर्वे पूजनेकुर्यात्। अथजपसंख्या अष्टलक्षप्रमाणं।
८…… ॥ अथयधुमावती गायत्री ध्यानम् ॥ देवता

म॰ रा॰
४

मंत्र:। ॐ ब्रह्मणे नमः ॐ ॥ ध्यानम्। ब्रह्माणं रक्त वर्णं

मे पीत वस्त्र धरे कृतम् चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रं मस्तके स्फवि

हस्तकम्। इति ध्यानम् ॥ अब मधुमाधवी की येह ठाठ है

षड्ज सम रहता रिषभ उतरा गंधार् चढा मध्यम उत-

रा पंचम समरहता धैवत उतरा निषाद चढा इसका।

ग्रेह्रा न्यास यह मध्यम है भैरवी टोडी ललित इन रागों

के मिलापसें मधुमाधवी बनती है ॥ अथ सरगमः ॥

म प ध नि सा नि ध नि ध नि रे सा धा नि ध प म प ध नि

सा रे ग म ग ॥ इति अस्थायी ॥ म प ध नि सा रे ग ग रे

रे सा सा रे नि ध प म ग रे सा पा ध नि सा रे ग म ग रे सा

रे ग ॥ इति अंतरा ॥ अब इसका गान कहिते है ॥ अथ

च भरत मतेन टाठ क्रमः खड्ज सम रहता रिषभ॰

षडा गंधार वर्ज्जित मध्यम उत्तरा पंचम सम धैवत व
र्ज्जित निषाद उत्तरा ॥ अथ प्रकीर्णाः। सारंग बडहं।
मल्ल वृंदावनी ततः परं मधुमाधी त सामोक्ता हिनी
यग्रहन्यातपरम् ॥ ऋषभ गहसं युक्ता धगौ वर्ज्यात
षोडवा रेमपानिच सामोक्ता सारंगा मधुमाधिका।
अथ मधुमावी गत ओडव मसीतखानी ताल धीमा॰

16

अथ रागिनी टोडी शक्ति परिछेदमाह ध्रुव

पद ताल चार ॥ श्री वैस्नावि वैस्नव नित

अर्चित तव पाद पद्म मम हृदय धारि॥

इति अस्थायी ॥

न्हषातोयपदतलकौं । लग्यो फिरनखरभीजौं खन

सेवा उदितनगवनगद्द्रवनकौं । परमउदारचखरवि

नामनकोटिक्रमेरनिथनकौंराषनिहैजनकीपर

निज्ञाहयपसारनकनकौं । सेकटपरैनरनउदिया

वनपरमनभटनिजपनकौं । कोटिककरैपकनहिं

मानैसुरमहाकृतघनकौ ८ रागायनागिरी द्रुरिसोमीतननदेष्यो

कोई अंतकालसुमरततिंहिऔसरप्रानप्रनक्कोहोई ग्गारिगाहैं

15

मैं रख ज्ञान ध्यान धर आरे आहे जाने तन दर
तन धरैं दे नानादर दर । नारे नारे जाजिन जित
तनतेतें नारेना नानोर नोररर हर हर हर हर ना
रे नारे नारे नारे नारे नारे नारे नारे फदे नरयेथा

रा. गि काम शंभु पहं गयेऊ ॥ शिवहि विलोकि सशंकेउ मारू
रा.स. भयउ यथाथिति सबसं सारू ॥ भयेतुरत जगजीव सुखारे।
जिमि मद उतरि गये मतवारे॥ रुद्रहिं देखि मदन भयमा
ना। दुराधर्ष दुर्गम भगवाना ॥ फिरत लाज कछु करहि न
हिंजाई। मरणठानि मनरचेसि उपाई ॥ प्रगटसि तुरत

की को कहै ॥ अबला बिलोकहिं पुरुषमय जग पुरुष
सब अबलामयं । दुइ दंड भरि ब्रह्मंड भीतर काम कृत
कौतुक अयं ॥ सो० ॥ धरी न काहू धीर सबके मन
मन सिज हरे । जेहि राखेउ रघुवीर ते उबरे तेहि काल
मेंह ॥ चौपाई ॥ उभय घरी अस कौतुक भयेऊ । जब ल

मीन कमल खजन अलि म्रग जभप श

10

न तन कीने ॥ रागिनी रामकली ताल ॥
विस्नुपद माई गिरि धरनके गुण गाउं ॥ इनिश्च
स्याई मेरे नो ब्रन पैहै निस दिन औरन हवि उप
जाउं ॥ इस्पेनरा ग्रथय्रा भोगः खेलन आंगन
आउ लाडिलेनैं कडूं दरसन पाउं ॥ जेभ निदा स
हि लगाके कारण लाल वला गिर हाउं ॥

रा·रा· रागिनी रामकली ताल चर्चरी विस्नुपद

मेरी मति राधिका चरण रजमें रहो ॥ इतिश्रुस्या

ई इह निहचे करो भूलिकें कोउ कछू औरहू फ

लक

धनषोलै धकसौचीर डुए उःसासन विलष वदन।
भई डोलै जेसैं राहूनीच चराये चंद किरन झक
कोलै जाके मिचहै नंद नंदन सेफकलई पीन घरे
लै सूरदास जाको डरकाको हरिगिरि वरकैग्रोलै
३। राग धनासिरी जाल नमरी क्रपा विउ कौन उ
वारै अर्जुन भीम युधिष्ठिर सहदेव समति नकुल।

रा
स

12

बलभारे केस पकर लगायो दुःसासन राषै लाज

मुरारे नाना बसन बढाइ दियो अंबर नंद उगारे नग

नन होत चकित भयो राजा सीस धुनैं कर मारे जा

पर कृपा करै करुणामय को नाको दिसस कै निह

रै जौ जौ जन निस्चै करि सेवै हरि प्रभु अपनौ बिरद

संभारै सूरदास प्रभु अपने जननिकौं कबहू उरनै

श्रीपर

चामुंडा छत्र धारिणी । जगजननी ज्वाला मुखी आदि जोत

अनंता देवी सत्रु हरणी आनंदी नरन नारिणी ॥ हिम गिरि हिं

गला जवानी काशमीरी सारदा काम रुक मदा नल जावैज्ञ

भक्त सुख कारिणी ॥ राग भैरव ॥ चौताला ॥ सबी गणा सबे

कला शक्ति सारदा सरस्वती शयामा सुंदरी दुख हरनी सुख

म ग रे स नि रे स स ॥ म ध नि स स नि स ध नि स नि ध प म ग म ग रे स ग म ध

का·
रा·स·

करनी। कामरूकमला कामदायनी काली कल्याणी दुष्ट
दरनी। कमल वदनी करुणा कारणी काश्मीर वानी कैलासी
काल हरनी। परमेश्वरी पार्वती परम ब्रह्म पावनी ज्वरा रा
ज दास वरनी महा काली तारन तरणी॥ अथ गणेश वेद
ना॥ राग भैरव॥ चौ ताल॥ लंबोदर गज आनन गिरिजा

13

न्ते माद्र स्वधा र्भै विगलितं । गाढतमैते
ग्रंथिभिः । वीचिक्षालित कालि माहिन

ले साद्र स्वधा रमै विगलितं। गाहत्मैते
र्गवभिः। वीचिचालित कालि माहित
पदे। स्वल्लोक कल्लोलिनी। त्वं पापं घ्रा
मयाधुना मम भव। व्याला वलीफात्म
नः ५ स्यूते नागेंद्र कृत्ति प्रमथ फण
गण श्रेणी नंदीडमाख्यैः। सर्वत्वं हावयि

ह उपवन कासलसौं पकैचीर हू तो मेरे परसो हन ह
रनचसौ हाजगदीस कौन रहि औसर प्रगट भुकार
कसौं पकै चीरहू तो मेरेपर सोइन हरनचसौ हाज
गदीस कौन रहि औसर प्रगट भुकार कसौं सुरदा
स उमगे रोइ नैनावसन प्रवाहवसौ २८ रागबिला
वल ताल तितेलाज गोपालहिमेरी बिनती नहो

रा॰
स॰

चहेहों तिनकी खबर हरन सबन ननहेरी पनि प्रनि
रे समारमन महिघो भीषम दई वेद विपढेरी हा जग
दीस हासिकावासी भई अनाथ कन हौंटेरी वसन प्रव
हवढौं जब जान्यौ साप साप समुझ निमनफेरी स
र रस खामी जग भगत्यौ जानी जनम जनमकोवे
री रागद्वेषगेपार नाल निवहौं वोहरगहेकी लाज ३

षीपर

ज परीछित को न्रप दीनो। वज्रनाभ मथु
रा पति कीनो। द्रुपद सुता समेत सभ भा
ई। उत्तर दिसा गए हरि ध्याई। जोग पंथ
कर उन तन तजे। सूर सबै ते हरिपद भ
जे। ९८। राग बिलावल। सैंधवी ताल।

3

पद्मनाकरि हौं नंद नंदन कठिन भई है आज भी
षम करन होन दुरजोधन बैठे सभा विराज नेहि
देषित मेरो पटकाढ़न लीकलगै नमकाज षेम
कारि हिरनाकुसमासौं क्रुव नृप पसौनिवाज
जनकसुनाहित हस्यौ लंकपति वाध्यौ सागरगाज
गदगद सोरसा नयनन झलकत नैनति नीरसमा

रा·
सू·

3

जन उथित द्रौपदी जाना आन पनि आपथागपनि त्याज
हरेचीरफेर तन लज्जा नाको भरैजहाज काढ काढ।
ह्रास्यौ दुःशासन हाथन अघजी घाज विकल मानि।
कयो कौरव पनि पारौ सिरको ताज हरज श्रभु पहरी
न सदाई भनकहेन महाराज ३· रागकान्हडा ताल हाली
हल्ल कल्ल यौवोलै जेसे कोक विपरेतपरेने हरथसो

श्रीपर

सत्य वचन उज्ञ मोरे। वैन सभ गह्र तोरे।

कर और अज्ञा लेकर सोराजा वडे आनन्द
पूर्वक अपने घरको चला आया और तहां
अपनी रानीको पास उ



३१ । रागधनासिरी रागिनी मधुमाधवी ।

ताल । हमरी कृपा बिनु कौन उबारै ।
अर्जुन भीम युधिष्ठिर सहदेव समत्ति नकु
ल बलभारे । केस पकर ल्यायो दुसास
न राखै लाज मुरारे । नाना बसन बढ़ा

रा॰ इदियो प्रभुबल नेंद मुरारे। नगननहोत चकि
स त भयोराजा सीस फनैं करमारे। जापर कृपा
करै करुणामय कोनाकी दिससकै निहारै।
जैजैजनन निश्चै करिसेवै हरि प्रभु अपनो विरद
सँभारै। सूरदास प्रभु अपने जननिकौं कबहूँ उनै

मनगये दन। जिनवेध नमरल छलछ नप
कवरि कुवर मनि। तिनवानन वाराहवेध।
नहिमारति सिंचन। नप नाथ नाथ दस
रथ ग्रकथ कथ नवाल यहमांनिये मग
राजि राजि कुल सकुल यह बालक हठ
नजानियें।।१८। संदर छंद ताल ।राजि

7

श्री५२

४

रा॰स॰ यारयौं कीनें मेल्या विचार । इति वराह परिछेदः ॥

बीत्यो प्रलय विविध नाना कर सृष्टी रची बहुभांति
यह हरि मच्छ रूप जब लीनो कियो चरित विस्तार
जैजैजै श्रीमीन महावपु जैजै जगत अधार ॥इति
मत्स्य परिछेद: ॥ अथ कलकी चरित्र। कल्के अं
न आदि कृतयुगके ह्वै कल्की अवतार। मारि मलेछ
धर्म फिर थाप्यो भयो जगत जयकार ॥ इति कल्की
परिछेद: ॥ अथ वराह चरित्र। भूवकी रक्षा करन
जु कारन धरि वराह अवतार। पाछें कपिल रूप हरि

गा॰
सू॰

इन हरनचयौ। हाजग दीस कौन इहिं औसर
प्रगट पुकार कयौं । ~~पकै चौरइ ता मेरे पर~~
~~मोइन हरन चयौं । हा जग दीस कौन इहिं~~
~~औसर प्रगट पुकार कयौं~~ । सूरदास उमगे
दोउ नैना बसन प्रवाह बयौ ।२८। रागबिलावल रागि
नी मधुमाधवी

हरिसो टेर पुकारी । राखिलेहु मम लाज मुरा
री । २८ । राग सारंग ताल । अब कबहु ना
हीं नाथरसौं सकल सभामें बैठ दुःसासन
खेंचत आन गसौं । हारौ सब भंडार भौम अरु
उपवन वासलसौं । पकैबीर हु तो मेरे परसों

96

ॐ अथ सूरसागरे रागिनी सैंधवी परिछेदमा

हू रागसारंग ताल हरि हरि हरि हरि सुमरन

करौ हरिचरनार बिंद उरधरौ हरिबियोग पं

डुनजराज गये बनकियौ परीछनराज कहै

सुकथा सुनो चितधार सूरकहै भागोत अनु

सार ५८ रागबिलावलताल ॥ राजासो ब्र

प्री५२

ग रजनसिरनार कर्णोसनौ विननी सरदार वद

ख दिनभये हरिसपि नइपाई आज्ञाहोरनौ देषौ।

जार यहकाहू पारष हरिश्चगाप हर्मोसकल

जारव क्रयभये अरजुन सुननमैनजलधार

परसौपूरानि पराषारपकार नवधारक सेदेस

सुनायौ कर्णौ हरिज जोगीनागायौ सोसह

प ममहिरदैआनि रहियौ मदाकरन ममध्यान
नवग्रजंन ममधीरजधारि वल्यौसंगलै जेनर
नारि नहहेकावनमो भईलगाई लहेममविन
स्यामममहाई ग्रजन वइन उभित नवभय यह
ग्रपरूगना होतनिननये गावै रूपम नरंग ग्रुरू
नाग स्यालहिवस निमबोलैकाग केपैग्रव।

रा
म

वरषानहि होइ भयो सोच नृपचित यहूजोर र

हि श्रेनर अरजुन फिरिआयौ राजाके चरनन

सिरनायौ राजायाको केवनलगाई कह्यौ

ऊसलहै जादवराई बलवभदेव ऊसलहै स

वलोइ अरजुन यहसुनदीनोवोइ राजाकह्यौ

कहाभयोनोहि तुकौंकहत सुनावनमोहि ।

काहू असनकार नवकियो कैकाहू दानन।
द्विजकोदियो कैसरनागत कौनहिराख्यो कैतो
सो काहू कटुभाख्यो कैहरि जुभये अंतरध्यान
मोसों कहिते अगटवखान नवअरजल नैन।
नि जलधार राजा सोकसो वचन उचार सुर
ज प्रभु वैकुंठसिधारै तिहिबिन कौसमम कार

रा॰
सू॰

3

जसोदै ५८ राग धनासिरी ताल हरिबिनको पु
रवै मेरो स्वारथ मेंड़फनन सीसकर मारुत ह
दन करन ल्प पारथ याके हल्ल चरननि गनि
याकी श्रहस्याकौ पुरषारथ । पंचबाण से
कर मोहदीने नेऊगाये श्रकारथ । जाके सेग
सेन बेपकीनो जीतो महाभारथ । गोपीहरी

सरके प्रभुबिन बहनन ज्ञानप्रदारथ ५९ राग
बिलावलनाल घहसनराजा रोइपुकारे ।
भीमादिक रोये प्रनसारे । रोवन सब कुंना त
हाग्राई । कसै ऊमल जादव जउराई । श्रउत्र
न कसौं सबैलरगुण हरिबिन दूसप्रनाथ्य स
वरूप ऊतातानजे घरध्यान जीवन मरन ३

श्रीपर

ग· नहिंभलजान राज परीछितको न्पदीनो व

सू· ज्रुनाभ मथुरा पतिकीनो । द्रुपद सुतना समेत

सबभाई उत्तरदिसा गयहरिध्याई । जोग पंथ

कर उतननजे । सूरसबैने हरिपदभजे ॥ १८·

राग विलावल ताल । हरि हरि हरि हरि सु

मरनकरौ हरि चरनार विंद उरधरौ । हरिपरी

पुरषारथ्य । पांचबाण संकर मोहदीने ते
ऊगये प्रकारथ्य । जाके संगसेन बंधकी
तै जीत्यो महाभारथ्य । गोपीहरी सूरके
प्रभुबिन छुटनन प्रान पदारथ्य । रागवि
लावल रागिनी सैंधवी । ताल । यहब

न राजा गेह पुकारे। भीमादिक रोये पुन सारे
रोवन सन केता नहा आई। कहैं कमल नाद
व जडराई। अर्जुन कह्यो सबै लर भुए। हरि
बिनु हम अनाथ सब हूए। कन्ता प्रान तजे य
र ध्यान। जीवन मरन उनहि भल जान। रा

अनचाहिकौंजसोयाकीगोदवैठरामकृसनखवदियोगोपि
नकौंसमाधानकियोउरलायकै ॥ भक्तसनवोलासङ्कैछ
रजापससनिनसहतभक्तदईवडोभाईकै ॥ सवननकोप्रस
नकरिभ्रगुजीकीलातसहिऐसोग्रोरकौंनजाकोसरनली
जैजायकै ॥ २२ ॥ इतिकविनाथ्यायसंपूर्णसमाप्तम् ॥
रागभैरव ॥ अथपानशाहोकि ध्रुवपद ॥ चौताल ॥ भोर

रा॰स॰ ह्री भैरवराग अलाप सुनायो नीकी नीकी नीकी तान ॥ ख
रज रिषभ गांधार मध्यम पंचम धैवत निषाद सप्तसुर गान॰
उरपति रपला गड़ाट देशी मारग दिखाय अंस न्यास फ्रति मू
र्छीन ॥ तानसेन कहे सुनो शाह अकबर प्रथमही सरली
पर प्रमान ॥ राग भैरव ॥ तानशाही ॥ तिताला ॥ इतनो
न उत न साह अकबर दो दरस ज्यों देखे सोई होत पवित्र इंद्र धैरज

आयौ ईरजाय सदीजै जैहिनैंवहै दाविय निमै रे
वहै मतो किछुकोजै ५२ राग मलार ताल आज
है हरिहीन सम्हगहाऊं तौलाजौ गंगाजल नीनो
कौ सोनन सनन कहाऊं संदन षेडि मयारथियै
ऊै कपिधज सहिनेहुलाऊं रननी सन्नमोरिहै हरि
की कजी गनहिनपाऊं पंउवदल सनउषहै पा

ग
स

ॐ रतनी सममोहि हरिकोक्सी ग

12

श्री५२

देखत चित्र गुपत अस कहेऊ। भवतें आ
दि मरण लग नाहू। कीनना पुन्य करम
सुभ काहू। भीम दंड जब जमन निहा॰
र्यो। है व्याकुल निज सुतहिं बुलावा।
नारायण जाहि नाम सुहावा। ताहिन क
छु जग धीम चितार्यो। उज कैवल नि

13

श्री५२

१३

प्रचारी प्रम प्रसिद्ध दुज नेह नेह मारी। वेस्या
निरत मांस मद पाना। करहिं कुकर्म विप्र
प्रति माना। ऐसे विवस कुसंगति होई। जा
ती धरम सकल निज खोई। पावन विप्र।
नाम प्रचारी प्रम प्रसिद्ध दुज नेह नेहे
मारी वेस्या निरत मांस मद पाना क
रहिं कुकर्म विप्र प्रतिमाना ऐसे विव

तव रावण क्रुद्धा । लागयो करन गरुड़ मन ।
युद्धा । पाचि वान संधान कराला । छाडित
भयो दनुज वल घाला । लागे गरुड़ राजन त
न जाई । भेदन श्रेग कीन समुदाई । यद्य
पि भयो दनुज विद खग भा लागे न यद्यपि ।
हृदय वीर नहि मान । दारुण क्रोध करत

रा
मे

नभ जाई। तीव्र समीर वेग अधिकाई। चरन
खेंच नाख आयुध संगा। लग्यो करन भारथ म
हि रंगा। सोरठा। करि प्रचंड बल वीर। धरनि
गिरायो भंजि रथ रावण सुभट सुधीर। देखि
अमर विसमय भयो।१४।

श्रीधर

ख स्मित प्रेम कपोल । इति श्रीआभोगः ॥ राग

विभास ताल षट्पदी । रंगिले नैंना तेरे

हो कब देखो गिरिधरन । इति श्रीस्थाई । शारद

सुख सुंदरबर त्रिविध ताप हरन । इत्यंतरा

श्याम सैन अति प्यारे भाव त्रिविध बरन । मीन

कमल खंजन अलि म्रग जभय शरन । श्रीरा

वि॰ग

धारस लेपट ऊव सरोज चरन । गाइकहुल
दास हेत सुरलिनोन फरन ॥ इतिश्रीभोगः
राग विभास ताल षटपदी ॥ रंगीलेनैं
नानैरेहो कवदेवो गिरियरन । इतिश्रुशाई
शारद सुखे सुंदरवर त्रिविध तापहरन । इतंपे
नरा । श्याम सेवन अनियारे भाव त्रिविध वरन

16

म ल तैं ब ला ग्र च्य टा यो ॐ स ग तृ पा म त्वे त र ॥
के हे वै जू वा म रो ब्र ल व हि वि रा ट तृ प व ही
ग्रा प ग्र व ता र म ण मैं बी म व ए य र ॥ प्रथम स
रस्वती वंदना। रागभैरव चौताल। जै शा र दा म
वा नी भा र ती वि द्या दा नी म हा वा क वा क वा नी
तो हे ध्या वे ॥ सु र न र मु नि मा नी तो हि ॐ त्रिं

म-४ तखत वैठो जलालदीन साहस कै वंध पंडित उरी विचार अचल राज पायो —

अकवर कनक दंड चवर छत्र रतन जडित जगमगात सुर नर मुनि गुनि गंधर्व गायो — मृदंग वजाय इंद्रलोक देखन आयो — एसमें कोवकसगज मुक्तात रंग देत अरब खरब जैसे मेघ झरलायो — चिरचिर जीर हो जलालदीन अकवर चंद्र ग्वकसी सनि वायो —

म-४ प्रथम अल्लाहअकवर कहोरे तुमेरे मन दूजेर सूल चितधाररे — वैचून वेचगून वेसुवे वेचमुन परद कोश दाना वीना पाकजात वाहीको याद कररे — ऐसो आलमकरीम करमको करनहार जो सुधनि तलेत तेरी निसवासररे — हिदायत आजज को दीज्ये संतत संपत दीन दुनी कुशल देम तिहारे नाम को आधाररे

म-४ तुक या करीम सत्तार जब्बार सहस नाम पाक परवरद गार — विन अवदुल्ला वरसे नूर नाम महम्मद किताव रसूल करतार

म-४ तुक मेरे मन अल्ला अल्ला हु रटरे रसना ज्यों करे आय — निसदिन ज्ञान ध्यान और जप सुरमद को यह सीख सीख लेस प्रधाय —

म-४ वेचून वेचगून वेसुवे वेनमून दूसरो रच्यो महम्मद अचल आखर हकीक — फुन कीनो चारो यार वासिफात वा करार प्रथम सिदक सावत हजरत अवूवकर सदीक उमर अमरन अल्ह रसूल को पूरदी नपूरदीन पूरमजव जैसे दरिया आगम अथाह अमीक — कहन सुजान हजरत ईमाम पाक इमाम नवी जू को प्रान चाहत दिते नजीके अलीवली साहव करम सेइ हाली करत है जुल्फकार मार फुकर जेर कीए महमदी कलमा कहायो सव तें मनायो वह इहल्लाशरीक

म-४ तुक प्रथम उठ भोर हो नाम लेत अलि नवी फातमा हसन हुसेन नैन दोउ जगके निसार वे को तिहारी आस — नूर के जहूर ते खवाजे मोन दीन अजमेरी दाता पात साह हिंद लवली हो मांगत गुन ग्यान गुनकी आस —

मै-४ मुरतजा अलीवली सांचे साह व दीवान — यह सेवक विनती करत तुमसे तुमही नैन काय मरखो प्रान — तुमारो होऊ तुमेछोड किंत जाऊं पाऊं मान इखा फल सुलतान — मदन सेवक की अरज दीन उनियें मन अचल कर हो दान —

म-४ तुक या क~~रीम सत्तार जब्बार सहस नाम पाक परवरदगार~~ — विन अवदुल्ला वर~~से नूर नाम महम्मद~~ किता~~व रसूल~~ करतार —

शबद उचारी। मारो दैत्य उष एक दिन में जे न्रसिंहव
पु धारे। वपु हरि धारो अज सनकादि देव नारद मुनि
भयेभक्त रखवारे। रमा निकट नहि आवत हरिके
ऐसो वपु हरि धारो। अज सनकासनका आ
एसो रखवारे ॐश्रीरामजी ॐ ॐश्रीराम
ॐश्रीराम ॐश्रीराम ॐ
ॐ ॐ ॐ ॐनमो ॐश्रीरामजी सहाय नमो भगवते ॐनमो
सूर सागार रम ॐनमो
रमाम ॐनमो ॐनमो भगवते

ॐनमो

लिलि लि लि

निज इच्छा धार कारि विविध विश्व न्यारी ।।
इतिश्रस्वामी ।। नाभिकल ब्रह्मादिक ऋषि
देव दनुज नाग पशु पक्षी यक्ष रक्ष मनु म
नुष्य नारी ।। इतिश्रनरा ।। विपन वायु अ
ग्नि उदक भूमि नाम जात तरु लता औषधि
विविधभांत नवहि रूप सारी ।। बालनिधी है

रा॰हिं॰ तेरी शरण दर्शन हित धार रहो स्मरण नित

कामकरो भक्तन की प्यारी ॥ इत्याभोगः ॥ः

इति हिंदोल राग स्य ब्रह्म परिच्छेदः ।ःः।ः

अथ श्रीरागस्य सूर्य परिच्छेदमाह ध्रुव

पद सूर्यजी ताल चार ॥ चामीकर तम

वर्ण कर्ण भरण पाप ताप रो शोक म

श्रीराग ध्रुवपद गणेश ताल चार ॥ नाग
जात भाल लात शोभत तात मात उमा व
क्रतुंड भृंग गुंज समद सुरभि कारी ॥
इति अस्थाई ॥ चतुर्भुजा प्रजा कार्य सि
द्धकरण पटुक वटुक अपर भटक छो
डि चरण शरण जास या री ॥ अंतरा·

श्री॰रा॰ भक्तन हित धाय धाय पीर हरै धरै धीर

करै सुकर कार्य वार्य उर मन विचारी॰

करहि विजय दास जनन श्रम पर कर॰

ण पटुक चरण शरण बालनिधी विश्व

पद उचारी ॥ इत्याभोगः ॥ इति श्रीराग

स्य विश्व परिच्छेदः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

4

अथ श्रीरागस्य शक्ति परिछेद माह ध्रु
वपद शक्ती ताल चार ॥ निज स्वापाहि

ग.
स.

ऊ कौनदा खिलाय निहिहारयौ सब भौन भंडार हा
रि बड़ा ठुपदी नारि नाको पकर सभामै ल्याये ठहू सा
सन करि वसन खुडाये नब वहि हरिसो टेर पुका
री राखिलेहु ममलाज मुरारी २८ रागसारंग नाल
श्रब कछु नाहो नाथ्रयौ सकल सभामै बैठि दुः
सासन श्रेवर श्रान गयौ हायौ सब भंडार भौमश

श्रीपर नंतरामकेहकुंमनात
२६ पत्रे मुफरादे गये

राग बिलावल

सूरसागर

ग्रथ भक्तमाल परिछेद माह राग‍िनी मधुमाधवी ताल ॥

ॐग्रथ मधुमाधवी रागिनी सूरसागर परिछेद ।

माह रागबिलावल ताल हरि हरि हरि सुमरो सबको

३ नारी पुरुष हरि गननन दोर द्रुपद सुताको रा

षीलाज कौरव पतिकौ पावउनाज कहो सु क

था सुनो चितलाइ सूर स्याम भक्तन सुषदाइ ।२८

रागबिलावल ताल कौरव पासा कपट बनाय धरम पु